हिंदी दैनिक

कलम की पहल

PRGI NO. UAHIN/25/A1323

वर्ष : 02 अंक : 143 पृष्ठ : 08 मूल्य : 1 रूपए नैनीताल, बुधवार, 11 नवंबर, 2026

E-mail: kalamkipahaluk@gmail.com Website: kalamkipahal.com

मुख्यमंत्री पुष्कर धामी ने 9 नगर निकायों को दी रजत जयंती पार्कों की सौगात

ऋषिकेश में 36 करोड़ से अधिक की सात विकास योजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास

के.के.पी संवाददाता

ऋषिकेश। उत्तराखंड राज्य स्थापना की रजत जयंती के अवसर पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश के शहरी विकास को नई दिशा देने की पहल करते हुए मंगलवार को ऋषिकेश के चंद्रेश्वरनगर में देवभूमि रजत जयंती पार्कों एवं विभिन्न विकास योजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने देहरादून, हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर और उत्तरकाशी जनपद के नौ नगर निकायों में विकसित किए गए देवभूमि रजत जयंती पार्क जनता को समर्पित किए। इसके साथ ही देहरादून जनपद में 36 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली सात विकास योजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। नगर निकायों में स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए आठ कूड़ा संग्रहण वाहनों को भी हरी



झंडी दिखाकर रवाना किया।

मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को राज्य स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए राज्य निर्माण आंदोलन के शहीदों और आंदोलनकारियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड की रजत जयंती पर सरकार ने संकल्प लिया था कि राज्य स्थापना की स्मृतियां केवल समारोहों तक सीमित न रहें, बल्कि विकास कार्यों के रूप में धरातल पर दिखाई दें। इसी सोच के साथ शहरी क्षेत्रों में देवभूमि रजत जयंती पार्क विकसित किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि जिन स्थानों पर कभी कूड़े के ढेर और झाड़ियां दिखाई देती थीं, आज वे हरे-भरे और सुव्यवस्थित सार्वजनिक स्थलों के रूप में विकसित हो रहे हैं। ये पार्क बच्चों के खेलने, बुजुर्गों के टहलने, महिलाओं के बैठने तथा युवाओं के योग और व्यायाम के लिए उपयोगी साबित होंगे। इनमें उत्तराखंड की संस्कृति, लोक परंपराओं और स्थानीय वनस्पतियों की झलक भी देखने को मिलेगी। मुख्यमंत्री ने नगर निकायों से इन पार्कों का रखरखाव जनभागीदारी के माध्यम से सुनिश्चित करने की अपील की।

स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण में उत्तराखंड की उपलब्धियां

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार का लक्ष्य विकास का लाभ प्रदेश के प्रत्येक नगर और प्रत्येक वार्ड तक पहुंचाना है। शहरी क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के विस्तार के साथ स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक सुविधाओं को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के सभी 108 नगर निकाय खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं। ऋषिकेश और हरिद्वार को वाटर प्लस प्रमाणन प्राप्त हुआ है। शहरी क्षेत्रों में 90 प्रतिशत से अधिक कचरे का वैज्ञानिक प्रसंस्करण किया जा रहा है। पुराने कचरे के निस्तारण से लगभग 109 एकड़ भूमि को दोबारा उपयोग योग्य बनाया गया है। उन्होंने बताया कि रुद्रपुर और मसूरी में कचरे से बायोगैस का उत्पादन किया जा रहा है। चारधाम यात्रा मार्गों पर डिजिटल डिपॉजिट-रिफंड व्यवस्था के माध्यम से 60 हजार किलोग्राम से अधिक प्लास्टिक वापस एकत्र किया गया है। प्रदेश के 107 नगर निकायों के लिए लगभग 1,375 करोड़ रुपये की विस्तृत स्वच्छता कार्ययोजना तैयार की गई है। इसके तहत 27 सीवेज एवं फीकल स्लज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं। सफाई व्यवस्था के मशीनीकरण पर भी जोर दिया जा रहा है, ताकि पर्यावरण मित्रों को असुरक्षित परिस्थितियों में काम न करना पड़े।

आतंकी पन्नू केस में समन पर बवाल; डोभाल और RAW के पूर्व प्रमुख का नाम, रणधीर ने दिखाया आइना



नई दिल्ली। खालिस्तानी अलगाववादी गुरपतवंत सिंह पन्नू ने भारतीय अधिकारियों के खिलाफ अमेरिका की अदालत में मुकदमा दायर कराया है। भारत ने इस मामले को पूरी तरह बेबुनियाद और दुर्भावनापूर्ण करार दिया है। विदेश मंत्रालय ने मंगलवार को साफ कहा कि भारत अपने सीनियर अधिकारियों पर लगाए गए मनगढ़ंत आरोपों और ऐसे मुकदमों को खारिज करता है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने दिल्ली में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा, 'हम अपने वरिष्ठ अधिकारियों पर किए जा रहे मनगढ़ंत और दुर्भावनापूर्ण हमलों को खारिज करते हैं। साथ ही, इन गैरजरूरी मुकदमों को भी स्वीकार नहीं करते।

रणधीर जायसवाल ने कहा कि भारत में न्यायिक दस्तावेजों की तामील के लिए अनुरोध केवल भारत की निर्धारित केंद्रीय एजेंसी के माध्यम से ही भेजा जा सकता है। यह जिम्मेदारी कानून व न्याय मंत्रालय की है। उनका यह बयान ऐसे समय आया है, जब अमेरिका के विदेश विभाग ने पन्नू के मुकदमे से जुड़े कानूनी दस्तावेज भारतीय दूतावास को सौंपे हैं।

दरअसल, अमेरिकी विदेश विभाग ने पन्नू की ओर से भारत सरकार के खिलाफ दायर दीवानी मुकदमे में जारी समन की कॉपी वाशिंगटन स्थित भारतीय दूतावास को भेजी थी। इसके लिए 30 सितंबर को राजनयिक नोट तैयार किया गया था, जिसे 9 अक्टूबर को भारतीय दूतावास को सौंपा गया। अमेरिकी विदेश विभाग ने 28 अक्टूबर को न्यूयॉर्क की दक्षिणी जिला अदालत में दाखिल दस्तावेजों के जरिए इसकी पुष्टि भी की थी। हालांकि, अमेरिकी विदेश विभाग ने साफ किया कि कानूनी दस्तावेजों को आगे भेजने का मतलब मुकदमे में लगाए गए आरोपों का समर्थन करना नहीं है। यह प्रक्रिया उसके कानूनी दायित्वों के तहत पूरी की गई है।

इस मुकदमे में भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (NSA) अजित डोभाल, रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (RAW) के पूर्व प्रमुख सामंत गोयल और कुछ अन्य भारतीय अधिकारियों के नाम शामिल हैं। पन्नू ने सितंबर 2024 में मुकदमा दायर किया था।

गुजरात दंगों के लिए सोनिया गांधी ने बजरंग दल और RSS को ठहराया जिम्मेदार, बीजेपी का आया जवाब

नई दिल्लीः सोनिया गांधी की किताब बिलॉन्गिंगः अ जर्नी ऑफ लव खूब सूर्खियां बंटोर रही है. इस किताब में सोनिया गांधी ने अपने जीवन के तमाम अनुभवों के साथ-साथ कुछ खास, यादगार और भावुक करने देने वाले पलों का भी जिक्र है. सोनिया गांधी ने अपनी किताब में 2002 के गुजरात दंगों की भयावहता को भी याद किया है.सोनिया गांधी ने लिखा है कि जब उनको इस दंगे के बारे में पता चला तो पहले उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ. इसके बाद ही उन्होंने उस दौरान हिंसा की खबरों को टीवी पर करीब से फॉलो किया. उस दंगे के दौरान वो गुजरात में अपने कांग्रेस सहयोगियों से संपर्क करने की कोशिश कर रही थीं, जो मदद के



लिए गुहार लगा रहे थे. उन्होंने आरोप लगाया कि जब हालात बिगड़े और पूरे राज्य में सांप्रदायिक हिंसा के कारण लोगों की जान जाने लगी, तो राज्य प्रशासन कोई कार्रवाई करने में विफल रहा. सोनिया गांधी, जो उस समय लोकसभा में विपक्ष की नेता थीं, ने बताया कि वे सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधिमंडल के हिस्से के रूप में अहमदाबाद गईं, राहत शिविरों में पीड़ितों से मिलीं और हिंसा की चपेट में आए परिवारों की शारीरिक और भावनात्मक स्थिति को अपनी आंखों से देखा.उन्होंने लिखा है कि जब मैं संसद में विपक्ष की नेता थी, तो मैं कई त्रासदियों के पीड़ितों से मिली, और हर बार मैंने जो दुख-दर्द देखा, वह मेरे मन में बस गया. 2002 में गुजरात सांप्रदायिक दंगों की चपेट में आ गया था; केबल टीवी के दौर में इस नरसंहार का एक बड़ा हिस्सा लाइव दिखाया गया, और इसकी भयावह तस्वीरों ने पूरे देश को झकझोर कर रख दिया. इन दंगों की शुरुआत तब हुई जब साबरमती एक्सप्रेस की चार बोगियों में आग लगा दी गई, जिसमें 59 तीर्थयात्रियों की मौत हो गई.

48 घंटे जेल में रहे तो नौकरी पर गिरेगी गाज!

SC के फैसले से सरकारी कर्मचारियों को बड़ा झटका

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐसा फैसला सुनाया है, जिससे सरकारी कर्मचारियों की मुश्किलें बढ़ सकती हैं. सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक फैसले में कहा है कि यदि किसी सरकारी कर्मचारी को गिरफ्तार किया जाता है और वह लगातार 48 घंटे से अधिक समय तक न्यायिक हिरासत में रहता है, तो उसे नियमों के अनुसार निलंबित माना जाएगा. इसके लिए विभाग को अलग से निलंबन आदेश जारी करने की आवश्यकता नहीं है.

सुप्रीम कोर्ट ने बिहार के एक सरकारी अस्पताल के मैनेजर की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए यह टिप्पणी की. कोर्ट ने इस बात पर भी हैरानी जताई कि रिश्वत के मामले में आरोपी होने और निलंबन के बावजूद उस कर्मचारी को उसी अस्पताल में उसी पद पर दोबारा नियुक्त कर दिया



गया था. मामला बिहार के समस्तीपुर स्थित सदर अस्पताल के एक मैनेजर की जमानत याचिका से जुड़ा था.

मैनेजर पर आरोप था कि उसने एक शिकायतकर्ता की 36,421 रुपये की मजदूरी का भुगतान पास करने के लिए 4,000 रुपये की रिश्वत मांगी थी. मैनेजर के खिलाफ प्रीवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट की धारा 7(बी) के तहत मामला दर्ज किया गया और पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया. गिरफ्तारी के बाद वह लगभग 15 दिनों तक न्यायिक हिरासत में रहा. बाद में सेशन कोर्ट ने उसे जमानत दे दी. इसके बाद शिकायतकर्ता ने सेशन कोर्ट द्वारा दी गई जमानत को पटना हाईकोर्ट में चुनौती दी.

पटना हाईकोर्ट ने सेशन कोर्ट की जमानत रद्द कर दी और आरोपी को दोबारा जेल भेजने का आदेश दिया. इस आदेश के खिलाफ आरोपी ने सुप्रीम कोर्ट में अपील की. सुप्रीम कोर्ट ने पटना हाईकोर्ट के जमानत रद्द करने वाले आदेश को निरस्त कर दिया, जिससे आरोपी की जमानत बहाल हो गई. हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गिरफ्तारी के बाद 48 घंटे से अधिक समय तक अगर कोई सरकारी कर्मचारी न्यायिक हिरासत में रहता है, तो उसे नियमानुसार स्वतः निलंबित माना जाएगा.

इस मामले में आरोपी लगभग 15 दिनों तक न्यायिक हिरासत में रहा था, इसलिए वह इसके दायरे में आता है. बिहार सरकार के वकील ने कोर्ट को बताया कि आरोपी को पहले निलंबित किया गया था. हालांकि, बाद में उसका निलंबन रद्द कर दिया गया. इसके बाद उसे उसी सदर अस्पताल में फिर से मैनेजर के पद पर नियुक्त कर दिया गया. इस पर सुप्रीम कोर्ट ने हैरानी और नाराजगी जताई. कोर्ट ने कहा कि राज्य सरकार को इस मामले को जल्द से जल्द देखना चाहिए और उचित कार्रवाई करनी चाहिए.

पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव की तैयारी तेज, सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों पर भी लागू होगी आचार संहिता की पाबंदी

नई दिल्ली। चुनाव आयोग उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, गोवा और मणिपुर में विधानसभा चुनाव की तैयारी में जुटा है. इस बीच आयोग ने राज्य सरकारों की तरफ से नियुक्त सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों पर आदर्श आचार संहिता संबंधी प्रतिबंध लागू कर दिए हैं.

गोवा, मणिपुर, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के मुख्य सचिवों और मुख्य निर्वाचन अधिकारियों को मंगलवार को लिखे एक पत्र में चुनाव आयोग (EC) ने कहा कि आदर्श आचार संहिता (MCC) के तहत कार्यरत सरकारी कर्मचारियों पर लागू होने वाली पाबंदियां और रोक, राज्य



और केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों की तरफ से काम पर रखे गए सेवानिवृत्त सरकारी अधिकारियों और अन्य व्यक्तियों पर भी लागू होंगी.

चुनाव आयोग ने कहा, ''यह अपेक्षा की जाती है कि वे किसी भी चुनाव प्रचार या वोट मांगने के काम में हिस्सा न लें. उन्हें इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि वे किसी एक व्यक्ति, राजनीतिक दल या समूह की मदद करने के लिए अपने नाम, आधिकारिक पद या अधिकार का इस्तेमाल न होने दें.''

आयोग ने कहा, ''आदर्श आचार संहिता के नियम उन सभी संगठनों, समितियों, निगमों, आयोगों आदि पर लागू होते हैं, जिन्हें सरकार से पूरी या आंशिक फंडिंग मिलती है. ये नियम उनके कर्मचारियों पर भी लागू होते हैं. इसके अलावा, राज्यों में लागू 'आचरण नियम' सरकारी कर्मचारियों को राजनीतिक गतिविधियों और चुनावों में हिस्सा लेने से रोकते हैं.'' बता दें कि साल 2022 में चुनाव आयोग ने 8 जनवरी को पांच राज्यों में चुनाव की घोषणा की थी. 10 मार्च को रिजल्ट आए थे. माना जा रहा है कि इसी के आसपास आयोग इस बार भी तारीखों की घोषणा कर सकता है.

'इंदिरा के आंसुओं से नहीं धुलेंगे सिखों के खून के दाग', सोनिया की किताब पर सतनाम सिंह का अटैक

नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी की किताब के बाजार में आते ही राजनीतिक घमासान शुरू हो गया है. बीजेपी के राज्यसभा सांसद सतनाम सिंह संधू ने इस किताब में ऑपरेशन ब्लू स्टार के जिक्र पर कहा कि कांग्रेस आज भी वहीं खड़ी है, जहां उस समय खड़ी थी. उन्होंने कहा, 'कांग्रेस ऐसा नैरेटिव बनाने की कोशिश कर रही है कि उन्हें हमदर्दी मिलेगी. सिखों के खून के दाग इंदिरा गांधी के आंसुओं की बात करने से धुलने वाले नहीं हैं. यह जो काला अध्याय है चाहे वह इमरजेंसी का रहा, सिखों के कत्लेआम का रहा या दरबार साहिब पर हमले का



रहा. सतनाम सिंह संधू ने कहा, 'वह (सोनिया गांधी) कितनी ही पुस्तकें लिख लें, सच्चाई तो सामने आएगी ही. क्या आज उस तबाही की जिम्मेदारी लेने के लिए कांग्रेस तैयार है? सिखों के कत्लेआम पर पश्चाताप करने के लिए कांग्रेस तैयार है? उसके दोषियों को पार्टी से निकालकर सजा दिलाने के लिए क्या कांग्रेस तैयार है?'

बीजेपी प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा, 'सोनिया गांधी की किताब से यह स्पष्ट हो गया है कि पूरी किताब की मूल सोच बाबरी वोट बैंक के इर्द-गिर्द घूमती है. उन्होंने यह जाहिर कर दिया है कि बाबरी से जुड़ी वोट बैंक की राजनीति उनकी सोच में गहराई तक बसी हुई है.' उन्होंने कहा, 'सोनिया गांधी की किताब से यह साफ हो गया है कि उनके दिल में बी बसता है, जिसका मतलब 'बाबरी' है. उनके जीवन का सबसे अहम 'क्र' यानी 'बोफोर्स घोटाला' इस किताब से गायब है. देश ने बोफोर्स घोटाले में भ्रष्टाचार देखा है, लेकिन गांधी-वाड्रा परिवार इस पर चुप है. प्रदीप भंडारी ने कहा, 'सोनिया गांधी की किताब आने के बाद बोफोर्स घोटाले को लेकर फिर से सवाल उठने लगे हैं, जिस पर कांग्रेस पार्टी और सोनिया गांधी दोनों ही चुप रहे हैं. लोग जानना चाहते हैं कि राजीव गांधी, सोनिया गांधी और ओत्तावियो क्वात्रोची के बीच ऐसा क्या रिश्ता था, जिसकी वजह से यह घोटाला हुआ. सोनिया गांधी को बाबरी की ज्यादा चिंता है. यह किताब बोफोर्स घोटाले और कांग्रेस की बाबरी वोट-बैंक की राजनीति के इर्द-गिर्द घूमती है.

शरिया की चाह, सरकार उखाड़ फेंकने की साजिश; लाल किला धमाके पर नए खुलासे

नई दिल्ली। दिल्ली के लाल किले के पास हुए आत्मघाती बम धमाके को एक साल पूरा हो गया है। अब तक की जांच में चौंकाने वाली कई नई जानकारियां सामने आई हैं। जांच में पता चला है कि कश्मीरी डॉक्टर उमर-उन-नबी और उसके साथियों ने नई दिल्ली में सरकार उखाड़ फेंकने और शरिया कानून लागू करने के लिए इस हमले की साजिश रची थी। जांचकर्ताओं का मानना है कि हमलावर और आरोपियों के समूह का पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों से कोई संपर्क नहीं था।



आरोपी अफगानिस्तान जाकर इस्लाम के लिए काम करना चाहते थे लेकिन जब वे वहां नहीं जा पाए तो उन्होंने इस हमले को अंजाम दिया। एनआईए ने 9 लोगों के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की है। जांच से जुड़े अधिकारियों का मानना है कि हरियाणा की अल-फलाह यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर रहे डॉ. उमर नबी और उसके साथी डॉ. मुजम्मिल शकील और डॉ. अदील अहमद राथर खुद ही कट्टरपंथी बन गए थे। इनके तार 'अल-कायदा इन द इंडियन सबकॉन्टिनेंट' यानी AQIS से जुड़े थे। चौंकाने वाली बात यह कि अधिकारियों को नहीं लगता है कि इस समूह का पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठनों से कोई संपर्क था। जांचकर्ताओं का मानना है कि आरोपी डॉक्टर उमर नबी और उसके साथी अफगानिस्तान जाकर दुनियाभर में इस्लाम को बढ़ावा देने के लिए काम करना चाहते थे। आरोपी जब अफगानिस्तान नहीं जा पाए तो उन्होंने दिल्ली में आत्मघाती हमले को अंजाम दिया। जांचकर्ताओं के अनुसार, नबी और उसके साथियों को लगता था कि पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में अपना राजनीतिक एजेंडा चला रहा है। इन साजिशकर्ताओं का रास्ता अलग था।

आरोपियों का मकसद सरकार को उखाड़ फेंकना और भारत में शरिया कानून लागू करना था। अधिकारियों की मानें तो दिल्ली में लाल किला के पास आत्मघाती बम धमाका एक ऑपरेशन के तहत अंजाम दिया गया था।

दिल्ली में 16 नवंबर की छुट्टी का ऐलान, छठ पर मिलेगा लंबा वीकेंड

नई दिल्ली। दिल्ली में 16 नवंबर यानी सोमवार को सभी सरकारी दफ्तर पूरी तरह बंद रहेंगे. इसे लेकर एक आदेश जारी हुआ है, जिसमें बताया गया है कि छठ पर्व के मौके पर दिल्ली में छुट्टी रहेगी. दिल्ली के उपराज्यपाल की तरफ से ये आदेश जारी किया गया है. हर साल दिल्ली में हजारों की संख्या में लोग छठ पूजा करने यमुना किनारे पहुंचते हैं और इस दिन काफी ज्यादा भीड़भाड़ रहती है. ऐसे में दिल्ली में छुट्टी का ऐलान यहां रहने वाले लाखों लोगों के लिए राहत की खबर है. इसके साथ ही लोगों को शनिवार



से लेकर सोमवार तक का लॉन्ग वीकेंड भी मिलने जा रहा है. नोटिफिकेशन में लिखा गया है कि 16 नवंबर को पब्लिक हॉलिडे होगा, यानी इस दिन सरकारी दफ्तरों के साथ-साथ स्कूल और कॉलेज भी बंद रह सकते हैं. नोटिफिकेशन में स्कूलों का जिक्र नहीं किया गया है. इसमें लिखा गया है कि छठ पूजा के मौके पर 16 नवंबर को सभी सरकारी दफ्तरों, स्वायत्त निकायों, पीएसयू और बाकी जगहों पर छुट्टी रहेगी. छठ पर्व के लिए दिल्ली में तैयारियां तेजी से चल रही हैं.

गोवर्धन पर्व पर गोसदन ज्योली में गोसंवर्धन यज्ञ सम्पन्न, श्रद्धालुओं ने किया गोपूजन और गौसेवा

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा, गोवर्धन पर्व के पावन अवसर पर गौ सेवा न्यास गुरुकुल शोले की ओर से गोसदन ज्योली में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ गोसंवर्धन यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ का आयोजन एवं संचालन गोशाला संचालक दयाकृष्ण काण्डपाल ने सम्पन्न कराया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर गौसेवा और गोसंरक्षण का संकल्प लिया।कार्यक्रम का शुभारंभ विधि-विधान के साथ यज्ञ एवं पूजा-अर्चना से हुआ। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुति देकर विश्व कल्याण, सुख-समृद्धि तथा क्षेत्र की खुशहाली की कामना की। गोवर्धन पर्व के धार्मिक एवं सांस्कृतिक



महत्व पर प्रकाश डालते हुए गौवंश के संरक्षण, संवर्धन और सेवा को समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बताया गया।

इस अवसर पर गोसदन में संरक्षित गायों का विधिवत पूजन किया गया। श्रद्धालुओं ने गायों को फूलमालाएं पहनाईं तथा गौग्रास खिलाकर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। पूरे परिसर में भक्तिमय वातावरण बना रहा। लोगों ने गौवंश की सेवा को भारतीय संस्कृति, परम्परा और मानवीय संवेदना से जुड़ा महत्वपूर्ण कार्य बताया। गोशाला संचालक दयाकृष्ण काण्डपाल ने कहा कि निराश्रित एवं बेसहारा गोवंश की सेवा, संरक्षण और उनके भरण-पोषण के उद्देश्य से गौ सेवा न्यास लगातार प्रयासरत है। गोवंश की रक्षा केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि समाज की नैतिक जिम्मेदारी भी है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे अपने सामर्थ्य के अनुसार गौसेवा के कार्यों में सहयोग करें तथा निराश्रित गोवंश के संरक्षण के लिए आगे आएं। उन्होंने कहा कि गोवर्धन पर्व हमें प्रकृति, पशुधन और पर्यावरण के प्रति सम्मान एवं संरक्षण का संदेश देता है। ऐसे आयोजनों से समाज में गौसेवा के प्रति जागरूकता बढ़ती है और नई पीढ़ी को भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं से जुड़ने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम में चन्द्रमणि भट्ट, मनोज सनवाल, यशवन्त परिहार, रमेश तिवारी, पूरन चन्द्र तिवारी, मोहन सिंह रावत, हेम जोशी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

तल्ला सल्ट में ग्रामीणों ने बदहाल विद्युत व्यवस्था को लेकर किया प्रदर्शन

के.के.पी संवाददाता

भिकियासैण (अल्मोड़ा)। विकासखंड सल्ट अंतर्गत तल्ला सल्ट के अनेकों गावों में बदहाल विद्युत व्यवस्था को लेकर ग्रामीणों का आक्रोश फूट पड़ा।तथा जर्जर बिजली की लाइनें, पुराने ट्रांसफार्मर और बार-बार हो रही शॉर्ट सर्किट की घटनाओं से नाराज ग्रामीणों ने हरड़ा मौलखी में प्रदर्शन कर बिजली विभाग का पुतला फूंका।



मंगलवार को प्रदर्शन कर रहे ग्रामीणों ने कहा है कि हरड़ा मौलेखी समेत आसपास के गांवों में लंबे समय से बिजली व्यवस्था की स्थिति खराब है। कई 16 केवीए के ट्रांसफार्मर खराब पड़े हैं, जबकि क्षेत्र में लगे बिजली के पोल और तार भी काफी पुराने हो चुके हैं। ग्रामीणों के अनुसार, सुरक्षा उपकरणों की कमी और पेड़ों की टहनियों के विद्युत लाइनों से टकराने के कारण शॉर्ट सर्किट एवं आगजनी का खतरा बना हुआ है।

ग्रामीणों ने पूर्व में लोहेड़ा गांव के पांच तोकों में शॉर्ट सर्किट से 30 से 40 परिवारों के घरों में आग लगने की घटनाओं का हवाला देते हुए अन्य गांवों में भी हुई ऐसी घटनाओं की जांच कराने की मांग की। उन्होंने आरोप लगाया कि आगजनी से प्रभावित परिवारों को मुआवजा मिलने में भी अनावश्यक देरी की जा रही है।

प्रदर्शनकारियों ने गलत और अधिक बिजली बिल जारी होने, आरटीआई के तहत मांगी गई सूचनाओं का संतोषजनक जवाब नहीं मिलने तथा विद्युत कर्मचारियों के सुरक्षा उपकरणों और रखरखाव बजट को लेकर भी सवाल उठाए। ग्रामीणों ने संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी तय कर विभागीय जांच कराने की मांग की।

ग्रामीणों ने मछोड़ फीडर की विद्युत लाइनों और ट्रांसफार्मरों की तकनीकी एवं सुरक्षा जांच संयुक्त टीम से कराने, खराब ट्रांसफार्मर बदलने, पुराने पोल और तारों को दुरुस्त करने तथा पेड़ों की नियमित लॉपिंग कराने की मांग की। इसके साथ ही गलत बिजली बिलों में सुधार और आगजनी प्रभावित परिवारों को जल्द मुआवजा देने की भी मांग उठाई।ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि जल्द उनकी समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो आंदोलन को और व्यापक किया जाएगा।इस दौरान भास्कर मौलेखी, आदित्य मौलेखी, आनंद मौलेखी, हेमा मौलेखी, कैलाश मौलेखी, भुवन बिष्ट, ललित भट्ट, गोविंद सिंह, मंगल सिंह, उत्तम सिंह और नारायण दत्त आदि मौजूद रहे।

एक नजर

भाई दूज के अवकाश का वायरल आदेश फर्जी, शासन ने किया खंडन

चंपावत। सोशल मीडिया पर 11 नवंबर को भाई दूज के अवकाश का जो आदेश वायरल हो रहा है, वह फर्जी है। उत्तराखंड शासन के सामान्य प्रशासन विभाग ने इसका खंडन किया है। सचिव राजेंद्र कुमार ने 9 नवंबर को जारी पत्र में स्पष्ट किया है कि यह आदेश कूटरचित और निराधार है। पत्र के अनुसार, सामान्य प्रशासन विभाग ने 17 अक्टूबर 2026 को अधिसूचना संख्या 1457 जारी कर 19 अक्टूबर को महानवमी का अवकाश घोषित किया था। इसी अधिसूचना में छेड़छाड़ कर 11 नवंबर को भाई दूज के अवकाश का फर्जी आदेश तैयार किया गया और सोशल मीडिया पर फैलाया गया। सूचना एवं लोक संपर्क विभाग के महानिदेशक ने आम लोगों से अपील की है कि अवकाश से जुड़ी जानकारी के लिए केवल शासन की आधिकारिक सूचनाओं पर ही भरोसा करें और फर्जी आदेश को आगे साझा न करें।

होमगार्ड स्वयंसेवक भर्ती का चयन परिणाम जारी, 30 पदों में 27 अभ्यर्थी चयनित

अल्मोड़ा। जिला कमांडेंट होमगार्ड्स कार्यालय की ओर से होमगार्ड स्वयंसेवक सीधी भर्ती-2026 का चयन परिणाम जारी कर दिया गया है। भर्ती प्रक्रिया में कुल 30 रिक्त पदों के सापेक्ष 27 अभ्यर्थियों को अंतिम रूप से चयनित किया गया है। जारी आदेश के अनुसार कुछ आरक्षित उप श्रेणियों में पात्र अभ्यर्थी उपलब्ध नहीं होने के कारण नियमानुसार पदों को संबंधित श्रेणियों में समायोजित किया गया है। वहीं, एसटी वर्ग के चार पदों में से तीन पदों के लिए पात्र अभ्यर्थी नहीं मिलने के कारण इन पदों को अग्रेनीत किया गया है। चयनित अभ्यर्थियों का पुलिस सत्यापन कराया जाएगा। सत्यापन के दौरान किसी अभ्यर्थी के विरुद्ध प्रतिकूल तथ्य सामने आने पर उसका चयन निरस्त किया जा सकता है। इसके अलावा सभी चयनित अभ्यर्थियों का मेडिकल परीक्षण भी कराया जाएगा। मेडिकल परीक्षण में असफल पाए जाने वाले अभ्यर्थी का चयन स्वतः निरस्त माना जाएगा।

ईरान की धमकी के बाद ब्रिटेन से अमेरिकी विमान हटाए गए

लंदन। ईरान से संभावित खतरे की चेतावनी के बाद अमेरिका ने ब्रिटेन स्थित रॉयल एयर फोर्स मिल्डेनहॉल एयरबेस से अपने कुछ विमान हटा लिए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी अधिकारियों ने अभी खतरे की प्रकृति का आकलन शुरू किया है और यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि खतरा तत्काल है या सामान्य प्रकृति का। फ्लाइट-ट्रैकिंग डेटा और मामले से परिचित अधिकारियों के अनुसार, मिल्डेनहॉल से संचालित होने वाले दो अमेरिकी ईंधन भरने वाले टैंकरों को सोमवार सुबह जर्मनी भेज दिया गया। बाद में एयरबेस पर मौजूद कई अन्य विमानों को भी जर्मनी और अन्य स्थानों पर स्थानांतरित किया गया। अमेरिकी वायु सेना ने इस मामले पर सीधे टिप्पणी नहीं की। एक अधिकारी ने कहा कि अमेरिकी विमान नियमित रूप से अलग-अलग कारणों से अपने ठिकानों और अन्य परिचालन केंद्रों के बीच आते-जाते रहते हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी कांग्रेस के शीर्ष राजनीतिक और खुफिया नेताओं के समूह 'गैंग ऑफ एट' को भी सोमवार को ईरान से अमेरिका को होने वाले संभावित खतरों के बारे में जानकारी दी गई।

धौन क्रिकेट टूर्नामेंट में पहुंचे डीएम, खिलाड़ियों का बढ़ाया उत्साह



के.के.पी संवाददाता

चंपावत। जिलाधिकारी मनीष कुमार ने धौन क्रिकेट मैदान में चल रहे क्रिकेट टूर्नामेंट में पहुंचकर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। मैदान पहुंचने पर नौनचूला क्रिकेट कमेटी के पदाधिकारियों और सदस्यों ने उनका स्वागत किया। जिलाधिकारी ने 4 से 13 नवंबर तक आयोजित हो रहे टूर्नामेंट के लिए कमेटी की सराहना करते हुए सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी खेलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास कर रहे हैं।

ऐसे में स्थानीय युवाओं द्वारा टूर्नामेंट का आयोजन सराहनीय पहल है। सीमांत क्षेत्र के युवाओं का खेलों से जुड़ना अच्छा संकेत है। स्थानीय प्रतियोगिताओं से युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलता है। उन्होंने युवाओं से नियमित खेलने, खेल भावना बनाए रखने और नशे से दूर रहने की अपील की। कमेटी ने खिलाड़ियों को क्रिकेट किट उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री का आभार जताया। इस मौके पर आयोजन समिति के नवीन रावत, शंकर भट्ट, चंद्र प्रकाश भट्ट, बंशीधर भट्ट, अमित सिंह, रविंद्र भट्ट सहित खिलाड़ी और खेलप्रेमी मौजूद रहे।

दीपावली पर अलर्ट मोड पर फायर सर्विस; नुमाईश खेत के पास वाहन में लगी आग पर पाया काबू, बड़ा हादसा टला

के.के.पी संवाददाता

बागेश्वर। दीपावली पर्व के दृष्टिगत जनपद में सुरक्षा एवं अग्नि दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु पुलिस अधीक्षक बागेश्वर जितेंद्र मेहरा (IPS) के कड़े निर्देशन में फायर सर्विस बागेश्वर पूरी तरह से सतर्क और अलर्ट मोड पर है।

इसी क्रम में, बीती रात्रि फायर स्टेशन बागेश्वर को सूचना प्राप्त हुई कि बागेश्वर नगर स्थित नुमाईश खेत के समीप खड़े एक पुराने वाहन (छोटा हाथी) में रखे कूड़े में आग लग गई है।

सूचना मिलते ही प्रभारी अग्निशमन अधिकारी (स्नस्ह) दिनेश चंद्र पाठक के नेतृत्व में फायर यूनिट तत्काल घटनास्थल के लिए रवाना हुई। मौके पर पहुंचने पर पाया गया कि आग पुराने वाहन की डिग्गी में लगी थी। घटनास्थल के बिल्कुल नजदीक बिजली का ट्रांसफार्मर और घनी आबादी वाले आवासीय भवन स्थित होने के कारण आग के विकराल रूप लेने और दीपावली



के समय बड़ा हादसा होने का गंभीर खतरा बना हुआ था।

फायर टीम ने तत्परता दिखाते हुए वॉटर टेंडर वाहन से पंपिंग कर हौज पाईप की सहायता से आग पर लगातार पानी की बौछार की। टीम की त्वरित कार्यवाही से आग को आसपास के ट्रांसफार्मर और घरों तक फैलने से रोक लिया गया और कुछ ही देर में आग पर पूर्ण रूप से काबू पा लिया गया। इस घटना में किसी प्रकार की जनहानि या अन्य कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ

क्विक एक्शन वाले डीएम मनीष कुमार ने बदली चंपावत की तस्वीर

के.के.पी संवाददाता

चंपावत। कहते हैं कि कभी-कभी किसी व्यक्ति की असफलता के पीछे से ही उसकी बड़ी सफलता का रास्ता खुलता है। यही बात मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी पर भी लागू होती है। खटीमा के लोगों ने उन्हें चुनाव में हरा दिया था, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। पड़ोसी चंपावत विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव में जनता ने उन्हें इतना सम्मान दिया कि रिकॉर्ड मतों से जीतकर उन्होंने भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में सबसे अधिक मत प्रतिशत से जीतने वाले प्रत्याशियों की सूची में अपना नाम दर्ज करा लिया।

मुख्यमंत्री के भाग्य का दरवाजा तब भी खुला, जब उन्हें जिलाधिकारी के रूप में मनीष कुमार जैसे अधिकारी मिले, जो रोज 15 से 16 घंटे काम कर लोगों को ऐसी राहत पहुंचा रहे हैं, जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं



की थी। जिलाधिकारी की 'क्विक एक्शन' कार्यसंस्कृति की मिसाल तब देखने को मिली, जब दूरस्थ क्षेत्रों के भ्रमण के दौरान जनता की कठिनाइयों को महसूस करते हुए उन्होंने लोगों से कहा कि वे चंपावत आने के बजाय अपनी समस्या उनके व्हाट्सएप नंबर पर भेज दें, उसके बाद वह समस्या जिला प्रशासन की हो जाएगी। इससे लोगों का धन और समय बचेगा तथा परेशानी भी नहीं होगी। लोगों ने पहले ऐसी प्रशासनिक सोच नहीं देखी थी।

सौ वर्ष की आयु पूरी कर चुके शिक्षक मोती सिंह मेहता कहते हैं कि वर्ष 1985 में पिथौरागढ़ जिले में विजेंद्र पाल जैसे जनता के जिलाधिकारी मिले थे। ठीक 40 वर्ष बाद अब मनीष कुमार जैसे जिलाधिकारी आए हैं, जिनकी कार्यक्षमता का कोई ठिकाना नहीं है। चैन से बैठना उनके स्वभाव में ही नहीं है। वे अपने निजी समय में कटौती कर रात एक बजे तक लोगों के भेजे व्हाट्सएप संदेश देखते हैं और उसी समय अधिकारियों को निर्देश भी देते हैं। भले ही वे अपने लिए समय नहीं निकाल पाते, लेकिन दूसरों के लिए समय देने से उन्हें और ऊर्जा मिलती है।

जिलाधिकारी की कार्यसंस्कृति का असर किसी दुर्घटना या आपदा के समय साफ दिखता है, जब पूरा प्रशासनिक तंत्र मौके पर राहत व बचाव कार्य में जुट जाता है। राहत व मुआवजे की राशि दूसरे ही दिन पीड़ित परिवार के घर पहुंच जाती है। गंभीर रूप से घायलों के लिए हेलीकॉप्टर की व्यवस्था कर कई लोगों की जान बचाई गई है। पहले ऐसे प्रयास सुनने को भी नहीं मिलते थे। अवकाश के दिन भी चैन से न बैठने वाले जिलाधिकारी के लिए 24 घंटे का समय भी कम पड़ रहा है। जनता की उनसे अपेक्षाएं इतनी बढ़ गई हैं कि अब लोग किसी नेता के पास जाने के बजाय सीधे जिलाधिकारी से संपर्क कर रहे हैं। राज्य स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह में राज्य आंदोलनकारियों ने स्वयं इन तथ्यों को उजागर किया।

पलायन रोकने के लिए जिलाधिकारी ने लक्ष्य तय किया है कि वे हर सप्ताह रिवर्स पलायन कर चुके चार लोगों को अपनी माटी से जोड़ेंगे। साथ ही पलायन का मन बना चुके लोगों के लिए गांव में ही आजीविका के साधन जुटाने पर काम कर रहे हैं। जिलाधिकारी का कहना है कि इतनी सुंदर आबोहवा छोड़कर लोग मैदानी क्षेत्रों की भीड़ का हिस्सा क्यों बनें। इसके लिए वे प्रवासियों से भी लगातार संपर्क में रहते हैं।

जिलाधिकारी पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ ही जिले में उत्पादित लाल चावल, मडुवे का प्राकृतिक आटा, गहत व अन्य उत्पादों और लोहे की कढ़ाई के भी ब्रांड एंबेसडर बने हुए हैं। महिलाओं द्वारा ऐपण से बनी उपहार सामग्री को उन्होंने सात समंदर पार तक पहुंचा दिया है, जिससे महिलाओं का उत्साह बढ़ा है। जिलाधिकारी सप्तकोसी परिक्रमा शुरू करवाकर चंपावत को ऐसा शिवधाम बनाना चाहते हैं, जहां कैलाश मानसरोवर या आदि कैलाश न जा पाने वाले शिवभक्त भगवान शिव के सात प्राचीन धामों की परिक्रमा कर आशीर्वाद प्राप्त कर सकें। मुख्यमंत्री इसकी बाकायदा घोषणा भी कर चुके हैं। यदि यह सोच साकार हुई तो कैलाश मानसरोवर यात्रा पर आने वाले तीर्थयात्री देश के कोने-कोने से शिवभक्तों को यहां आने के लिए प्रेरित करेंगे।

सही मायनों में आज चंपावत जिला हर क्षेत्र में हिमाचल की तर्ज पर आगे बढ़ रहा है। यहां बन रहा महिला स्पोर्ट्स कॉलेज उत्तराखंड का पहला ऐसा कॉलेज होगा, जो महिला खिलाड़ियों को नई उड़ान देगा।

पाटिया गांव में परंपरागत पाषाण युद्ध बग्वाल का आयोजन, एक घंटे तक बरसे पत्थर

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। ताकुला विकासखंड के पाटिया गांव में मंगलवार को गोवर्धन पूजा के अवसर पर सदियों पुरानी परंपरा के तहत पाषाण युद्ध बग्वाल का आयोजन हुआ। पचघटिया में आयोजित इस अनूठी बग्वाल में पाटिया, भटगांव, कोट्यूड़ा और कसून गांवों के बग्वालीवीरों ने हिस्सा लिया। पाटिया और भटगांव के लोग एक खाम, जबकि कोट्यूड़ा और कसून के लोग दूसरे खाम के रूप में आमने-सामने रहे। परंपरा के अनुसार दोनों खाम पचघटिया नदी के अलग-अलग किनारों पर रहकर एक-दूसरे पर पत्थरों की बौछार करते हैं। दोनों पक्षों का उद्देश्य विपक्षी खाम के लोगों को नदी का पानी पहले पीने से रोकना होता है। बग्वाल की शुरुआत पाटिया गांव के मैदान में गाय की पूजा के साथ हुई। मान्यता है कि



पिलख्वाल खाम के लोग खेत में चीड़ की टहनी गाड़कर बग्वाल शुरू करने की अनुमति मांगते हैं। इसके बाद दोनों पक्ष नदी के दोनों किनारों से एक-दूसरे पर पत्थर बरसाते हैं। इस वर्ष पाषाण युद्ध करीब एक घंटे तक चला। दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर जमकर पत्थर बरसाए। परंपरा के अनुसार बग्वाल का समापन तब हुआ, जब कोट्यूड़ा-कसून खाम के रवि सिंह बिष्ट नदी में पहुंचे और पानी पी लिया। युद्ध समाप्त होने के बाद दोनों पक्षों के लोग एक-दूसरे पर पानी छिड़ककर गले मिले और भाईचारे का संदेश दिया। इसके बाद एक-दूसरे को बधाई देते हुए अगले वर्ष फिर बग्वाल में मिलने का संकल्प लिया। बग्वाल के दौरान करीब एक दर्जन लोग हल्के रूप से घायल हुए। इस पाषाण युद्ध की खासियत यह है कि पत्थरों से चोटिल होने वाले योद्धा उपचार के लिए दवा के बजाय बिच्छू घास और उसी स्थान की मिट्टी का इस्तेमाल करते हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार यह परंपरा वर्षों से आपसी सहभागिता के साथ चली आ रही है। ग्रामीणों का कहना है कि सरकार और प्रशासन इस पारंपरिक आयोजन को प्रोत्साहित करें तो चंपावत की देवीधुरा बग्वाल की तरह पाटिया की बग्वाल को भी पर्यटन के मानचित्र पर पहचान मिल सकती है। बग्वाल देखने के लिए दूरदराज के क्षेत्रों से भी लोग पहुंचे। आयोजन में क्षेत्र पंचायत प्रतिनिधि सोहन कुमार, प्रधान भावना आर्या, ग्राम प्रधान पाटिया प्रतिनिधि ललित प्रसाद, कोट्यूड़ा प्रधान प्रतिनिधि भुवन चंद्र, विनोद सिंह, जीवन लाल, मुकेश भट्ट, हरीश भट्ट, बंशी लाल, संजय कुमार, जगदीश राम, अजय कुमार और मनोज कुमार सहित बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद रहे।

प्रकृति संरक्षण और गोसेवा का संदेश देता है गोवर्धन पूजा पर्व : रविपुरी महाराज

गोवर्धन पूजा पर प्राचीन हनुमान मंदिर में विधि-विधान से हुआ पूजन, महंत ने श्रद्धालुओं को दिया सद्भाव और लोकमंगल का संदेश

के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। गोवर्धन पूजा केवल धार्मिक आस्था का पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति संरक्षण, गोसेवा और समस्त जीवों के प्रति करुणा का भाव जागृत करने का संदेश भी देता है। यह पर्व हमें प्रकृति के महत्व को समझने और उसके संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा देता है। गोवर्धन पूजा के पावन अवसर पर प्राचीन हनुमान मंदिर में विधि-विधान से पूजा-अर्चना की गई। पूजा के बाद मंदिर के महंत रविपुरी महाराज ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए पर्व के आध्यात्मिक और सामाजिक महत्व पर प्रकाश डाला। महंत रविपुरी महाराज ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत उठाकर



ब्रजवासियों को प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण का संदेश दिया था। गोवर्धन पूजा हमें सिखाती है कि प्रकृति, गौवंश और समस्त जीव-जंतुओं का संरक्षण करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक दायित्व है। उन्होंने कहा कि भारतीय सनातन संस्कृति में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। गोसेवा और जीवों के प्रति दया एवं संवेदना का भाव हमारी संस्कृति की मूल पहचान है। उन्होंने प्रदेशवासियों और समस्त श्रद्धालुओं को गोवर्धन पूजा की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना है कि सभी के जीवन में सुख, समृद्धि और खुशहाली का वास हो। समाज में आपसी प्रेम, भाईचारा और सद्भाव मजबूत हो तथा प्रत्येक व्यक्ति के मन में लोकमंगल और परोपकार की भावना विकसित हो। उन्होंने कहा कि पर्वों का वास्तविक उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान करना नहीं, बल्कि उनके संदेशों को अपने जीवन में आत्मसात करना भी है।

एक नजर

दिल्ली में छठ महापर्व पर 16 नवंबर को सरकारी छुट्टी घोषित

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने छठ महापर्व के अवसर पर बड़ा फैसला लिया है। दिल्ली सरकार के सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार, आगामी 16 नवंबर (सोमवार) को राज्य के सभी सरकारी कार्यालयों, स्वायत्त निकायों (ऑटोनॉमस बॉडीज) और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) में सार्वजनिक अवकाश रहेगा। यह आदेश दिल्ली के उपराज्यपाल के आदेशानुसार और उनके नाम पर संयुक्त सचिव (जीएडी) प्रदीप तायल के हस्ताक्षर जारी किया गया है। इस अधिसूचना की प्रतियां उपराज्यपाल के सचिव, मुख्यमंत्री के सचिव, विधानसभा अध्यक्ष के सचिव और केंद्रीय गृह मंत्रालय समेत कई अन्य प्रमुख विभागों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए भेज दी गई हैं।

तकनीकी खामी से साढ़े तीन साल बाद भी सीवर लाइन अधूरी

नई दिल्ली। बेगमपुर गांव में बेगमपुर-बरवाला रोड पर सीवर लाइन डालने का कार्य पिछले साढ़े तीन साल से अधूरा है। लंबे समय में भी काम पूरा नहीं होने के कारण 100 मीटर सड़क पर आवागमन बंद है। नई सीवर लाइन का लेवल सही नहीं होने के कारण दोबारा खुदाई कर लाइन बिछाने का काम किया जा रहा है। इस परियोजना में दो अलग-अलग ठेकेदारों का नाम सामने आ रहा है। काम में तालमेल और तकनीकी खामियों के चलते लोगों को लंबे समय से परेशानी झेलनी पड़ रही है। बेगमपुर-बरवाला रोड बेगमपुर गांव को आसपास की कॉलोनियों से जोड़ने के साथ भगवान महावीर मार्ग (हेलीपोर्ट रोड) तक पहुंचने का प्रमुख रास्ता है। सड़क बंद होने से ग्रामीणों और कालोनीवासियों को आवागमन में परेशानी हो रही है। लंबे समय से जारी खुदाई और भारी मशीनों के इस्तेमाल से आसपास के मकानों की सुरक्षा को लेकर भी चिंता बढ़ गई है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि बार-बार खुदाई और निर्माण कार्य के कारण आसपास के मकानों की दीवारों में दरारें आने तथा नींव कमजोर होने की आशंका बनी हुई है।

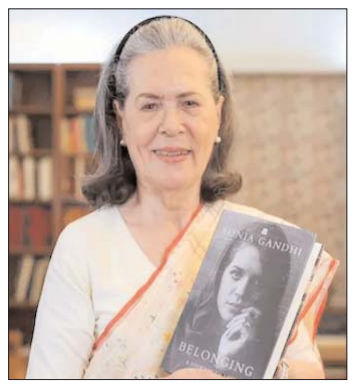
ग्रेप की पाबंदियों में भी नहीं टल सकती कार्रवाई

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने एमसीडी आयुक्त को मुख्यमंत्री से परामर्श कर एक सप्ताह के भीतर उच्च-स्तरीय समिति गठित करने का निर्देश दिया है। समिति ग्रेडेड रिस्पान्स एक्शन प्लान (ग्रेप) की पाबंदियों के दौरान खतरनाक और जर्जर इमारतों की मरम्मत, उन्हें सील करने या गिराने से जुड़े मुद्दों पर प्रभावी व्यवस्था सुझाएगी। न्यायमूर्ति सौरभ बनर्जी की पीठ ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण संबंधी पाबंदियों के दौरान इमारतों का ध्वस्तीकरण प्रतिबंधित है।

राजीव के जीते-जी राहुल ने कहा था- 'मुझे जल्द पापा के अंतिम संस्कार में आना पड़ेगा'; सोनिया ने किताब में लिखा

नई दिल्लीः तारीख 21 मई, 1991, तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर में एक जनसभा को संबोधित करते समय विस्फोट में राजीव गांधी की हत्या कर दी गई थी. इस घटना में पूर्व प्रधानमंत्री के अलावा उनके आसपास मौजूद 14 अन्य लोगों की भी मौत हो गई थी. उस समय राहुल गांधी अमेरिका में पढ़ाई कर रहे थे. राजीव गांधी की पत्नी सोनिया गांधी और बेटी प्रियंका दिल्ली में थी. राजीव गांधी की हत्या के दिन दिल्ली में सोनिया गांधी के घर में क्या हालात थे? इसके बारे में सोनिया गांधी ने अपनी किताब 'बिलॉन्गिंग : ए जर्नी ऑफ लव' में लिखा है.

सोनिया गांधी ने किताब में लिखा कि राहुल गांधी ने इस घटना से करीब दो महीने पहले पिता की सुरक्षा को लेकर



गंभीर चिंता जताई थी. सोनिया गांधी ने लिखा है कि राहुल ने राजीव गांधी के साथ एक दौरे के दौरान उनसे कहा था, ''अगर पापा की सुरक्षा के लिए कुछ नहीं किया गया, तो मुझे जल्द ही उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए लौटना पड़ेगा.''

सोनिया गांधी के मुताबिक, राजीव गांधी की हत्या का यह प्रयास ऐसे समय हुआ, जब तत्कालीन वी पी सिंह सरकार ने उनकी विशेष सुरक्षा समूह (SPG) की सुरक्षा वापस ले ली थी. यह फैसला दिसंबर में हुई एक समिति की बैठक के बावजूद लिया गया था, जिसमें तय किया गया था कि किसी नए खतरे के आकलन के आधार पर बदलाव की जरूरत सामने आने तक एसपीजी सुरक्षा जारी रहनी चाहिए.

उन्होंने लिखा, ''ऐसी कोई समीक्षा कभी नहीं की गई. अगले ही महीने वी पी सिंह सरकार ने एसपीजी सुरक्षा वापस ले ली.

इंदिरा गांधी से क्यों डरती थीं सोनिया गांधी? सास के गुस्से और घर के अनसुने किस्सों का किताब में खुलासा

सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा 'बिलॉन्गिंगः ए जर्नी ऑफ लव' में अपनी सास और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के गुस्सैल स्वभाव से जुड़े कई दिलचस्प किस्से साझा किए हैं. उन्होंने बताया कि इंदिरा गांधी नाराज होने पर कभी कर्मचारियों को कमरे के कोने में खड़ा कर देती थीं, तो कभी किसी नेता को दीवार की ओर मुंह करके खड़े रहने का आदेश देती थीं. कई बार वह नाराज व्यक्ति से दिनों तक बात भी नहीं करती थीं. सोनिया के मुताबिक, इंदिरा गांधी को बच्चों के साथ वक्त बिताने से सुकून मिलता था और पोते-पोतियों की मुस्कान उनका गुस्सा तुरंत शांत कर देती थी.

किसी कर्मचारी को कमरे के कोने में खड़ा कर देना, पार्टी के किसी सदस्य को दीवार की ओर मुंह करके खड़े रहने का आदेश देना या किसी व्यक्ति से कई दिनों तक बात नहीं करना...पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी कभी-कभार गुस्सा आने पर कुछ इस तरह पेश आती थीं. कांग्रेस की सीनियर नेता सोनिया गांधी ने अपनी पुस्तक में अपनी सास इंदिरा गांधी के स्वभाव के बारे में यह खुलासा किया है. सोनिया गांधी ने मंगलवार से बाजार में उपलब्ध अपनी बहुप्रतीक्षित आत्मकथा 'बिलॉन्गिंगः ए जर्नी ऑफ लव' में शादी के बाद नेहरू-गांधी परिवार में अपने पहले वर्ष के अनुभवों का जिक्र किया है.

हूतियों ने दी विदेशी कंपनियों, कर्मचारियों को तुरंत इलाका खाली करने की चेतावनी

कॉर्पोरेट दुनिया की उड़ी नींद, रियाद से वाशिंगटन तक के रक्षा मुख्यालयों में खलबली

रियाद। सऊदी के तमाम इलाकों को खाली करने के लिए हूतियों ने चेतावनी दे दी है। मिडिल ईस्ट की जंग अब एक ऐसे खतरनाक मोड़ पर पहुंच गई है जहां से वापसी का कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है। हूतियों की इस चेतावनी ने रियाद से लेकर वाशिंगटन तक के रक्षा मुख्यालयों में सनसनी पैदा कर दी है। यमन के अंसरुल्लाह यानी हूती विद्रोहियों ने सऊदी अरब में मौजूद तमाम विदेशी कंपनियों, कर्मचारियों और आम नागरिकों को तुरंत इलाका खाली करने की अंतिम हिदायत दी है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक यमन की सैन्य कमान ने साफ कर दिया है कि रियाद, जिद्दा और पूर्वी प्रांत के



जिन-जिन रक्षा, आर्थिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानों पर हमले का टारगेट सेट किया गया है, वहां काम कर रहे लोग अपनी जान बचाने तुरंत वहां से चले जाएं, क्योंकि इस बार हमला ऐसा होगा जिसकी मिसाल इतिहास में नहीं मिलेगी। हूतियों के आधिकारिक बयान को ने कॉर्पोरेट दुनिया की नींदें उड़ा दी हैं। यमन के रक्षा मंत्रालय से जुड़े सैन्य सूत्रों ने सार्वजनिक एडवाइज़री जारी करते हुए कहा है हम सऊदी अरब के अंदर यमनी सेना द्वारा चिन्हित किए गए परिसरों में मौजूद सभी कर्मचारियों और आम नागरिकों को सावधान करते हैं कि वे तुरंत उन जगहों से निकल जाए ताकि वे हमारे आने वाले बारूदी तूफान का शिकार ना बने।

यह चेतावनी कोई मामूली गीदड़ भभकी नहीं। यह इस बात का ऐलान है कि यमन की सेना सऊदी अरब की आर्थिक रीड यानी तेल ठिकानों और रणनीतिक इमारतों को मलबे के ढेर में तब्दील करने जा रही है, लेकिन इस बार हूतियों की रणनीति सिर्फ मिसाइलें दागने तक सीमित नहीं। उन्होंने एक ऐसा कूटनीतिक चक्रव्यूह रचा जिसने सऊदी क्राउन प्रिंस के विज़न 2030 की धज्जियां उड़ाकर रख दी।

ईरान शांति वार्ता : रुबियो ने तेहरान की मांगों को बताया अस्वीकार्य और हास्यास्पद

वाशिंगटन (ईएमएस)। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने कहा कि ईरान के साथ शांति वार्ता ठीक नहीं चल रही है, उन्होंने तेहरान की मांगों को पूरी तरह अस्वीकार्य, आपत्तिजनक और हास्यास्पद बताया। फ्लोरिडा में जी-7 विदेश मंत्रियों की बैठक के लिए फ्रांस रवाना होने से पहले रुबियो ने कहा कि हम किसी बड़ी सफलता के कगार पर नहीं हैं। उन्होंने जोर दिया कि राष्ट्रपति हमेशा समस्याओं का कूटनीतिक समाधान चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से, कभी-कभी ऐसा संभव नहीं होता, क्योंकि ईरान की मांगें वास्तव में व्यावहारिक नहीं थीं। उनकी ये टिप्पणियां राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा दिए गए बयान के कुछ घंटों बाद आईं, जिसमें ट्रंप ने कहा था कि यदि दोनों पक्ष वार्ता में प्रगति करते हैं, तब अमेरिका द्वारा ईरान पर हमला करने की बहुत कम संभावना है। कतर और पाकिस्तान की मध्यस्थता में यह वार्ता 3 नवंबर को अमेरिकी चुनाव से पहले शुरू हुई थी। हालांकि, 6 नवंबर को केशम द्वीप पर अमेरिका द्वारा किए गए हमलों के बाद यह ठप हो गई, जिसके बारे में वाशिंगटन ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। इन हमलों से एक दिन पहले, 5 नवंबर को खबर आई थी कि ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम को लेकर एक प्रस्ताव भेजा है, लेकिन यह प्रस्ताव अमेरिका द्वारा तेहरान की सात माँगें मानने पर निर्भर करता है। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कड़े शब्दों में चेतावनी दी है कि यदि ईरान की माँगें पूरी नहीं की गईं, तब तनाव और बढ़ सकता है।

पवन कल्याण शादी के 13 साल बाद तीसरी पत्नी अन्ना कोनिडेला से हुए अलग

नई दिल्लीः आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री और अभिनेता पवन कल्याण तथा उनकी पत्नी अन्ना कोनिडाला ने शादी के 13 साल बाद अलगाव का ऐलान किया है. कल देर रात पवन कल्याण के इंस्टाग्राम पेज पर जारी एक संयुक्त बयान में उन्होंने कहा कि उन्होंने यह फैसला 'आपसी समझ और सम्मान' के साथ लिया है. उन्होंने यह भी कहा कि वे आगे भी अच्छे दोस्त बने रहेंगे. बयान में कहा गया, 'भले ही हमारी शादी खत्म हो गई है, लेकिन हम अच्छे दोस्त बने रहेंगे और अपने प्यारे बच्चों के लिए समर्पित माता-पिता रहेंगे. उनकी खुशी और भलाई हमेशा हमारी साझा



प्राथमिकता रहेगी.' कपल ने लोगों से अनुरोध किया कि वे उनके जीवन के इस निजी बदलाव के दौरान उनकी निजता का सम्मान करें. बयान में कहा गया, 'जीवन के इस निजी बदलाव के दौरान हम आपकी समझ, दयालुता और हमारी निजता के प्रति सम्मान की उम्मीद करते हैं. हम उन सभी लोगों का दिल से आभार व्यक्त करते हैं जो इस सफर में हमारे साथ खड़े रहे.' इस अलगाव के साथ ही पवन कल्याण की तीसरी शादी भी खत्म हो गई है. पवन कल्याण की पहली पत्नी नंदिनी, जिन्हें जाह्नवी के नाम से भी जाना जाता है. दोनों ने 1997 शादी की थी. हालांकि कुछ साल बाद ही 1999 के आसपास दोनों अलग हो गए. अगस्त 2008 में फैमिली कोर्ट ने एकमुश्त एलिमनी समझौते के बाद उनका विवाह कानूनी रूप से खत्म हो गया. तलाक के बाद नंदिनी अमेरिका चली गईं, जहां उन्होंने कृष्णा रेड्डी नाम के एक NRI डॉक्टर से दोबारा शादी कर ली और अपना नाम जाह्नवी रख लिया. पवन कल्याण ने दूसरी शादी रेणु देसाई से की. उनकी मुलाकात साल 2000 में तेलुगु फिल्म 'बद्री' में काम करने के दौरान हुई थी.

अमेरिका की इस यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं अनंत सिंह के दामाद ऋषिकेश कुमार, शादी का कार्ड वायरल

मोकामा। मोकामा विधायक अनंत सिंह इन दिनों अपनी बेटी की शादी को लेकर चर्चा में हैं. उनके पैतृक गांव नदावां में 25 नवंबर को उनकी दूसरी बेटी शिवांगी सिंह की शादी हो रही है, जिसकी तैयारियां काफी बड़े स्तर पर चल रही हैं. इसी बीच अनंत सिंह के दामाद ऋषिकेश कुमार को लेकर भी खूब चर्चा है. शादी के कार्ड की एक तस्वीर भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है, जिसमें उनके दामाद के नाम के ठीक नीचे ये लिखा गया है कि वो अमेरिका की किस यूनिवर्सिटी से पढ़े हैं. ऐसे में आइए जानते हैं कि अनंत सिंह के दामाद ने कहां तक पढ़ाई की है और वो क्या करते हैं.

अनंत सिंह के दामाद



ऋषिकेश कुमार बिहार के ही रहने वाले हैं. वो मूल रूप से बिहटा क्षेत्र के कृष्णा नगर से आते हैं. हालांकि पिछले कुछ सालों से वो अमेरिका में हैं और यहीं से उन्होंने ग्रेजुएशन भी किया है. ऋषिकेश कुमार ने अमेरिका की जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की है, उन्होंने यहां से एमबीए किया. इसके बाद वो अमेरिका में ही नौकरी कर रहे हैं. पिछले करीब 10 सालों से वो अमेरिका में हैं. जानकारी के मुताबिक उनके पिता रणविजय सिंह कमांडेंट हैं. फिलहाल ऋषिकेश कुमार को लेकर इसके अलावा बाकी जानकारियां सामने नहीं आई हैं.

अनंत सिंह की बेटी की शादी का कार्ड सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है. इस कार्ड में अंदर जहां वर का नाम लिखा गया है, उसके ठीक नीचे उनकी एजुकेशन की जानकारी भी दी गई है और बताया गया है कि ऋषिकेश कुमार ने अमेरिका के अटलांटा स्थित जॉर्जिया स्टेट यूनिवर्सिटी से MBA किया है.

अनंत सिंह मोकामा के बाहुबली नेता हैं, ऐसे में उनकी बेटी की शादी को लेकर चर्चा काफी ज्यादा है. बताया जा रहा है कि वो इस शादी को काफी ग्रैंड करना चाहते हैं.

अमेरिकी सीनेट ने डेटा सेंटर और ऊर्जा परियोजनाओं की मंजूरी देने का बिल आगे बढ़ाया

चुनावों में रिपब्लिकन नेताओं को शिकस्त मिलने के बाद यह सीनेट का पहला बड़ा कदम

वाशिंगटन। अमेरिकी उच्च सदन 'सीनेट' ने सोमवार को एक द्विदलीय विधेयक को आगे बढ़ाया, जिसका उद्देश्य डेटा सेंटर और अन्य बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की मंजूरी देने के लिए आवश्यक समीक्षाओं की प्रक्रिया तेज करना है। पिछले हफ्ते हुए मध्यावधि चुनावों में रिपब्लिकन नेताओं को शिकस्त मिलने के बाद यह सीनेट का पहला बड़ा कदम है। सीनेट में इस विधेयक पर औपचारिक रूप से विचार करने के पक्ष में 73 वोट जबकि विरोध में 25 वोट पढ़े।

सांसदों और राष्ट्रपति डोनाल्ड



ट्रंप ने इस विधेयक का समर्थन करते हुए कहा है कि इससे बिजली और ऊर्जा के अन्य स्रोतों की बढ़ती मांग पूरी करने में मदद मिलेगी। विधेयक में प्रस्तावित व्यापक बदलावों से स्वच्छ ऊर्जा या जीवाश्म ईंधन से जुड़ी बड़ी ऊर्जा परियोजनाओं को शुरू करने की समय-सीमा कम हो जाएगी। साथ ही यह भी तय किया जाएगा कि डेटा सेंटर अपनी खपत के मुताबिक ऊर्जा की कीमत चुकाएं। एआई से जुड़े डेटा सेंटर और बिजली की बढ़ती कीमतों को लेकर लोगों में काफी नाराजगी है। इसी वजह से कई डेमोक्रेट नेता सामने आए हैं जिन्होंने इन विशाल और अत्यधिक ऊर्जा खपत करने वाले ढांचों पर लगाम लगाने का वादा किया है।

ट्रंप ने रविवार को सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए सांसदों से इस विधेयक के पक्ष में वोट करने की अपील की। ??उन्होंने इसे अमेरिकी ऊर्जा स्वतंत्रता और वर्चस्व के लिए एक बड़ी जीत करार दिया। ट्रंप ने लिखा- यह विधेयक ''पाइपलाइन, खदानों और बिजली संयंत्रों के निर्माण की प्रक्रिया को पहले से कहीं ज्यादा तेज करेगा, जिससे अमेरिकी परिवारों के लिए ऊर्जा की लागत कम होगी। स्वच्छ ऊर्जा और तेल एवं गैस क्षेत्र में परियोजनाओं के विकास से जुड़े प्रमुख उद्योग संगठनों ने भी विधेयक का समर्थन किया।

चीन के ताइयुआन में 40 मंजिला इमारत में भीषण आग, 14 की मौत

बीजिंग। चीन के ताइयुआन शहर में एक 40 मंजिला ऊंची इमारत में भीषण आग लगने से कम से कम 14 लोगों की दुखद मौत हो गई, जबकि 25 अन्य घायल हो गए। घायलों में नौ की हालत गंभीर है, जिन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यह भयानक घटना तब हुई जब शहर की एक व्यावसायिक और आवासीय दोनों तरह की इस बहुमंजिला इमारत में अचानक आग लग गई। इमारत के निचले हिस्से की चौथी मंजिल के आसपास से शुरू हुई यह आग तेजी से ऊपरी मंजिलों, खासकर आठवीं और नौवीं मंजिल तक फैल गई, जहां एक होटल स्थित था। इस 40 मंजिला इमारत में



कई होटल, अल्पकालिक किराए पर दिए जाने वाले अपार्टमेंट, छोटे आयोजन स्थल और विभिन्न कोचिंग सेंटर संचालित होते थे, जिससे इसमें हमेशा लोगों की आवाजाही बनी रहती थी। आग इतनी भीषण थी कि सामने आए वीडियो में पूरी 40 मंजिला इमारत से घना धुआं निकलता साफ देखा जा सकता है। दमकलकर्मी क्रेन की मदद से आग पर काबू पाने की भरसक कोशिश करते नजर आए, जो निचले हिस्से से ऊपर की ओर फैल रही थी। लगभग दो घंटे की अथक मशक्कत के बाद आग पर सफलतापूर्वक काबू पा लिया गया। अधिकारियों ने बताया कि रविवार रात 8:30 बजे तक बचाव अभियान पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया था, हालांकि हताहतों की संख्या ने सभी को स्तब्ध कर दिया है। आग लगने के कारणों की जांच शुरू कर दी गई है।

रिपब्लिकन सांसद मैसी ने रक्षा मंत्री हेगसेथ के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव किया पेश

प्रस्ताव में ईरान युद्ध, यमन व वेनेजुएला में सैन्य कार्रवाई में हेगसेथ की भूमिका का किया जिक्र

वाशिंगटन। अमेरिका में रिपब्लिकन पार्टी के सांसद थॉमस मैसी ने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पर मतदान कराने की पहल की और पार्टी से उन्हें पद से हटाने का आग्रह किया है। हाल में हुए चुनावों में रिपब्लिकन पार्टी की करारी हार के लिए ईरान युद्ध के असर को जिम्मेदार बताया जा रहा है। केंटकी से सांसद मैसी ने मध्यावधि चुनावों के बाद प्रतिनिधि सभा की कार्यवाही के पहले दिन सदन में महाभियोग प्रस्ताव पढ़ा।

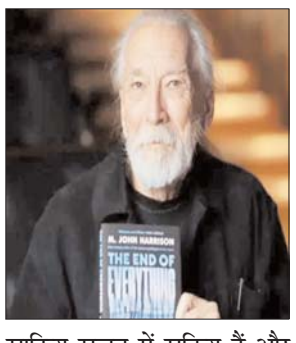
यह प्रस्ताव मुख्य रूप से ईरान युद्ध पर केंद्रित है, लेकिन इसमें यमन और वेनेजुएला में सैन्य कार्रवाई में हेगसेथ की भूमिका का भी उल्लेख किया गया है। मैसी ने कहा कि हेगसेथ के कृत्य ''गंभीर अपराध और कदाचार'' की श्रेणी में आते हैं। उन्होंने कहा कि हेगसेथ ने ''गैरकानूनी आदेशों को जानबूझकर लागू किया'' और वह ''अब भी संविधान के लिए खतरा बने हुए हैं।'' मैसी के प्रस्ताव पढ़ने के कुछ ही घंटे बाद अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने उन पर व्यक्तिगत हमला करते हुए उन्हें ''नाकाम व्यक्ति'' बताया और कहा कि ''उनके मन में बहुत नफरत भरी है।'' प्रतिनिधि सभा में सप्ताह के मध्य तक इस प्रस्ताव पर मतदान हो सकता है, लेकिन आगे की प्रक्रिया को लेकर काफी अनिश्चितता है।

प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता हकीम जेफ्रीज ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है। यदि अधिकतर डेमोक्रेटिक सांसद उनका साथ देते हैं, तो हेगसेथ के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव पारित कराने के लिए मैसी को रिपब्लिकन पार्टी के केवल कुछ सांसदों के समर्थन की जरूरत होगी।

जॉन हैरिसन ने अपने उपन्यास द एंड ऑफ एवरीथिंग के लिए जीता बुकर प्राइज

हैरिसन बुकर प्राइज जीतने वाले इतिहास में सबसे उम्रदराज विजेता बन गए

लंदन। ब्रिटिश साहित्य के जाने-माने लेखक एम जॉन हैरिसन ने अपने उपन्यास द एंड ऑफ एवरीथिंग के लिए प्रतिष्ठित बुकर प्राइज जीता है। 81 साल की उम्र में यह ऐतिहासिक सम्मान पाने के साथ ही हैरिसन बुकर प्राइज के इतिहास में सबसे उम्रदराज विजेता बन गए हैं। लंदन में आयोजित एक भव्य समारोह में उन्हें ट्रॉफी और 50 हजार पाउंड यानी करीब 53 लाख रुपए की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। हैरिसन पिछले करीब छह दशकों से



साहित्य सृजन में सक्रिय हैं और वैश्विक स्तर पर गंभीर पाठकों के बीच उनका एक खास मुकाम रहा है।

यह उपन्यास एक ऐसे काल्पनिक और झकझोर देने वाले ब्रिटिश समाज की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जो एक अज्ञात व रहस्यमयी आपदा के बाद पूरी तरह बदल चुका है। किताब को लेकर पाठकों और आलोचकों के बीच रोचक बहस देखने को मिली है। एक प्रमुख समीक्षक ने इसे उदास लेकिन बेहद शानदार और सपने जैसा उलझाने वाला बताया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक चुनौतीपूर्ण मगर उम्मीद जगाती किताब बुकर प्राइज के निर्णायक मंडल (जूरी) की अध्यक्ष डेम मैरी बियर्ड ने पुस्तक के चयन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने स्वीकार किया कि यह उपन्यास पाठकों के लिए मानसिक स्तर पर चुनौतीपूर्ण है, लेकिन विश्वस्तरीय और उच्च कोटि के साहित्य का स्वभाव ही ऐसा होना चाहिए जो सोचने पर विवश करे। डेम मैरी ने कहा कि गंभीर और उदास विषय-वस्तु के बावजूद यह किताब पाठक को जीवन को देखने का एक नया नजरिया देती है, चेहरे पर हल्की मुस्कुराहट लाती है और अंत में मन में उम्मीद की एक पुख्ता किरण छोड़ जाती है।

संपादकीय

दीपावली का उत्सव या प्रदूषण का उत्सव?

दीपावली भारत का सबसे बड़ा सांस्कृतिक और धार्मिक पर्व है। यह अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और निराशा पर आशा की विजय का प्रतीक है। दीपावली का मूल संदेश घर-परिवार, समाज और प्रकृति में सुख, शांति एवं समृद्धि का प्रकाश फैलाना है। लेकिन दुर्भाग्य से पिछले कुछ वर्षों में इस पवित्र त्योहार का स्वरूप तेजी से बदलता दिखाई दे रहा है। दीपों की रोशनी और खुशियों के स्थान पर पटाखों का शोर, बारूद का धुआं और प्रदूषण का बढ़ता स्तर हमारी चिंता का विषय बन गया है। पहले दीपावली पर सीमित मात्रा में पटाखे फोड़े जाते थे। यह खुशी और उत्सव का एक छोटा-सा हिस्सा था, लेकिन अब दीपावली के पहले से लेकर ग्यारस तक पटाखे फोड़ने की होड़ लगी रहती है। इसे सनातन संस्कृति और धार्मिक गौरव से जोड़कर शक्ति प्रदर्शन का माध्यम बनाया जा रहा है। सवाल यह है कि क्या अपनी धार्मिक आस्था प्रदर्शित करने के लिए अपने और दूसरों के जीवन को संकट में डालना आवश्यक है? क्या पटाखों का अत्यधिक इस्तेमाल ही संस्कृति और परंपरा की पहचान बन गई है?

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सामने आए आंकड़े इस खतरे की गंभीरता को बताते हैं। दीपावली के आसपास देश के अनेक शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 350 से 400 के स्तर तक पहुंच गया। दिल्ली में भी एक्यूआई लगभग 376 दर्ज किया गया। बहादुरगढ़, जींद, अंबाला, गुरुग्राम, फरीदाबाद और कई अन्य शहरों में भी प्रदूषण का स्तर चिंताजनक रहा। बिहार, पंजाब और मध्य प्रदेश सहित कई राज्यों में इसका प्रभाव देखने को मिला। हवा में घुले जहरीले कण बच्चों, बुजुर्गों, सांस के मरीजों और सामान्य नागरिकों के स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन रहे हैं। सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि गरीब और मध्यम वर्ग का मेहनत से कमाया हुआ पैसा कुछ घंटों की आतिशबाजी में बारूद का धुंआ बनकर उड़ जाता है। जिस धन का उपयोग बच्चों की शिक्षा, परिवार के स्वास्थ्य, जरूरतमंदों की सहायता और भविष्य की सुरक्षा में किया जा सकता है, वह धुएं में बदलकर नुकसान पहुंचा रहा है। कुछ क्षणों की चमक के बदले कई दिनों तक लोगों को प्रदूषित हवा में सांस लेने की मजबूरी झेलनी पड़ती है। इस पूरे विषय में धर्म के ठेकेदारों और व्यवस्था के जिम्मेदार लोगों को भी आत्ममंथन करना चाहिए। धार्मिक स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं हो सकता, किसी नागरिक के स्वच्छ हवा में सांस लेने के अधिकार की अनदेखी की जाए। न्यायपालिका, केंद्र सरकार, राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों की जिम्मेदारी है, पर्यावरण संरक्षण के नियमों का निष्पक्ष और प्रभावी पालन कराएं। न्यायिक निर्णयों में भी आस्था के साथ-साथ जनस्वास्थ्य और संविधान द्वारा प्रदत्त जीवन के अधिकार को सर्वोच्च महत्व मिलना चाहिए।

प्रदूषण का दुष्प्रभाव केवल मनुष्य तक सीमित नहीं है। पटाखों का धुआं, तेज आवाज और रासायनिक अवशेष पशु-पक्षियों, छोटे जीवों और प्राकृतिक पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं। इससे प्रकृति का जैविक संतुलन बिगड़ता है। दीपावली के नाम पर हम जिस प्रकृति से जीवन प्राप्त करते हैं, उसी को नुकसान पहुंचाना कैसी धार्मिक विजय है? अब समय आ गया है, समाज स्वयं अपनी जिम्मेदारी समझे। धर्म, आस्था, करुणा, संयम और सहअस्तित्व की शिक्षा देता है। शक्ति प्रदर्शन, दूसरों को कष्ट पहुंचाने के लिए हो इसे कहीं से भी जायज नहीं ठहराया जा सकता है।

भैया दूज: रिश्तों की मिठास से संस्कारों के संरक्षण तक

ललित गर्ग



भारतीय संस्कृति में पर्व केवल कैलेंडर की तारीखें नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों को पुनर्जीवित करने के अवसर हैं। हर त्योहार के पीछे कोई न कोई सामाजिक, पारिवारिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संदेश छिपा है। दीपावली के पंचपर्वों की श्रृंखला में आने वाला भैया दूज भी ऐसा ही आत्मीय पर्व है, जो भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को स्नेह, विश्वास, सुरक्षा और कर्तव्य की डोर से बांधता है। यह पर्व मानो रिश्तों की सूखी धरती पर संवेदनाओं की फुहार है, जो मनुष्य को याद दिलाता है कि जीवन की सबसे बड़ी पूंजी धन नहीं, बल्कि अपनेपन का भाव है। भैया दूज कार्तिक शुक्ल द्वितीया को मनाया जाता है। बहन भाई के मस्तक पर तिलक लगाती है, आरती करती है, उसके सुख, स्वास्थ्य, दीर्घायु और मंगल की कामना करती है तथा भाई अपनी बहन के प्रति स्नेह और संरक्षण का संकल्प व्यक्त करता है। देखने में यह परंपरा जितनी सरल है, उसका भावार्थ उतना ही व्यापक है। यह केवल एक भाई और एक बहन का रिश्ता नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज में परस्पर सम्मान, सहयोग, करुणा और सुरक्षा की भावना को मजबूत करने का सांस्कृतिक विधान है।

पौराणिक कथा में यमराज और यमुना का प्रसंग इस पर्व की आत्मा को उजागर करता है। यमुना ने अपने भाई यमराज को प्रेमपूर्वक अपने घर आमंत्रित किया। यमराज ने बहन के स्नेह को स्वीकार किया और उसके आतिथ्य से प्रसन्न होकर वरदान दिया। तभी से यह दिन यम द्वितीया के रूप में भी प्रतिष्ठित हुआ। कथा का वास्तविक संदेश चमत्कार में नहीं, रिश्ते निभाने की संवेदना में है। बहन का प्रेम और भाई का उत्तरदायित्व मिलकर उस विश्वास को जन्म देते हैं, जिसमें जीवन की कठिनाइयों के सामने मनुष्य अकेला नहीं पड़ता। हमारे पूर्वजों ने रिश्तों को केवल रक्त संबंधों तक सीमित नहीं रखा था। उन्होंने उनमें कर्तव्य और मर्यादा का भाव जोड़ा। इसीलिए भैया दूज हमें यह सिखाता है कि बहन के प्रति भाई का दायित्व केवल उपहार देना नहीं, बल्कि उसके सम्मान, सुरक्षा और स्वाभिमान के प्रति सजग रहना है। इसी तरह बहन का स्नेह केवल तिलक तक सीमित नहीं, बल्कि भाई के जीवन में सद्भाव, संयम और सदाचार की कामना से जुड़ा है।

आज के बदलते सामाजिक परिवेश में इस संदेश की प्रासंगिकता और बढ़ गई है। परिवार छोटे हो रहे हैं, जीवन की गति तेज हो रही है और डिजिटल दुनिया ने संवाद के अनेक रास्ते तो खोले हैं, लेकिन दिलों के बीच की दूरी कई बार बढ़ा दी है। रिश्ते कभी-कभी संदेशों और इमोजी तक सिमट जाते हैं। ऐसे समय में भैया दूज हमें रिश्तों को औपचारिकता नहीं, आत्मीयता से जीने की सीख देता है। दुर्भाग्य से पर्वों के साथ प्रदर्शन और बाजारवाद का प्रभाव भी बढ़ा है। महंगे उपहार, दिखावटी आयोजन और सामाजिक प्रतिस्पर्धा ने कई बार त्योहार की आत्मा को पीछे धकेल दिया है। 'चमक-दमक से दीप जल सकता है, लेकिन रिश्तों में उजाला प्रेम से ही आता है।' भैया दूज का अर्थ जेब की क्षमता नहीं, हृदय की समृद्धि है। बहन को कितना महंगा उपहार मिला, इससे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि भाई ने उसकी बात कितनी सुनी, उसके सम्मान के लिए कितना खड़ा रहा और कठिन समय में उसका हाथ कितनी मजबूती से थामा।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में यह पर्व अलग-अलग लोकपरंपराओं के साथ मनाया जाता है। कहीं इसे भाई दूज, कहीं भाई बीज और कहीं यम द्वितीया कहा जाता है। महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार सहित अनेक क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट रस्में हैं। इन विविधताओं में भारतीय संस्कृति की खूबसूरती दिखाई देती है। 'कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी' वाली इस भूमि में परंपराएं भले बदल जाएं, लेकिन उनके मूल में छिपा प्रेम और आत्मीयता का भाव एक ही रहता है। भैया दूज का एक और व्यापक संदेश है-स्त्री के सम्मान का। यदि भाई बहन की रक्षा का संकल्प लेता है तो यह भावना समाज की प्रत्येक बेटी और प्रत्येक महिला के सम्मान तक विस्तार पाती है। बहन के प्रति सम्मान का अर्थ तभी सार्थक है, जब वही दृष्टि हम हर स्त्री के प्रति रखें। घर की बहन सुरक्षित हो और समाज की बेटी असुरक्षित-यह विरोधाभास हमारी संस्कृति की आत्मा के अनुकूल नहीं हो सकता। आज जब भारत विकसित भारत और विश्वगुरु बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब केवल आर्थिक विकास पर्याप्त नहीं है। सभ्यता की ऊंचाई इमारतों से नहीं, मनुष्यता की ऊंचाई से मापी जाती है। यदि परिवारों में संस्कार, समाज में संवेदना और जीवन में नैतिकता मजबूत होगी, तभी विकास स्थायी और सार्थक बनेगा। भैया दूज जैसे पर्व इसी सांस्कृतिक पूंजी को सुरक्षित रखने का माध्यम हैं। इस पर्व का संदेश सीमाओं पर देश की रक्षा करने वाले सैनिक भाइयों तक भी पहुंचना चाहिए। कितनी ही बहनें ऐसी हैं जिनके भाई त्योहार के दिन भी मातृभूमि की सुरक्षा में तैनात रहते हैं। उनके लिए बहन की प्रार्थना और देशवासियों का सम्मान ही सबसे बड़ा तिलक है। वास्तव में भैया दूज का प्रेम तभी व्यापक होगा, जब वह अपने भाई से आगे बढ़कर हर उस व्यक्ति के प्रति संवेदना बने जो परिवार, समाज और राष्ट्र की रक्षा में अपना जीवन समर्पित कर रहा है। भारतीय संस्कृति ने नारी को केवल संरक्षण की वस्तु नहीं माना।

हमारे यहां 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' की भावना रही है। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों ने ज्ञान की परंपरा में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाई।

उत्तर प्रदेश 2027: सत्ता की परीक्षा, समीकरणों की अग्निपरीक्षा

ललित गर्ग

उत्तर प्रदेश की राजनीति में 2027 का विधानसभा चुनाव अभी कई महीने दूर है, लेकिन सत्ता की बिसात बिछ चुकी है। 403 विधानसभा सीटों वाला उत्तर प्रदेश केवल एक राज्य का चुनाव नहीं, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा तय करने वाला निर्णायक राजनीतिक रणक्षेत्र है। इसीलिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सक्रियता, भाजपा संगठन में बदलाव, अखिलेश यादव की राजनीतिक रणनीति, विपक्षी दलों के संभावित गठजोड़ और मुस्लिम मतदाताओं को लेकर बन रहे नए समीकरण-सभी पर देश की निगाहें टिकी हैं। प्रश्न है कि योगी की मजबूत पकड़ के सामने विपक्ष की चुनौती, मुस्लिम मतों से आगे हिंदू मतदाताओं की बदलती मनोदशा निर्णायक बन पायेगी? प्रश्न यह भी है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का चेहरा एवं योजनाएं भी क्या प्रदेश का राजनीतिक नेतृत्व एवं भाग्य रचने में सहायक होगी?

सबसे पहले भाजपा की स्थिति को देखें तो उसके सामने सबसे बड़ी ताकत योगी आदित्यनाथ का नेतृत्व और सरकार की उपलब्धियों का दावा है। कानून-व्यवस्था, बुनियादी ढांचे, एक्सप्रेस-वे, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थलों के विकास तथा केंद्र-राज्य की योजनाओं को भाजपा चुनावी मुद्दा बनाने की तैयारी में है। योगी का दावा है कि 2027 का मुकाबला '80 बनाम 20' के रूप में होगा और भाजपा गठबंधन 300 से अधिक सीटें जीतेगा। लेकिन चुनावी राजनीति में दावे और वास्तविक जनभावना के बीच अंतर होता है। इसलिए भाजपा के लिए चुनौती केवल अपनी उपलब्धियां गिनाना नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि सत्ता-विरोधी भावना उसके पारंपरिक सामाजिक आधार में सेंध न लगाए।

भाजपा की रणनीति में इस बार मुस्लिम समाज के भीतर पहुंच बनाने का प्रयास भी स्पष्ट दिखाई देता है। अगस्त 2026 में पार्टी की राष्ट्रीय टीम में उत्तर प्रदेश के दो मुस्लिम नेताओं-पूर्व अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. तारिक मंसूर को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और कुंवर बासित अली को राष्ट्रीय अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी गई। राजनीतिक विश्लेषकों ने इसे 2027 से पहले भाजपा की पसमांदा तथा मुस्लिम समाज के कुछ वर्गों तक पहुंच बढ़ाने की रणनीति से जोड़ा है। यह कदम इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में मुस्लिम आबादी 19.26 प्रतिशत थी। पश्चिमी उत्तर प्रदेश और कुछ अन्य क्षेत्रों में उनका चुनावी प्रभाव कई सीटों पर निर्णायक हो सकता है। लेकिन भाजपा के लिए चुनौती यह है कि मुस्लिम मतों में सेंध लगाना जितना कठिन है, उससे कहीं अधिक कठिन अपने हिंदू सामाजिक आधार को एकजुट बनाए रखना हो सकता है।

यहीं चुनाव का दूसरा और शायद अधिक महत्वपूर्ण पक्ष सामने आता है। मुस्लिम मतों के ध्रुवीकरण की चर्चा के साथ हिंदू मतदाताओं के भीतर बदलती प्राथमिकताओं को भी समझना होगा। मतदाता केवल जाति और धर्म के आधार पर मतदान नहीं करता। रोजगार, महंगाई, किसान, शिक्षा, युवाओं के अवसर, स्थानीय विधायक की छवि, प्रशासनिक व्यवहार और विकास की वास्तविक पहुंच भी चुनावी निर्णय को प्रभावित करते हैं। इसलिए 2027 का चुनाव केवल '80 बनाम 20' के राजनीतिक आख्यान से समझना शायद पर्याप्त नहीं होगा। समाजवादी पार्टी के लिए सबसे बड़ा अवसर यही है। अखिलेश यादव 2024 के लोकसभा चुनाव में बने सामाजिक समीकरणों को विधानसभा स्तर तक मजबूत करना चाहेंगे। पीडीए-पिछड़ा, दलित और अल्पसंख्यक का फार्मूला भाजपा के गैर-यादव पिछड़े और दलित मतदाताओं में सेंध लगाने की कोशिश करेगा। सपा के सामने चुनौती यह है कि वह अपने सामाजिक समीकरण को केवल चुनावी नारा न रहने दे, बल्कि बूथ स्तर पर संगठन और उम्मीदवार चयन के माध्यम से उसे वास्तविक राजनीतिक शक्ति में बदल सके। बसपा की भूमिका को भी नजरअंदाज करना भाजपा और सपा दोनों के लिए जोखिम भरा होगा। यदि मायावती दलित मतदाताओं के अपने पुराने आधार को पर्याप्त रूप से सक्रिय कर पाती हैं, तो कई सीटों पर त्रिकोणीय मुकाबला परिणाम बदल सकता है। कांग्रेस की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर दिखाई देती है, लेकिन यदि वह सपा के साथ तालमेल बनाकर लड़ती है तो विपक्षी मतों के बिखराव को कुछ हद तक रोक सकती है। लेकिन यहां पूर्व के अनुभवों के आधार पर सपा कांग्रेस से तालमेल करने से पहले फूंक-फूंक कर कदम उठा रही है।

भाजपा के सामने दूसरी चुनौती अपने गठबंधन और सामाजिक समीकरणों को संतुलित रखने की है। निषाद पार्टी, सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) तथा अन्य सहयोगी दलों की अपेक्षाएं, टिकट वितरण और क्षेत्रीय नेतृत्व की महत्वाकांक्षाएं चुनाव के समय महत्वपूर्ण हो सकती हैं। भाजपा का मजबूत संगठन इन मतभेदों को नियंत्रित कर सकता है, लेकिन टिकट वितरण में छोटी-सी चूक भी कुछ क्षेत्रों में बड़े राजनीतिक नुकसान का कारण बन सकती है। अमित शाह की सक्रियता भी इस चुनाव की गंभीरता को रेखांकित करती है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की रणनीति केवल लखनऊ से नहीं, बल्कि दिल्ली के केंद्रीय नेतृत्व की निगरानी में तैयार होने की संभावना है। दूसरी ओर योगी आदित्यनाथ की अपनी लोकप्रियता और प्रशासनिक छवि भाजपा के लिए सबसे बड़ा स्थानीय चुनावी चेहरा है। इसलिए वास्तविक चुनौती यह होगी कि योगी का नेतृत्व और केंद्रीय संगठनात्मक रणनीति कितनी प्रभावी तरह से एक-दूसरे के साथ तालमेल बैठाते हैं।

इस चुनाव का सबसे महत्वपूर्ण निष्कर्ष यही होगा कि 2027 में उत्तर प्रदेश का मतदाता क्या चुनता है-स्थिरता और निरंतरता या परिवर्तन की आकांक्षा। भाजपा के पास संगठन, सत्ता, योगी का चेहरा और व्यापक चुनावी मशीनरी है। विपक्ष के पास सत्ता-विरोधी भावना, सामाजिक न्याय का मुद्दा और भाजपा के खिलाफ विभिन्न वर्गों को एकजुट करने की संभावना है। इसलिए अभी किसी एक दल की जीत को निश्चित मानना जल्दबाजी होगी। भाजपा के लिए 300 पार का लक्ष्य आसान नहीं होगा, लेकिन उसे कमजोर समझना भी विपक्ष की भूल होगी। सपा के सामने अवसर बड़ा है, लेकिन उसे अवसर को जीत में बदलने के लिए सामाजिक समीकरण के साथ संगठनात्मक मजबूती भी दिखानी होगी। बसपा और कांग्रेस की भूमिका कई सीटों पर 'गेम चेंजर' बन सकती है।

योगी आदित्यनाथ के सामने 2027 का चुनाव केवल विपक्षी दलों के बनते-बिगड़ते समीकरणों, मुस्लिम मतों के ध्रुवीकरण और समाजवादी पार्टी के बढ़ते प्रभाव की चुनौती नहीं है, बल्कि भाजपा के भीतर संतुलन बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण होगा। ऐसे समय में गृहमंत्री अमित शाह की उत्तर प्रदेश को लेकर सक्रिय रणनीति योगी के लिए सहायक शक्ति बन सकती है। शाह की चुनावी रणनीति का मूल आधार सामाजिक समीकरणों का विस्तार, बूथ स्तर की संगठनात्मक मजबूती और सहयोगी दलों के बीच बेहतर तालमेल रहा है। यदि यह रणनीति योगी की प्रशासनिक छवि और लोकप्रियता के साथ समन्वित होती है तो भाजपा विपक्ष की चुनौती को प्रभावी ढंग से रोक सकती है। लेकिन केंद्रीय नेतृत्व और प्रदेश नेतृत्व के बीच रणनीतिक प्राथमिकताओं में कोई असंतुलन दिखाई दिया तो इसका लाभ विपक्ष उठा सकता है।

राम मंदिर की दहलीज पर अखिलेश की दस्तक, 2027 के चुनाव से पहले अयोध्या की ओर बढ़े कदमों ने छेड़ी नई राजनीतिक बहस

कांतिलाल मांडोत

उत्तर प्रदेश की राजनीति में अयोध्या और श्रीराम मंदिर का मुद्दा एक बार फिर चर्चा के केंद्र में है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने अपनी पत्नी एवं सांसद डिंपल यादव के साथ 12 दिसंबर को अयोध्या पहुंचकर हनुमानगढ़ी और श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में रामलला के दर्शन करने की घोषणा की है। राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद यह उनका पहला दर्शन होगा। इस घोषणा के साथ ही प्रदेश की राजनीति में एक नई बहस शुरू हो गई है कि आखिर अखिलेश यादव को अब अयोध्या की याद क्यों आई?

अयोध्या केवल एक धार्मिक नगरी नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आस्था और सनातन संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र है। वर्षों के संघर्ष और लंबे न्यायिक विवाद के बाद यहां भव्य राम मंदिर का निर्माण हुआ। जनवरी 2024 में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या की पहचान विश्व स्तर पर स्थापित हुई। देश-विदेश से श्रद्धालु रामलला के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। मंदिर निर्माण ने भारतीय संस्कृति, आस्था और धार्मिक पर्यटन को नई पहचान दी है।

लेकिन इस ऐतिहासिक घटनाक्रम के बीच समाजवादी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की मंदिर से दूरी लगातार राजनीतिक चर्चा का विषय बनी रही। भारतीय जनता पार्टी के नेता इस मुद्दे पर अखिलेश यादव और उनकी पार्टी को घेरते रहे हैं। भाजपा का आरोप रहा है कि समाजवादी पार्टी ने अपने राजनीतिक समीकरणों के कारण राम मंदिर आंदोलन और हिंदुत्व के मुद्दे पर स्पष्ट रुख अपनाने से परहेज किया। दूसरी ओर अखिलेश यादव भाजपा पर धर्म के राजनीतिक इस्तेमाल का आरोप लगाते रहे हैं। उनका कहना रहा है कि धर्म व्यक्तिगत आस्था का विषय है और राजनीति में इसका इस्तेमाल नहीं होना चाहिए।

इस पूरे विवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वर्ष 1990 की अयोध्या की घटना से जुड़ी है। उस समय उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे। राम जन्मभूमि आंदोलन के दौरान अयोध्या पहुंचे कारसेवकों पर पुलिस ने गोली चलाई थी। इस घटना ने देश की राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला। भाजपा और राम मंदिर आंदोलन से जुड़े संगठन आज भी इस घटना को समाजवादी पार्टी के राजनीतिक इतिहास से जोड़कर उठाते हैं। मुलायम सिंह यादव के उस समय के फैसले को लेकर राजनीतिक दलों के बीच मतभेद और आरोप-प्रत्यारोप जारी हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दीपोत्सव के अवसर पर अखिलेश यादव की प्रस्तावित अयोध्या यात्रा पर निशाना साधते हुए कहा कि रामभक्तों और संतों पर लाठीचार्ज तथा कारसेवकों पर गोली चलाने वालों को अयोध्या आने से पहले रामभक्तों से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवान राम दयालु हैं और सभी को क्षमा कर देते हैं, लेकिन सत्ता का अहंकार समाप्त करने में भी देर नहीं लगाते। मुख्यमंत्री ने अखिलेश यादव का नाम सीधे नहीं लिया, लेकिन उनके बयान को समाजवादी पार्टी की ओर संकेत माना गया।

दूसरी ओर समाजवादी पार्टी इस यात्रा को धार्मिक आस्था और व्यक्तिगत श्रद्धा से जोड़कर देख रही है। पार्टी की ओर से बताया गया है कि अखिलेश यादव परिवार के साथ पहले हनुमानगढ़ी में दर्शन करेंगे और फिर रामलला के दरबार में पहुंचेंगे। अयोध्या के संतों से मुलाकात और उनका आशीर्वाद लेने का कार्यक्रम भी प्रस्तावित है। अखिलेश यादव पहले भी कह चुके हैं कि वे इटावा में समाजवादी पार्टी की ओर से बनवाए जा रहे केदारेश्वर धाम के निर्माण के बाद राम मंदिर जाएंगे। अब उनकी यात्रा की तारीख घोषित होने के बाद राजनीतिक चर्चाएं तेज हो गई हैं।

दिपावली की महालक्ष्मी ने भारत पर बरसाया कुबेर का खजाना !

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं

डॉलर पस्त रुपये की ऐतिहासिक छलांग, सात महीने के शिखर पर! शेयर बाजार में 35 साल का महा-रिकॉर्ड!

निवेशकों की दौलत में ?29.57 लाख करोड़ का महा-इजाफा! ड्रैगन के पड़ोसी देशों के शेयर बाजारों में तबाही, भारत में विदेशी निवेश की सुनामी - दिवाली की रात भारत की किस्मत का महापलट! - समग्र व्यापक महा-विश्लेषण

दिपावली 2026 ने बदल दिया दुनियाँ के निवेश का नक्शा! ताइवान-कोरिया से निकली अरबों की पूंजी भारत में बरसी,दिवाली पर मां लक्ष्मी की ऐसी कृपा कि 7 दिनों में निवेशकों की दौलत ?29.57 लाख करोड़ बढ़ी,डॉलर पस्त रुपये की महाछलांग और सेंसेक्स-निफ्टी में ऐतिहासिक महातेजी!

दिपावली के अगले दिन भारत पर धनवर्षा का महाविस्फोट!विदेशी निवेशकों ने बदला अपना वैश्विक ठिकाना, चीन के पड़ोसियों को झटका,रुपये की सात महीने की छलांग और भारतीय बाजार में ऐतिहासिक जश्न!

भारत की दीपावली इस वर्ष केवल दीपों, आतिश बाजी, खुशियों और मां लक्ष्मी की आराधना तक सीमित नहीं रही,बल्कि देश की अर्थव्यवस्था के लिए भी एक बेहद शुभ आर्थिक संदेश लेकर आई है।दीपावली के आसपास भारतीय शेयर बाजार में आई ऐतिहासिक तेजी विदेशी निवेशकों की जबरदस्त वापसी,कच्चे तेल की कीमतों में भारीगिरावट और अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये की मजबूत वापसी ने अंतरराष्ट्रीय आर्थिक जगत का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया है।एक ओर एशिया के प्रमुख प्रौद्योगिकी बाजारों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़ी कंपनियोंके शेयरों में भारी बिकवाली ने निवेशकों की चिंता बढ़ाई,वहीं दूसरी ओर भारतीय बाजार ने इस वैश्विक उथल-पुथल के बीच अपनी अलग पहचान बनाई। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह बताना चाहूंगा कि विदेशी पूंजी का भारत की ओर रुख करना इस बात का संकेत है कि वैश्विक निवेशक अब भारत की विकास संभावनाओं, कंपनियों की कमाई और बाजार के मूल्यांकन को नए दृष्टिकोण से देख रहे हैं।ऐसा प्रतीत हो रहा है मानो दीपावली की शुभ रात्रि में मां महालक्ष्मी की कृपा ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक नई ऊर्जा प्रदान की हो। हालांकि,इस तेजी को स्थायी आर्थिक विजय मानने के बजाय इसके पीछे काम कर रहे वास्तविक आर्थिक कारकों को समझना भी उतना ही आवश्यक है।यह लेख निवेश सलाह नहीं, बल्कि आर्थिक घटनाक्रम का सटीकता से विश्लेषण है।

साथियों बात अगर हम डॉलर की अकड़ कमजोर, भारतीय रुपये ने लगाई सात महीने की छलांग! को समझने की करें तो दीपावली के बाद 9 नवंबर 2026 को भारतीय मुद्रा बाजार से भी उत्साहजनक खबर सामने आई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपये ने शुरुआती कारोबार में 24 पैसे की मजबूती हासिल करते हुए 93.74 रुपये प्रति डॉलर का स्तर छू लिया। यह लगभग सात महीने का उच्चतम स्तर बताया गया। इससे पहले शुक्रवार को रुपया 93.98 रुपये प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। रुपये की इस मजबूती के पीछे केवल डॉलर की कमजोरी नहीं, बल्कि कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट, विदेशी निवेशकों की वापसी और पश्चिम एशिया में तनाव कम होने की उम्मीदों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत जैसे देश के लिए रुपये की मजबूती का विशेष महत्व है, क्योंकि भारत अपनी जरूरत का लगभग 90 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करताहै।जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होता है, तब भारत को आयात के लिए अधिक डॉलर खर्च करने पड़ते हैं।इससे विदेशी मुद्रा भंडार, चालू खाते के घाटे और रुपये पर दबाव बढ़ सकता है।इसके विपरीत कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट से भारत का आयात बिल कम करने में सहायता मिलती है।इसलिए रुपये की मौजूदा मजबूती को भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जा सकता है। फिर भी यह समझना आवश्यक है कि 93.74 का स्तर पिछलेमहीनों की तुलना में सुधार है, रुपये की ऐतिहासिक रूप से मजबूत स्थिति नहीं। असली चुनौती इस सुधार को लंबे समय तक बनाए रखने की होगी।

साथियों बात अगर हम ड्रैगनके पड़ोसियों में बेचैनी, भारत के बाजार में विदेशी पूंजी की बरसात! को समझने की करें तो इस आर्थिक घटनाक्रम का सबसे महत्वपूर्ण पहलू विदेशी निवेशकों की बदली हुई रणनीति है। पिछले कुछ समय से विदेशी निवेशकों की पूंजी का बड़ा हिस्सा अमेरिका तथा एशिया के प्रौद्योगिकी आधारित बाजारों की ओर जा रहा था। दक्षिण कोरिया और ताइवान जैसे देशों के शेयर बाजार कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिप निर्माण और तकनीकी कंपनियों से जुड़े निवेश के प्रमुख केंद्र बने हुए थे। लेकिन जब निवेशकों के मन में यह सवाल उठने लगा कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में कंपनियां जितना विशाल निवेश कर रही हैं, उसके अनुपात में भविष्य में कमाई कितनी होगी, तब वैश्विक बाजारों में मुनाफावसूली और बिकवाली का दबाव बढ़ गया।इसका असर दक्षिण कोरिया ताइवान और जापान के बाजारों पर भी दिखाई दिया।इसी बदले हुए वातावरण में भारत विदेशी निवेशकों के लिए एक आकर्षक विकल्प बनकर उभरा। बिजनेस स्टैंडर्ड की 6 नवंबर की रिपोर्ट के अनुसार, विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने पांच कारोबारी दिनों में भारतीय शेयरों में लगभग 45,960 करोड़ रुपये की शुद्ध खरीदारी की। यह आंकड़ा अक्टूबर में विदेशी निवेशकों की लगभग 45,162 करोड़ रुपये की शुद्ध बिकवाली से भी अधिक महत्वपूर्ण वापसी को दर्शाता है।इस घटनाक्रम का व्यापक संदेश यह है कि अंतरराष्ट्रीय पूंजी किसी एक देश की स्थायी संपत्ति नहीं होती, बल्कि वह बेहतर अवसर, संभावित लाभ और जोखिम के संतुलन की तलाश में लगातार अपना ठिकाना बदलती रहती है।

भारत को इस बदलाव का लाभ मिलता दिखाई दे रहा है।

साथियों बात अगर हम संवत 2083 का आर्थिकआगाज दलाल स्ट्रीट पर 35 वर्षों का ऐतिहासिक धमाका! को समझने की करें तो,भारतीय शेयर बाजार की दीपावली से पहले की तेजी ने इस बार इतिहास के पन्नों में अपना नाम दर्ज कराया है।सेंसेक्स और निफ्टी लगातार सात कारोबारी सत्रों तक बढ़त के साथ बंद हुए। इस सात दिवसीय तेजी में सेंसेक्स लगभग 10.6 प्रतिशत यानी 7,782 अंक चढ़ा,जबकि निफ्टी में लगभग 10.27 प्रतिशत की बढ़त दर्ज की गई।पिछले 35 वर्षों में दीपावली से पहले इतनी बड़ी सात सत्रों की तेजी देखने को नहीं मिली थी। 6 नवंबर को सेंसेक्स 81,028.02 और निफ्टी 25,030.35 पर बंद हुआ। दोनों प्रमुख सूचकांकों ने 80,000 और 25,000 के महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक स्तरों को पार किया। इस तेजी के दौरान बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण लगभग 29.57 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 503.11 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया। इसका अर्थ है कि निवेशकों की संपत्ति में एक सप्ताह के भीतर भारी वृद्धि हुई। वहीं 9 नवंबर को कारोबार समाप्त होने पर रॉयटर्स के अनुसार निफ्टी 50 लगभग 25,044.65 और सेंसेक्स 81,106.65 पर बंद हुआ। दोनों सूचकांक 27 फरवरी के बाद अपने सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचे। इस प्रकार दीपावली के आसपास भारतीय बाजारों में उत्साह का सटीकता से वातावरण बना रहा। साथियों बात अगर हमभारत के पक्ष में काम कर रहे हैं तीन बड़े आर्थिक महाफैक्टर!को समझने की करें तो भारत की इस आर्थिक चमक के पीछे तीन प्रमुख कारक दिखाई दे रहे हैं।

बनें आंकड़ों के जादूगर

अगर आप पेशेवर तौर पर आंकड़ों को जानने-समझने में दिलचस्पी रखते हैं और आपको प्रोग्रामिंग की अच्छी समझ है तो डेटा एनालिस्ट के रूप में अपने करियर को एक नया आयाम दे सकते हैं।

क्या करते हैं डेटा एनालिस्ट

डेटा एनालिस्ट उन पेशेवरों को कहा जाता है, जिनके पास प्रोग्रामिंग, स्टैटिस्टिक्स, एप्लायड मैथमेटिक्स और कंप्यूटर की अच्छी जानकारी होती है। ये डेटा को अच्छी तरह से देख-परखकर अहम जानकारियों को खंगालते हैं। डेटा स्टोर करने वाली कंपनियां जैसे गूगल, अमेजन, माइक्रोसॉफ्ट, इबे, लिंक्डइन, फेसबुक, ट्विटर आदि को सबसे अधिक डेटा एनालिस्ट की जरूरत पड़ती है। यदि किसी कंपनी के बिजनेस में गिरावट आ रही है तो ये उसके सर्वर पर मौजूद डेटा का विश्लेषण करते हुए कंपनी को फायदे में पहुंचाने का तरीका तलाशते हैं। कई बार उन विश्लेषणों के आधार पर ये नए बिजनेस की योजना भी तैयार करते हैं।

उम्मीद जता रहे हैं आंकड़े

नास्कॉम की एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले वर्ष डेटा एनालिसिस इंडस्ट्री ने 23 अरब डॉलर का कारोबार किया। इस साल इसमें और अधिक बढ़त देखने को मिल रही है। इंटरनेशनल डेटा कॉरपोरेशन की एक रिपोर्ट के अनुसार, डेटा उत्पादन वर्ष 2020 तक बढ़कर करीब 40 जैटाबाइट हो जाएगा। इतने बड़े डेटा भंडार के लिए लगभग साढ़े सात लाख डेटा पेशेवरों की जरूरत पड़ेगी।

कब रख सकेंगे कदम

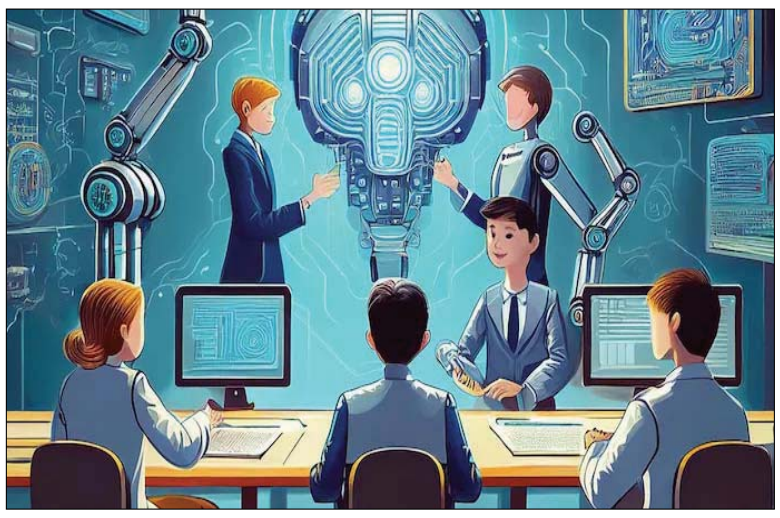
यदि कोई छात्र डेटा एनालिस्ट बनना चाहता हैं तो उसे 50 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक होना जरूरी है। कुछ ऐसे भी संस्थान हैं, जो मास्टर डिग्री के बाद एडवांस सर्टिफिकेट या पीजी डिप्लोमा में दाखिला देते हैं। इनमें मैथमेटिक्स, स्टैटिस्टिक्स, कंप्यूटर साइंस और अकाउंटिंग के छात्रों को वरीयता दी जाती है। डेटा एनालिसिस के कोर्स में मार्केट रिसर्च प्रोसेस, रिसर्च मेथड एवं डिजाइन, डेटा कलेक्शन प्रोसेस, डेटा एनालिसिस के टूल और डेटा एनालिसिस पर प्रमुखता से ध्यान रखा जाता है। इसमें छह माह से लेकर दो साल तक के कोर्स शामिल हैं।

मैथ्स व स्टैटिस्टिक्स पर पकड़ जरूरी

डेटा एनालिस्ट का काम जिम्मेदारी भरा होता है, क्योंकि बिजनेस में आए उतार-चढ़ाव को डेटा के जरिए सुलझाने का जिम्मा इन्हीं का होता है। जिन पेशेवरों की मैथमेटिक्स और स्टैटिस्टिक्स पर बेहतर पकड़ है और जो प्रोग्रामिंग की अच्छी समझ रखते हैं, वे इस क्षेत्र में ऊंचा मुकाम हासिल कर सकते हैं। इसके अलावा उनके अंदर टीम भावना, प्रभावी संचार कौशल, लंबे समय तक काम करने की क्षमता, धैर्य, तार्किक ढंग से सोचने की क्षमता, बिजनेस ट्रेंड की जानकारी जैसे गुण होने जरूरी हैं। इससे करियर में आगे बढ़ना आसान हो जाता है।

अब स्कूली छात्र भी कर सकेंगे एआई कोर्स आईआईटी व स्किल इंडिया पर बेहतरीन मौके

आजकल स्टूडेंट्स के बीच एआई सर्टिफिकेट कोर्सेज की मांग काफी बढ़ रही है। असल में, एआई के तेजी के विकास के साथ इसमें नौकरी के मौके बढ़े हैं और इस विषय के प्रति स्टूडेंट्स का भी रुझान बढ़ा है। पहले स्नातक छात्रों के बीच एआई कोर्स लोकप्रिय थे, लेकिन अब यह कोर्स स्कूल के छात्रों के बीच भी काफी लोकप्रिय हो रहे हैं। ऐसे में अगर आप भी एआई कोर्स करके अपनी रचनात्मकता और कौशल को बढ़ाना चाहते हैं, तो आप कुछ प्रतिष्ठित संस्थानों के अलावा ऑनलाइन पोर्टल से भी एआई में सर्टिफिकेट या डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं। इन कोर्स को करने से न सिर्फ आपको नौकरी के बेहतरीन अवसर मिलेंगे, बल्कि आपको अच्छी सैलरी वाली नौकरी भी मिल सकती है।



आईआईटी हैदराबाद

अगर आप भी एआई में इंट्रेस्टेड हैं, तो आप आईआईटी हैदराबाद से 12वीं के बाद बीटेक इन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कोर्स में एडमिशन ले सकते हैं। यह कोर्स आपको ¿ड्ड की बारीकियों के बारे में बताएगा। चार साल के इस कोर्स को करने के बाद आप किसी भी संस्थान के साथ अपने कॅरियर की शुरूआत कर सकते हैं।

आईआईटी मंडी

अगर आप भी एआई के क्षेत्र में अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाना चाहते हैं। तो आप ग्रेजुएशन के बाद आईआईटी मंडी से डेटा साइंस एंड एआई कोर्स में दाखिला ले सकते हैं। यह दो साल का कोर्स चार सेमेस्टर का है। ऐसे में आप भी इस कोर्स में शामिल होकर न सिर्फ आपको एआई तकनीकी से अवगत कराया जाएगा, बल्कि आपकी कम्यूनिकेशन स्किल्स को भी बेहतर बनाने का काम किया जाएगा।

स्किल इंडिया प्लेटफॉर्म

अगर आप 12वीं के छात्र हैं और एआई कोर्स करना चाहते हैं, तो आप स्वयं पोर्टल के अलावा स्किल इंडिया से से भी एआई कोर्स कर सकते हैं। इसके साथ ही हार्वर्ड, कोर्सेरा और स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी के ऑनलाइन कोर्स भी शामिल होते हैं। इन सभी ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर एआई और एमएल कोर्स भी फ्री में मिलेंगे। साथ ही इन कोर्स को करने के बाद आप ऑनलाइन सर्टिफिकेट भी प्राप्त कर सकते हैं।

कॅरियर में ठहराव महसूस हो रहा, इन रणनीतियों से दूर करें तनाव

कभी-कभी हमें अपने कॅरियर के शुरूआती या मध्य पड़ाव पर हमें ऐसा महसूस होता है कि हम अटक गए हैं। लेकिन अगर आपके साथ भी कुछ ऐसी स्थिति है, तो आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। क्योंकि ऐसा महसूस करने वाले आप अकेले नहीं हैं, बल्कि आजकल कई पेशेवर इस समस्या का सामना कर रहे हैं। आंकड़ों की मानें, तो 60 फीसदी कर्मचारी अपनी नौकरी से भावनात्मक रूप से कट चुके हैं। आज का 40 फीसदी युवा सिर्फ 2 साल में नौकरी बदलने का मन बना लेते हैं। भले ही यह आम बात है, लेकिन जब ऐसा आपके साथ होता है, तो इसको झेलना आसान नहीं होता है। लेकिन ऐसी स्थिति में ध्यान रखना चाहिए कि यह सिर्फ एक मानसिक स्थिति है। इसलिए आपको घबराना नहीं चाहिए। बल्कि आप सही रणनीति और सही सोच के साथ इससे उबर सकते हैं।



खुद की पीठ को थपथपाएं

अपने कॅरियर के लिए मेहनत, समय, पैसा और शिक्षा में भारी निवेश किया है और नेटवर्क में भी अपनी साख बनाई है। इसके लिए सबसे पहले खुद की पीठ को थपथपाएं। फिर यह सोचें कि क्या आप सही दिशा में जा रहे हैं, अगर आपका जवाब नहीं है और आप सिर्फ वर्तमान भूमिका में सुरक्षा के लिए है। तो आपको यह भी याद रखना चाहिए कि नौकरी में गारंटी जैसी कोई चीज नहीं होती है। आपको असली संतुष्टि मिलेगी, जब आप वह काम करेंगे, जो आप सच में करना चाहते हैं। इसलिए बगैर चिंता किए नए ऑप्शन की तलाश करें।

बदलाव का जुनून

अगर आप इनोवेशन या स्टार्टअप के क्षेत्र में कदम रखना चाहते हैं, तो यही समय नौकरी बदलने के लिए सही होगा। क्योंकि आप युवा हैं, तो ऐसे में आपकी सबसे बड़ी ताकत नवाचार, जोखिम उठाने की क्षमता और उत्साह है। आपके अंदर बदलाव लाने का जज्बा होना चाहिए। वहीं कंपनियां भी ऐसे हुनर तलाशती हैं, जिनके पास बदलाव और नए कौशल लाने का जुनून हो। आप चाहें तो अपना स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं या फिर नए कौशल सीखने पर भी जोर दे सकते हैं।

सैटिंग, बैटिंग और रेटिंग

हज़ारों साल से पूरी दुनिया जानती है कि हम अपना सभी आकार और प्रकार का कामकाज अपनी पसंद की शैली में करते हैं। माहौल खुश रहे इसलिए हम अपनी सैटिंग, बैटिंग और रेटिंग भी खुद किया करते हैं। दूसरा रेटिंग करने वाला चाहे कितना शानदार, जानदार और ईनामदार हो हम रेटिंग स्वीकार नहीं करते। रेटिंग एजेंसी अंतर्राष्ट्रीय हो, उसका नाम कितना भी आकर्षक हो। हम मानते हैं इन संस्थाओं द्वारा रेटिंग अपनी सुविधा के लिए की जाती है और हमारे लिए दुविधा खड़ी हो जाती है।



हमें पता है खुद को यशस्वी, अनुभवी, तेज तर्रार मानने वालों से सही अनुमान नहीं लगता और हर दो तीन महीने में अनुमान बदलते रहते हैं। उसे घटाते ज्यादा हैं और बढाते कम हैं। अपना वक़्त बर्बाद करते रहते हैं हमारा मूड बिगाड़ते हैं। अंदाजा कुछ लगाते हैं परिणाम कुछ और निकालते हैं। विश्वगुरुओं यानि हमारी रेटिंग करने के सन्दर्भ में इस तरह से काम करना अच्छी बात नहीं है। उन्हें अभी तक समझ नहीं आया कि सैटिंग, बैटिंग और रेटिंग हमारी अपनी होती है। उनकी दी हुई रेटिंग भुलाकर हम यह ध्यान रखते हैं कि हमारी सारी वोटें सलामत रहें, जातीय समीकरण बिगड़ें नहीं। उदाहरणतया पारदर्शिता के अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों ने गुरुओं को ईमानदारी के पैमाने पर मनमाने अंक दिए हैं। हम क्यूं खाएं उनका बेस्वाद आकलन। उन्हें पता होना चाहिए कि हमें पसंद नहीं आएगा, स्वीकारेंगे नहीं तो ऐसा आकलन किया ही क्यूं। ज्ञानी हैं हम, इस बारे हम दो क्या तीन राय भी नहीं रखते। इस बारे दिलचस्प परिचर्चा हो सकती है कि नैतिक मूल्य सिखाए जा सकते हैं या नहीं। हमारे यहां नैतिकता एक पवित्र संस्था के रूप में स्थापित है इसलिए नैतिकता क्या किसी भी किस्म के मूल्य सिखाए जा सकते हैं। पेट से तो कोई भी सीख कर नहीं आता। हमारी सैटिंग, बैटिंग और रेटिंग इतनी अनुभवी होती है कि हमने कूड़ा कचरा प्रबंधन बेहतर तरीके से सीखने के लिए, दर्जनों लोगों की टीम को हज़ारों किलोमीटर दूर भेजा अब यह तो बदतमीज़ कूड़ा कचरा शातिर है कि काबू में नहीं आता। वर्तमान युग के परिवेश में भ्रष्टाचार, बेईमानी, दुष्टता व धूर्तता के कारण थोड़ी बहुत परेशानी तो है लेकिन हमारी सैटिंग कहीं कोई फर्क पड़ने नहीं देती, हम मानकर चलते हैं कि बैटिंग ठीक चल रही है इसलिए कोई दूसरा हमारे कामकाज की रेटिंग क्यूं करे। वैसे वास्तव में हम हमेशा चाहते हैं कि हमारी रेटिंग कोई ज़रूर करे लेकिन आंख मींच कर सौ में से दो सौ नंबर दे। यहां यह सवाल प्रवेश करता है क्या त्रेतायुग में रावण नहीं था। क्या वे अपने बारे में किसी भी तरह की रेटिंग की परवाह करते थे। हर युग का कठोर सत्य यही है इसलिए अपनी सैटिंग बैटिंग रेटिंग का प्रबंधन खुद करते रहना चाहिए करिए यही सुखी रहने का सूत्र है।

करियर का चुनाव करते समय इन बातों पर दें ध्यान



किसी छात्र के करियर चुनने में कई बातें अहम होती हैं। उदाहरण के लिए उसे कौन-सा काम पसंद है, किस काम में वह अच्छा है, कमाई कितनी होगी, किस नौकरी में अवसर ज्यादा है, उसकी सामाजिक आकांक्षाएं क्या हैं, आदि। इसके अलावा, दोस्त क्या कर रहे हैं, यह भी करियर चुनते वक्त एक मनोवैज्ञानिक दबाव के रूप में कार्य करता है। परिवार वाले क्या चाहते हैं, यह भी एक महत्वपूर्ण कारक होता है। आज के युवा समाज में सकारात्मक योगदान दे पाने की संतुष्टि पाना चाहते हैं। साथ में सामाजिक प्रतिष्ठा, पहचान, रचनात्मक स्वतंत्रता, जॉब सिक्योरिटी आदि पर भी जोर देते हैं।

ठीक से सोचें-विचारें

बहुत सारे छात्रों को बहुत लंबे अर्से तक यही पता नहीं चल पाता कि वे किस काम को अच्छी तरह कर सकते हैं। दरअसल किसी करियर का चुनाव और उसमें सफलता छात्र की अपनी विचार-प्रक्रिया पर भी काफी हद तक निर्भर करती है। इसलिए करियर का चुनाव करने से पहले सारे पहलुओं पर सही तरीके से सोच-विचार किया जाए कि हमें क्या करना है।.

अपने व्यक्तित्व को निखारें

किसी भी क्षेत्र के लिए जरूरी योग्यताएं उस क्षेत्र में करियर बनाने का रास्ता तैयार करती हैं। लेकिन एक स्तर के बाद आपके व्यक्तित्व की खासियतें जैसे रचनात्मक सोच, सकारात्मकता, बातचीत की कला आदि काम आते हैं। इसलिए जरूरी योग्यता के अलावा व्यक्तित्व से जुड़ी खासियतों पर भी काम करें।.

प्रयास करना न छोड़ें

करियर के चुनाव को लेकर भ्रम की स्थिति में होना स्वाभाविक बात है। लेकिन, अपनी पढ़ाई जारी रखें, बुनियादी चीजों पर काम करते रहें। इस भ्रम की वजह से निराश होकर प्रयास करना मत छोड़िए।.

रोजगार के मौकों पर दें ध्यान

करियर का चुनाव करते वक्त उस क्षेत्र में रोजगार के मौकों को ध्यान में रखें। उसमें कितनी आमदनी हो सकती है, जॉब सिक्योरिटी कैसी है, आप उसमें कितना फिट हो पाएंगे, इस पर सोचें।

क्लाउड कंप्यूटिंग : सुरक्षा और भरोसे में बनाएं करियर

कंप्यूटर से लैपटॉप और अब मोबाइल तक में इंटरनेट के विविध प्रकार के प्रयोगों ने मानो एक नई क्रान्ति-सी ला दी है। अगर विश्व की कंप्यूटर क्षेत्र से सम्बद्ध जानी-मानी आईबीएम कम्पनी द्वारा जारी आंकड़ों की बात करें तो पता चलता है कि दुनिया भर में विकसित किये जाने वाले 85 प्रतिशत से अधिक कंप्यूटर/मोबाइल एप्लिकेशंस क्लाउड कंप्यूटिंग पर आधारित हैं। इसी प्रकार नास्डेक के अध्ययनों में बताया गया है कि इस वर्ष के अंत तक 40 मिलियन डॉलर से अधिक निवेश सिर्फ क्लाउड कंप्यूटिंग टेक्नोलॉजी पर किया जाना है।



क्या है क्लाउड कंप्यूटिंग

यह एक वास्तविकता है कि रोजमर्रा के जीवन से लेकर ऑफिस तक के कार्यकलापों में हम इंटरनेट पर पूरी तरह से आश्रित हो गए हैं। कंप्यूटर के बढ़ते इस्तेमाल और डिजिटाइजेशन की दिशा में बढ़ने के कारण विविध प्रकार के डाटा का भी वृहद् पैमाने पर सृजन हो रहा है। वैश्विक तौर पर ये डाटा ईमेल, टेक्स्ट या ऑडियो-विजुअल फॉर्मेट में अत्यंत तेज गति से सृजित हो रहे हैं। इस विशाल डाटा का भंडारण और रखरखाव इतना आसान नहीं है। किसी एक व्यक्ति के लिए ही नहीं, बल्कि कंपनियों तक के लिए यह बहुत ही जटिल और खर्चीला मामला हो जाता है। इसी समस्या का समाधान ढूंढने के प्रयास में क्लाउड कंप्यूटिंग की एक नई विधा अस्तित्व में आई है। बुनियादी तौर पर यह स्टेट ऑफ द आर्ट या अत्यंत उन्नत तकनीक है। मोटे तौर पर कहा जाए तो क्लाउड कंप्यूटिंग बड़े पैमाने पर वर्चुअल स्टोरेज की सुविधा प्रदान करती है, जिसे दुनिया के किसी भी कोने से एक्सेस किया जा सकता है।.

कैसा एप्टिट्यूड है जरूरी

इस प्रोफेशन में जाने वाले युवाओं के लिए आवश्यक है कि उनमें किसी भी तरह की समस्या का समाधान ढूंढ़ने का जुनून हो। टीम के अन्य सदस्यों के साथ वे न सिर्फ सम्मानजनक बर्ताव करें, बल्कि उनकी कम्युनिकेशन स्किल भी अच्छी होनी चाहिए। प्रोजेक्ट मैनेजमेंट की क्षमता तथा हमेशा लीक से हटकर, कुछ नया सोचने और कर दिखाने का जज्बा भी इस तरह के करियर में काफी मायने रखता है।.

शैक्षिक योग्यता

क्लाउड कंप्यूटिंग का प्रशिक्षण लेने के लिए सूचना तकनीक (आईटी) या कंप्यूटर साइंस का बैकग्राउंड होना आवश्यक है, ताकि प्रत्याशी के पास कंप्यूटर और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के बारे में प्रारम्भिक जानकारी हो। इस क्षेत्र में काम का अनुभव है तो फिर सोने पर सुहागा वाली बात होगी। ऐसी पृष्ठभूमि होने से सीखने में काफी आसानी हो जाती है। इस क्षेत्र में करियर बनाने के लिए पायथन और जावा कंप्यूटर लैंग्वेज की काफी उपयोगिता है।

प्रशिक्षण

देश-विदेश में बड़ी संख्या में निजी संस्थानों द्वारा क्लाउड कंप्यूटिंग पर आधारित कम अवधि और दीर्घ अवधि के प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इनमें माइक्रोसॉफ्ट द्वारा संचालित 'माइक्रोसॉफ्ट क्लाउड प्लेटफॉर्म एंड इन्फ्रास्ट्रक्चर%, 'सिस्को सर्टिफाइड नेटवर्क एसोसिएट क्लाउड%, 'गूगल सर्टिफाइड प्रोफेशनल आर्किटेक्ट% आदि का खासतौर पर जिक्र किया जा सकता है।

आईबीएम और आईआईटी, बेंगलुरु द्वारा भी ऐसे कुछ पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। कुछ निजी विश्वविद्यालयों द्वारा मास्टर डिग्री स्तर के पाठ्यक्रम भी आयोजित किये जा रहे हैं। यही नहीं, इस क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा ट्रेनिंग वर्कशॉप भी आयोजित की जाती हैं। इनकी फीस देकर ऐसी वर्कशॉप का भी लाभ उठाया जा सकता है। इस तरह की सूचनाएं और जानकारियां आमतौर पर इंटरनेट और सम्बंधित वेबसाइट के माध्यम से मिल सकती हैं। यहां यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक होगा कि अमूमन इस क्षेत्र की कंपनियां अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए भी अपने खर्च पर भेजती हैं।

रोजगार के अवसर

देश में क्लाउड सर्विस प्रदान करने वाली कंपनियों की कमी नहीं है। इनमें कई प्रकार की नौकरी के विकल्प मिल सकते हैं। क्लाउड कंप्यूटिंग की विधा में माहिर युवाओं को विविधतापूर्ण रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। इनमें क्लाउड कंप्यूटिंग इंजीनियर, क्लाउड आर्किटेक्ट, क्लाउड सपोर्ट इंजीनियर, क्लाउड सॉल्यूशन इंजीनियर, क्लाउड एडमिनिस्ट्रेटर, क्लाउड मैनेजमेंट प्रोफेशनल, आईटी सिस्टम्स एंड यूजर्स सपोर्ट, एप्लिकेशन डेवलपमेंट, बिजनेस एनालिसिस, नेटवर्क, सिक्योरिटी एंड वेब डेवलपमेंट आदि का जिक्र प्रमुख रूप से किया जा सकता है। इस विधा में काम का अनुभव रखने वाले लोगों को भारतीय कंपनियों के अलावा मल्टीनेशनल कंपनियों में भी नौकरियों के पर्याप्त अवसर मिल सकते हैं।

डिजिटल इंडिया

सरकारी तौर पर यह पहले ही एलान किया जा चुका है कि डिजिटल इंडिया के लिए 4.5 लाख करोड़ रुपए की धनराशि का प्रावधान किया गया है और इसके तहत 17 लाख नए रोजगार के अवसर सृजित किये जायेंगे। इस कार्यक्रम के अंतर्गत देश को डिजिटल रूप से सशक्त अर्थव्यवस्था के तौर पर रूपांतरित किया जाएगा। 2.5 लाख से अधिक गांवों को ब्रॉडबैंड के अंतर्गत लाया जाएगा। इसके अतिरिक्त इस योजना में देश के 100 से अधिक शहरों को स्मार्ट सिटी बनाने का भी प्रस्ताव है। क्लाउड कंप्यूटिंग की डिजिटल इंडिया के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। क्लाउड कंप्यूटिंग की टेक्नोलॉजी द्वारा सबसे अधिक लाभ देश के लघु उद्योगों को मिलने की उम्मीद है। इसका प्रभाव औद्योगिक विकास और नए रोजगार के सृजन में देखने को मिल सकता है।

कम्प्यूटर और आईटी के क्षेत्र में काफी नई उथल-पुथल देखने को मिली है। इंटरनेट के बढ़ते इस्तेमाल को इस शृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी के तौर पर चिह्नित किया जा सकता है। और क्लाउड कम्प्यूटिंग एक उभरता हुआ करियर है। करियर के बारे में विस्तार से बता रहे हैं काउंसलर अशोक सिंह.

कुछ प्रमुख पाठ्यक्रम

ईएमसी क्लाउड आर्किटेक्ट, आईबीएम सर्टिफाइड सॉल्यूशन आर्किटेक्ट, एचपी एक्सपर्ट वन क्लाउड सर्टिफिकेशन, सर्टिफिकेट ऑफ क्लाउड सिक्योरिटी नॉलेज, वीएम वेयर क्लाउड सर्टिफिकेशन, ईएमसी क्लाउड इन इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज सर्टिफिकेशन

प्रमुख संस्थान

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली.

(देश में कई जगह शाखाएं मौजूद).

एनआईआईटी

(देश में कई जगह शाखाएं मौजूद)

बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस, पिलानी

ऑफिस में काम नहीं देगा तनाव, इन बातों का रखें ध्यान

कभी न खत्म होने वाली काम की लिस्ट, हमेशा नई मांग करने वाला बॉस, वीकएंड में भी काम का बोझ, देर रात तक बॉस के मेल व मैसेज, हर वक्त डेडलाइन पूरा करने के लिए ईमेल में उभरते रिमाइंडर, क्या आपकी स्थिति भी कुछ ऐसी ही है तो इस परेशानी से निजात पाने के लिए आप क्या करती हैं लगातार तनाव में रहकर ज्यादा से ज्यादा काम करने की कोशिश करती हैं लंच किए बिना काम करती रहती हैं अगर आपका जवाब हां है तो आप गलत कर रही हैं। अगर आप इस समस्या का समाधान नहीं तलाशेंगी तो इससे आपकी कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है। इतना ही नहीं, इससे आपकी सेहत और निजी जीवन पर भी इसका बुरा असर पड़ सकता है।



समस्या को समझें

इस समस्या का निदान तभी संभव है, जब आप यह समझ लें कि आपको मदद की जरूरत है। अगर आप मदद नहीं लेंगी तो इससे आपकी समस्या बढ़ती जाएगी। एक बार जब आप अपनी समस्या समझ जाएंगी तो उसके समाधान पर काम करेंगी। अगर आप काम के दबाव में दबती चली जाएंगी तो इससे आपको कई गंभीर निजी व प्रोफेशनल समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। बेहतर होगा कि इससे पहले कि परिस्थितियां आपको बदल दें, आप खुद ही परिस्थितियों को बदल दें।

टाइम मैनेजमेंट भी जरूरी

समय का सही मैनेजमेंट आपके काम को आसान बनाने के साथ आपकी उत्पादकता को बेहतर बनाने में भी कारगर साबित होगा। समय रहते, सही तरीके से काम को पूरा करने की आदत डालें। अपने सभी कामों की लिस्ट बनाएं और उसके बाद उनमें से जो काम सबसे ज्यादा जरूरी हैं, उनकी लिस्ट बनाएं। जब आप प्राथमिकता के अनुरूप काम करना सीख लेंगी तो धीरे-धीरे ऑफिस में आप पर काम का दबाव भी कम महसूस होने लगेगा। अपने ईमेल को भी बेहतर तरीके से मैनेज करना सीखें। काम के दौरान थोड़ा समय निकालते हुए ईमेल के जवाब देने के साथ-साथ गैरजरूरी मेल को डिलीट करना कभी नहीं भूलें। देर तक ऑफिस में रुकने की गलती नहीं करें। एक टाइम पर एक ही काम निपटाएं।

ज्यादा नहीं, स्मार्ट तरीके से करें काम

मौजूदा वर्क कल्चर में ज्यादा मेहनत से नहीं, बल्कि स्मार्ट तरीके से काम करके ही सफलता हासिल की जा सकती है। कुछ शॉर्टकट अपनाकर ऑफिस में आप अपना वक्त बचा सकती हैं। जैसे कि मोबाइल में ऑटोमैटिक रिस्पॉन्स मैसेज ऑन रखें। ऐसा करने से आपका समय भी बचेगा और आपको फोन करने वाले को समय रहते आपका जवाब भी मिल जाएगा। सारी जिम्मेदारी खुद पूरी करने की जगह काम को बांटना सीखें। मदद मांगने में हिचकिचाएं नहीं। टेक्नोलॉजी का सही इस्तेमाल सीखें ।

रेल यात्रियों के लिए अलर्ट

तड़के 3 से सुबह 6 बजे के बीच सबसे ज्यादा होती हैं चोरियां



नई दिल्ली। ट्रेन में सफर के दौरान सामान चोरी होने का खतरा सबसे अधिक रात के आखिरी पहर में रहता है। भोपाल जीआरपी को मिली शिकायतों के विश्लेषण में सामने आया है कि ट्रेनों में सबसे ज्यादा चोरियां तड़के 3 से सुबह 6 बजे के बीच होती हैं। इस दौरान अधिकांश यात्री गहरी नींद में होते हैं और चोर इसका फायदा उठाते हैं।

तीन घंटे में हुई चोरी की आधे से ज्यादा वारदात

भोपाल जीआरपी के आंकड़ों के अनुसार, 1 जनवरी से 27 अक्टूबर 2026 तक ट्रेनों में चोरी के 2198 मामले दर्ज हुए। इनमें से 1230 घटनाएं सुबह 3 से 6 बजे के बीच हुईं। रात 12 से 3 बजे के बीच 968, रात 9 से 12 बजे के बीच 486 और दोपहर 3 से शाम 6 बजे के दौरान 469 चोरी की घटनाएं दर्ज की गईं। कोच के हिसाब से स्लीपर श्रेणी में सबसे अधिक 1414 चोरी की घटनाएं सामने आईं। जनरल कोच में 1383 और एसी कोच में 1049 मामले दर्ज किए गए। वहीं दिव्यांग कोच में 14 और महिला कोच में चोरी की चार घटनाएं हुईं।

सफर के दौरान इन बातों का रखें ध्यान

आंकड़ों के अनुसार, यात्रियों को खासकर अलसुबह अपने सामान की सुरक्षा को लेकर सतर्क रहने की जरूरत है। मोबाइल और पर्स को शर्ट की जेब या पैंट की पिछली जेब में रखने से बचें। सोते समय बैग को सुरक्षित तरीके से बांधकर रखें और कीमती सामान अपने पास रखें। भीड़भाड़ वाले स्टेशनों और ट्रेन में चढ़ते-उतरते समय भी विशेष सावधानी बरतें।

अनंत सिंह की बेटी की शादी में जुटेंगे 3 से 4 लाख मेहमान, घुड़दौड़ के विजेता को मिलेगी थार

पटना। बिहार के मोकामा से विधायक अनंत सिंह की बेटी शिवांगी सिंह की 25 नवंबर को होने वाली शादी इन दिनों चर्चा का विषय बनी हुई है। शादी समारोह को यादगार और भव्य बनाने के लिए पटना जिले के लदमा (नदवां) स्थित उनके पैतृक गांव में बड़े स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। समारोह में 3 से 4 लाख लोगों के पहुंचने का अनुमान है। मेहमानों के स्वागत और आयोजन की व्यवस्थाओं के लिए कई एकड़ जमीन पर पंडाल तैयार किए जा रहे हैं। वहीं, शादी का मुख्य आकर्षण घुड़दौड़ प्रतियोगिता होगी, जिसके लिए विशेष ट्रैक बनाया जा रहा है।

आयोजन समिति के अनुसार, घुड़दौड़ के लिए कई एकड़ में ट्रैक तैयार किया जा रहा है, जिस पर एक साथ 15 घोड़े दौड़ सकेंगे। प्रतियोगिता में देश के अलग-अलग राज्यों से घोड़े और उनके मालिक हिस्सा लेने पहुंचेंगे। अनंत सिंह के निजी अस्तबल में मौजूद कई घोड़ों को भी प्रतियोगिता में उतारा जाएगा। आयोजन को लेकर आसपास के इलाकों में भी उत्सुकता बनी हुई है। प्रतियोगिता में विजेताओं के लिए आकर्षक पुरस्कार रखे गए हैं। पहले स्थान पर आने वाले घोड़े के मालिक को थार गाड़ी दी जाएगी, जबकि दूसरे स्थान के विजेता को



मोटरसाइकिल और तीसरे स्थान पर रहने वाले को स्कूटी पुरस्कार स्वरूप मिलेगी। इस आयोजन में पूर्व भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह का चर्चित घोड़ा भी शामिल हो सकता है। उसकी संभावित भागीदारी को लेकर भी चर्चा हो रही है।

शादी समारोह में बड़ी संख्या में मेहमानों के पहुंचने की संभावना को देखते हुए आयोजन स्थल पर व्यापक इंतजाम किए जा रहे हैं। कई एकड़ में बनने वाले पंडाल और घुड़दौड़ ट्रैक के चलते यह शादी केवल पारिवारिक समारोह तक सीमित न रहकर बड़े सार्वजनिक आयोजन का रूप लेती दिखाई दे रही है। 25 नवंबर को होने वाले इस समारोह पर बिहार के साथ-साथ दूसरे राज्यों के लोगों की भी नजर रहेगी।

खराब सेवा रिकॉर्ड पर सरकारी कर्मचारियों की अनिवार्य सेवानिवृत्ति बरकरार, सुप्रीम कोर्ट की अहम टिप्पणी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने खराब सेवा रिकॉर्ड के आधार पर दो सरकारी कर्मचारियों को दी गई अनिवार्य सेवानिवृत्ति को बरकरार रखा है। अदालत ने कहा कि सरकार को कर्मचारियों की अनिवार्य सेवानिवृत्ति देने का व्यापक अधिकार है, लेकिन इसका इस्तेमाल ईमानदारी और ठोस तथ्यों के आधार पर होना चाहिए। ऐसे आदेश को केवल समानता के आधार पर चुनौती नहीं दी जा सकती।

जस्टिस मनमोहन और जस्टिस श्री चंद्रशेखर की पीठ ने छत्तीसगढ़ के विधि माप विभाग के दो कर्मचारियों चतुर सिंह ध्रुव और मनहरण लाल साहू की अपील खारिज कर दी। दोनों को वर्ष 2017 में अनिवार्य रूप से सेवानिवृत्त किया गया था। दोनों कर्मचारियों की नियुक्ति वर्ष 1989 और 1993 में चपरासी के पद पर हुई थी। बाद में उन्हें सहायक ग्रेड-3 के पद पर पदोन्नति मिली और वर्ष 2015 में सेवाएं नियमित हुईं।

वर्ष 2017 में छत्तीसगढ़ सरकार ने 50 वर्ष की आयु पूरी करने या 20 साल की अर्हकारी सेवा करने वाले कर्मचारियों के सेवा रिकॉर्ड की समीक्षा के निर्देश दिए थे। इसमें ईमानदारी, कार्यक्षमता, प्रतिष्ठा, शारीरिक क्षमता और पिछले पांच वर्षों के प्रदर्शन को आधार बनाया गया। समीक्षा के लिए गठित समिति ने 14 लिपिकीय कर्मचारियों में से पांच की अनिवार्य सेवानिवृत्ति की सिफारिश की थी। इसके बाद दोनों कर्मचारियों को छत्तीसगढ़ सिविल सेवा (पेंशन) नियमों के तहत सेवानिवृत्त कर दिया गया।

झूठे आपराधिक आरोप लगाकर पति को परेशान करना मानसिक क्रूरता, 23 साल पुरानी शादी खत्म

जयपुर। पति पर गंभीर आपराधिक आरोप लगाकर एफआईआर दर्ज कराना और लंबे समय तक मानसिक रूप से प्रताड़ित करना तलाक का आधार बन सकता है। जयपुर फैमिली कोर्ट-4 ने एक मामले में इसे मानसिक क्रूरता मानते हुए 23 साल पुरानी शादी समाप्त कर पति के पक्ष में तलाक की डिक्री जारी की है। न्यायाधीश प्रियंका पिलानिया ने 2 नवंबर को यह फैसला सुनाया।

10 साल पुराने मामलों में दर्ज कराई एफआईआर

अदालत के अनुसार, पत्नी पेशे से वकील होने के बावजूद पति को परेशान करने के लिए अप्राकृतिक संबंध बनाने जैसे गंभीर आरोपों को लेकर एफआईआर दर्ज कराई। कोर्ट ने बिना ठोस आधार लगाए गए इन आरोपों को मानसिक क्रूरता माना। इसके अलावा पत्नी वर्ष 2006 से पति से अलग रह रही थी। पति को अपमानित करना और गंभीर आपराधिक मामलों में फंसाना भी तलाक का आधार बना।

क्षमता से अधिक कमाई की अपेक्षा भी क्रूरता

अदालत ने कहा कि हर व्यक्ति की कार्यक्षमता और हुनर अलग होता है। पत्नी का लगातार पति से उसकी क्षमता से अधिक कमाई की अपेक्षा करना और ताने देकर



अपमानित करना भी मानसिक क्रूरता है। पत्नी ने एक मामले में पति पर बेरोजगार रहने और शराब पीने का आरोप लगाया, जबकि दूसरे मामले में उसके कोचिंग चलाकर एक लाख रुपये मासिक कमाने की बात कही। कोर्ट ने इन विरोधाभासी बयानों को भी संज्ञान में लिया।

पत्नी की स्वतंत्रता को क्रूरता नहीं माना

हालांकि, अदालत ने पति के सभी आरोपों को स्वीकार नहीं किया। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि उच्च शिक्षित महिला का आरजेएस परीक्षा की तैयारी करना, अपनी पसंद से जीवन जीना और व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनाए रखना मानसिक क्रूरता नहीं है। महिला से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह पढ़ाई छोड़कर केवल घरेलू कामकाज या सास की देखभाल करे। अदालत ने व्यक्तिगत गरिमा और स्वतंत्रता के अधिकार को भी महत्व दिया।

चलती ट्रेन के साथ घिसटती रही महिला, आरपीएफ कांस्टेबल ने दौड़कर बचाई जान

अजमेर। राजस्थान के किशनगढ़ रेलवे स्टेशन पर आरपीएफ कांस्टेबल की तत्परता से एक महिला की जान बच गई। जयपुर-उदयपुर ट्रेन से उतरते समय महिला का पैर प्लेटफॉर्म और ट्रेन के पायदान के बीच फंस गया। इसी दौरान ट्रेन चल पड़ी और महिला उसके साथ प्लेटफॉर्म पर घिसटने लगी। महिला की चीख-पुकार सुनकर स्टेशन पर मौजूद यात्रियों में अफरा-तफरी मच गई। ड्यूटी पर तैनात आरपीएफ कांस्टेबल निरंजन लाल ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए तुरंत दौड़ लगा दी। उन्होंने यात्रियों की मदद से महिला को ट्रेन से अलग कर सुरक्षित बाहर निकाला। कांस्टेबल की सूझबूझ और समय पर की गई कार्रवाई से बड़ा हादसा टल गया। पूरी घटना स्टेशन पर लगे सीसीटीवी कैमरों में कैद हो गई।

हादसे में सरगांव रोड, वार्ड नंबर 52 निवासी सोनू कुमावत के पैर में गंभीर चोट आई है। उन्हें उपचार के लिए राजकीय अस्पताल पहुंचाया गया। घटना के बाद यात्रियों ने आरपीएफ कांस्टेबल निरंजन लाल की तत्परता और साहस की सराहना की।

प्रदूषण का असर अब रोजमर्रा की जिंदगी पर, स्वस्थ लोग भी गले और आंखों की जलन से परेशान

एम्स विशेषज्ञ ने चेताया- जहरीली हवा के लंबे संपर्क के गंभीर परिणाम हो सकते हैं, ग्रीन पटाखे भी प्रदूषण से पूरी राहत देने में नाकाम

नई दिल्ली। वायु प्रदूषण अब केवल सांस के मरीजों की समस्या नहीं रह गया है। दिल्ली-एनसीआर में जहरीली हवा का असर स्वस्थ लोगों की सेहत पर भी दिखाई देने लगा है। गले में लगातार खराश, आंखों में जलन, नाक बंद होना और सांस लेते समय भारीपन जैसी शिकायतें आम हो रही हैं। एम्स के पल्मोनरी मेडिसिन विशेषज्ञ डॉ. विजय हड्डा ने इस स्थिति पर चिंता जताते हुए कहा कि प्रदूषित हवा का लगातार शरीर में जाना आने वाले वर्षों में गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है।

डॉ. हड्डा के मुताबिक, अस्पताल में ऐसे लोग भी पहुंच रहे हैं जिन्हें पहले सांस संबंधी कोई परेशानी नहीं थी। यहां तक कि उनके स्वस्थ सहकर्मी भी गले में जलन और बेचैनी महसूस कर रहे हैं। कई मरीज कुछ समय बाद दोबारा इन्हीं शिकायतों के साथ ओपीडी पहुंच रहे हैं। यह संकेत है कि प्रदूषण का प्रभाव केवल पहले से बीमार लोगों



तक सीमित नहीं है।

पटाखों पर रोक और ग्रीन पटाखों से भी पूरी राहत नहीं

डॉक्टर ने कहा कि ग्रीन पटाखों को सामान्य पटाखों से कम प्रदूषण फैलाने वाला बताया जाता है, लेकिन इनसे भी उत्सर्जन में केवल करीब 30 प्रतिशत की कमी आती है। यानी प्रदूषण का बड़ा हिस्सा फिर भी वातावरण में पहुंचता है। उन्होंने कहा कि लोग हर सांस के साथ प्रदूषित हवा शरीर के अंदर ले रहे हैं और इसके दीर्घकालिक दुष्प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। डॉ. हड्डा ने बताया कि एक व्यक्ति सामान्य तौर पर एक मिनट में करीब 20 बार सांस लेता है और हर सांस के साथ लगभग आधा लीटर हवा शरीर में पहुंचती है। ऐसे में हवा में मौजूद प्रदूषक कणों का लगातार संपर्क स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है।

उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि उन्हें हैरानी होती है कि लोग ऐसी हवा में अब तक कैसे जीवित हैं। गले में सूखापन, बार-बार खंखारना, आंखों से पानी आना और सांस लेने में असहजता प्रदूषण के शुरुआती संकेत हैं। समस्या यह है कि कुछ समय बाद लोग इन परेशानियों को सामान्य मानकर भूल जाते हैं, जबकि जहरीली हवा का असर लंबे समय तक शरीर पर बना रह सकता है।

सोनिया की किताब में मेनका से टकराव की कहानी, घर छोड़ने तक का किया जिक्र

गांधी परिवार की अंदरूनी खींचतान का खुलासा; संजय की मौत के बाद बढ़े मतभेद, इंदिरा गांधी से भी हुआ था टकराव

नई दिल्ली। सोनिया गांधी ने अपनी किताब 'बिलॉन्गिंग- ए जर्नी ऑफ लव' में देवरानी मेनका गांधी के साथ रिश्तों और गांधी परिवार में हुए विवादों का उल्लेख किया है। उन्होंने बताया कि शुरुआत में मेनका के परिवार में आने से उन्हें खुशी हुई थी, लेकिन समय के साथ घरेलू और राजनीतिक मतभेद बढ़ते गए और आखिरकार मेनका को घर छोड़ना पड़ा।



सोनिया के मुताबिक, संजय गांधी और मेनका का परिचय 1973 के अंतिम महीनों में हुआ था। करीब एक साल बाद दोनों ने शादी कर ली। उस समय मेनका 18 वर्ष की थीं। सोनिया ने उन्हें उत्साही और बातूनी स्वभाव की युवती बताते हुए लिखा कि शुरुआत में दोनों के बीच अच्छा तालमेल था, लेकिन धीरे-धीरे घर में तनाव बढ़ने लगा। उन्होंने कहा कि घर की शांति बनाए रखने के लिए वह अक्सर मेनका की तीखी बातों पर चुप रहती थीं।

राजनीतिक मतभेदों ने बढ़ाई दूरी

किताब में सोनिया ने संजय और राजीव गांधी के बीच बढ़ते मतभेदों का भी जिक्र किया है। उनके अनुसार, 1978 के चुनाव के बाद राजीव संजय के फैसलों और कार्यशैली से नाराज थे। 23 जून 1980 को संजय गांधी की विमान दुर्घटना में मौत के बाद मेनका के राजनीतिक भविष्य को लेकर परिवार में तनाव और बढ़ गया।

सोनिया लिखती हैं कि इंदिरा गांधी मेनका की राजनीतिक गतिविधियों से असहज थीं। वरुण गांधी के पहले जन्मदिन का आयोजन वसुंधरा राजे के घर पर होने से भी इंदिरा को ठेस पहुंची थी। बाद में मेनका और इंदिरा के बीच बातचीत के दौरान उन्हें राजनीतिक गतिविधियां बंद करने या अलग रहने का फैसला करने को कहा गया।

विवाद के बाद मेनका ने छोड़ा घर

सोनिया के मुताबिक, इसके बाद मेनका ने आरोपों से भरा पत्र भेजा और गांधी परिवार का घर छोड़ दिया। इस घटनाक्रम को लेकर सार्वजनिक विवाद भी हुआ। बाद के वर्षों में वरुण गांधी से मिलने के अधिकार को लेकर परिवार और मेनका के बीच कानूनी खींचतान चली।

मेनका ने 1984 का लोकसभा चुनाव निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में लड़ा, लेकिन राजीव गांधी से हार गईं। वर्ष 1988 में वह वीपी सिंह के जनता दल में शामिल हुईं और 2004 में भाजपा से जुड़ गईं। सोनिया की 526 पन्नों की किताब में उनके जीवन, राजीव गांधी की हत्या और राजनीति में प्रवेश सहित कई अहम घटनाओं का वर्णन है।





यूपी की सभी 403 सीटों पर चुनाव लड़ेगी सर्वजन सनातन पार्टी, उम्मीदवार चयन की प्रक्रिया शुरू

पूर्व सीबीआई निदेशक एम. नागेश्वर राव ने मांगे आवेदन, पार्टी की विचारधारा से सहमत और यूपी की मतदाता सूची में नाम होना जरूरी

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2027 से पहले प्रदेश की सियासत में एक नई राजनीतिक पार्टी ने सभी सीटों पर उतरने की तैयारी शुरू कर दी है। पूर्व सीबीआई निदेशक एम. नागेश्वर राव के नेतृत्व वाली सर्वजन सनातन पार्टी ने राज्य की सभी 403 विधानसभा सीटों पर उम्मीदवार उतारने का ऐलान किया है। पार्टी ने इसके लिए संभावित प्रत्याशियों से आवेदन भी आमंत्रित कर दिए हैं। इस पहल से आगामी विधानसभा चुनाव में नए राजनीतिक समीकरण बनने की संभावनाएं बढ़ गई हैं।

सेवानिवृत्त आईपीएस अधिकारी एम. नागेश्वर राव करीब एक महीने पहले वाराणसी में गंगा तट पर आयोजित कार्यक्रम में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने थे। अब उन्होंने उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया शुरू करते हुए स्पष्ट किया है कि आवेदन पहले चरण की प्रारंभिक छंटनी के लिए मांगे गए हैं।

लक्ष्मी पूजा में नोटों की दीवार! नागौर के शराब कारोबारी ने करोड़ों की नकदी के बीच की पूजा, वीडियो वायरल



नागौर। दीपावली पर मां लक्ष्मी की आराधना के अलग-अलग तरीके देखने को मिलते हैं, लेकिन राजस्थान के नागौर में एक शराब कारोबारी की पूजा सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गई है। कारोबारी लक्ष्मी पूजन के दौरान 500-500 रुपये के नोटों की गड्डियों से दीवार जैसी संरचना तैयार करवाई और उसके सामने बैठकर परिवार सहित पूजा-अर्चना की। करोड़ों रुपये की नकदी के बीच पूजा करते हुए उनका वीडियो वायरल होने के बाद इस अनोखे प्रदर्शन को लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं सामने आ रही हैं।

वायरल वीडियो में कारोबारी अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ पूजा स्थल पर बैठे दिखाई दे रहे हैं। उनके पास लक्ष्मी और गणेश की प्रतिमाएं रखी हैं, जबकि दूसरी ओर पांच सौ रुपये के नोटों की गड्डियों को करीने से सजाकर दीवार का आकार दिया गया है। पूजा के दौरान बड़ी मात्रा में नकदी का इस तरह प्रदर्शन लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गया है।



कैंची धाम में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, नैनीताल-भवाली रोड पर लगा जाम

कैंची धाम। उत्तराखंड के नैनीताल स्थित प्रसिद्ध बाबा नीम करौली कैंची धाम में श्रद्धालुओं की संख्या लगातार बढ़ रही है। मंगलवार को सप्ताह के सामान्य दिन होने के बावजूद मंदिर में दर्शन के लिए बड़ी संख्या में भक्त पहुंचे। इसके चलते नैनीताल-भवाली मार्ग पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं और कई स्थानों पर यातायात धीमा रहा।

दोपहर करीब दो बजे सड़क पर श्रद्धालुओं और पर्यटकों की भारी आवाजाही देखी गई। देश के विभिन्न राज्यों से लोग परिवार सहित बाबा नीम करौली के दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार, सप्ताहांत और छुट्टियों में भीड़ और बढ़ जाती है, जिससे मंदिर के आसपास यातायात का दबाव बना रहता है। हाल में रिलीज हुई फिल्म हनुमान अंश के बाद युवाओं में भी बाबा नीम करौली के प्रति आकर्षण बढ़ने की बात कही जा रही है। सोशल मीडिया और देश-विदेश में उनकी लोकप्रियता के चलते कैंची धाम बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित कर रहा है।

सीएम के कथित आपत्तिजनक टिप्पणी, इंस्पेक्टर निलंबित

कोलकाता। पश्चिम बंगाल सरकार और मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के खिलाफ सोशल मीडिया पर कथित आपत्तिजनक टिप्पणी करना कोलकाता पुलिस के एक इंस्पेक्टर को भारी पड़ गया। मेडिकल कॉलेज पुलिस चौकी के प्रभारी रहे इंस्पेक्टर इकलाख अहमद को 9 नवंबर से निलंबित कर दिया गया है। पुलिस कमिश्नर अजय कुमार नंद की ओर से जारी आदेश में यह कार्रवाई की जानकारी दी गई है।

व्हाट्सएप चैट के स्क्रीनशॉट आए सामने

इकलाख अहमद पर मुख्यमंत्री के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करने का आरोप है। उनकी कथित व्हाट्सएप चैट के स्क्रीनशॉट भी सामने आए हैं, जिनमें मुख्यमंत्री के लिए मौत का सौदागर और लाश बेचकर पैसा कमाएगा? जैसी टिप्पणियां किए जाने का दावा है। इसके अलावा दिवाली के पटाखों से होने वाले प्रदूषण की चर्चा के दौरान सांप्रदायिक टिप्पणी करने का भी आरोप है।

जांच पूरी होने तक रहेंगे निलंबित

पुलिस कमिश्नर के आदेश के अनुसार, सोशल मीडिया पर की गई कथित टिप्पणियां सरकारी कर्मचारी के आचरण के अनुरूप नहीं हैं। जांच लंबित रहने तक उन्हें पद पर बनाए रखना उचित नहीं समझा गया। निलंबन अवधि में उन्हें मूल वेतन का आधा हिस्सा और नियमानुसार अन्य लाभ निर्वाह भत्ते के रूप में मिलेंगे। उन्हें अपना सरकारी सामान भी पुलिस के रिजर्व कार्यालय में जमा कराने का निर्देश दिया गया है।

लिंक एक्सप्रेसवे के टेंडरों पर अखिलेश ने उठाए सवाल, भाजपा सरकार पर मिलीभगत और कमीशनखोरी के आरोप

बोले- कुछ चुनिंदा कंपनियों में बांटे जा रहे ठेके, दुनिया को दिखाने के लिए टेंडर प्रक्रिया; असली खेल पर्दे के पीछे

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में लिंक एक्सप्रेसवे के निर्माण कार्यों को लेकर सियासी विवाद खड़ा हो गया है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने टेंडर प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए भाजपा सरकार



पर भ्रष्टाचार और चुनिंदा कंपनियों को लाभ पहुंचाने का आरोप लगाया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक सूची साझा करते हुए दावा किया कि उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीडा) के टेंडर कुछ गिनी-चुनी कंपनियों के बीच बांटे जा रहे हैं।

अखिलेश यादव ने मंगलवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट करते हुए आरोप लगाया कि टेंडर प्रक्रिया केवल दिखावे के लिए अपनाई जा रही है, जबकि वास्तविक खेल पर्दे के पीछे चल रहा है। उन्होंने इसे कंपनियों के बीच मिलीभगत बताते हुए कहा कि कहीं एक कंपनी पीछे हटती है तो कहीं दूसरी को आगे कर दिया जाता है। उनके अनुसार, इस पूरी प्रक्रिया में सरकार की भूमिका भी सवालों के घेरे में है। सपा प्रमुख ने एक अन्य पोस्ट में एआई से तैयार वीडियो साझा कर भाजपा सरकार के निर्माण कार्यों पर भी निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार के लिए एक्सप्रेसवे निर्माण से ज्यादा अहमियत पैसे कमाने को दी जा रही है।

धीरेंद्र शास्त्री की कथा पर सियासी घमासान, सपा सांसद ने आयोजन रोकने की मांग उठाई

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की प्रस्तावित हनुमंत कथा को लेकर विवाद गहराता जा रहा है। कुंडा विधायक राजा भैया की ओर से आयोजित होने वाले इस धार्मिक कार्यक्रम का समाजवादी पार्टी ने विरोध शुरू कर दिया है। सपा सांसद प्रो. एसपी सिंह ने धीरेंद्र शास्त्री पर निशाना साधते हुए उनकी कथा का आयोजन रोकने की मांग की है। उन्होंने आरोप लगाया कि धीरेंद्र शास्त्री पर्ची निकालकर लोगों को मूर्ख बनाते हैं और धर्म को कमाई का जरिया बना रखा है।

सांसद एसपी सिंह ने कहा कि धीरेंद्र शास्त्री लगातार विवादित बयान देते हैं और उनके बयानों से समाज में भ्रम की स्थिति पैदा होती है। ऐसे व्यक्ति को धार्मिक आयोजन के लिए मंच नहीं दिया जाना चाहिए। उन्होंने जिला प्रशासन से कार्यक्रम पर रोक लगाने की मांग करते हुए कहा कि समाजवादी पार्टी लोकतांत्रिक तरीके से इस आयोजन का विरोध करेगी। कुंडा के बेंती स्थित परेड ग्राउंड में 17 से 19 नवंबर तक तीन दिवसीय हनुमंत कथा प्रस्तावित है। इसका आयोजन जनसत्ता दल (लोकतांत्रिक) के अध्यक्ष एवं कुंडा विधायक रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया करा रहे हैं। आयोजन को लेकर सपा प्रमुख अखिलेश यादव के बयान के बाद अब स्थानीय सांसद के विरोध ने मामले को राजनीतिक रंग दे दिया है।

धीरेंद्र शास्त्री का विरोध उनके उस बयान के बाद शुरू हुआ, जिसमें उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण के त्रिभंग स्वरूप का वर्णन करते हुए भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के स्वरूपों की तुलना की थी। उनके बयान पर ब्रज क्षेत्र के संतों, कृष्ण भक्तों और यादव समाज के लोगों ने आपत्ति जताई थी।

रुड़की में पुलिस की जवाबी फायरिंग में गो-तस्कर के पैर में लगी गोली, घायल बदमाश अस्पताल में भर्ती

सिकरोड़ा गांव के पास आम के बाग में गोकशी की तैयारी कर रहा था आरोपी ; साथी कालू का कर रहा था इंतजार, पुलिस की कार्रवाई के दौरान हुई मुठभेड़





के.के.पी संवाददाता

रुड़की/हरिद्वार। हरिद्वार जनपद में गोकशी की घटना को अंजाम देने की तैयारी कर रहे एक आरोपी की पुलिस के साथ मुठभेड़ हो गई। पुलिस की जवाबी फायरिंग में आरोपी के पैर में गोली लग गई, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस टीम घायल आरोपी को उपचार के लिए रुड़की अस्पताल ले गई है। घटना की सूचना मिलते ही आला अधिकारी भी मौके के लिए रवाना हो गए। प्राप्त जानकारी के अनुसार, आरोपी सिकरोड़ा गांव के पास स्थित एक आम के बाग में गोकशी की घटना को अंजाम देने की तैयारी कर रहा था। बताया जा रहा है कि वह इस घटना को अंजाम देने के लिए अपने साथी कालू का इंतजार कर रहा था। इसी दौरान पुलिस टीम से उसका सामना हो गया। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में आरोपी के पैर में गोली लग गई। घायल आरोपी की पहचान छोटू पुत्र संसार उर्फ शमशाद, निवासी ग्राम हलजोरा, थाना भगवानपुर, उम्र 36 वर्ष के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार आरोपी कुख्यात गो-तस्कर बताया जा रहा है। फिलहाल घायल आरोपी को अस्पताल पहुंचाया गया है। पुलिस के आला अधिकारी मौके के लिए रवाना हो गए हैं। मामले में पुलिस की अग्रिम कार्रवाई और अन्य तथ्यों की जानकारी जुटाई जा रही है।

ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह को संत समाज ने किया नमन

13 अखाड़ों के संतों ने दी श्रद्धांजलि, धार्मिक परंपराओं और मानव सेवा में योगदान को किया याद

के.के.पी संवाददाता

हरिद्वार। कनखल स्थित श्री पंचायती अखाड़ा निर्मल में आयोजित संत समागम एवं श्रद्धांजलि समारोह में ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह महाराज की स्मृतियों को संत समाज ने नमन किया। 13 अखाड़ों के संतों की मौजूदगी में आयोजित समारोह में उन्हें तपस्वी, वीतरागी और मानव सेवा के प्रति समर्पित संत बताया गया। संतों ने कहा कि ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह महाराज ने धार्मिक परंपराओं के संरक्षण के साथ समाज और मानवता की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसे संत समाज हमेशा याद रखेगा। निर्मल कुटिया झोला जालंधर के वर्तमान महंत संत जसपाल सिंह की ओर से निर्मल कुटिया झोला के संस्थापक



ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह महाराज, संत ज्ञान सिंह महाराज और संत हरभजन सिंह की पुण्य स्मृति में संत समागम एवं श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। कार्यक्रम में गुरु ग्रंथ साहिब जी का भोग डाला गया और अरदास की गई। श्री पंचायती अखाड़ा निर्मल के अध्यक्ष श्रीमहंत ज्ञानदेव सिंह महाराज की अध्यक्षता में हुए कार्यक्रम का संचालन कोठारी महंत जसविंदर सिंह शास्त्री ने किया। इस दौरान संतों ने ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह महाराज को श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्रीमहंत ज्ञानदेव सिंह महाराज ने कहा कि ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह महाराज तपस्वी और वीतरागी संत थे। उन्होंने अपना जीवन धार्मिक परंपराओं के संरक्षण के साथ मानवता की सेवा में समर्पित किया। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व आज भी समाज के लिए प्रेरणादायी है।

उन्होंने कहा कि निर्मल कुटिया जौहरा जालंधर के वर्तमान महंत जसपाल सिंह अपने गुरु की स्मृतियों को संजोकर निर्मल समुदाय की सेवा परंपरा और आदर्शों को आगे बढ़ा रहे हैं। कोठारी महंत जसविंदर सिंह शास्त्री ने कहा कि ब्रह्मलीन संत बसंत सिंह, संत ज्ञान सिंह और संत हरभजन सिंह निर्मल समुदाय के वरिष्ठ संत थे। उन्होंने धर्म और समाज की निरंतर सेवा की।

ऑपरेशन प्रहार के तहत फरार चल रहे वारण्टी गिरफ्तार

के.के.पी संवाददाता

हल्दूचौड । ऑपरेशन प्रहार के तहत वारंटियों के विरुद्ध चौकी हल्दूचौड थाना लालकुआ पुलिस कार्यवाही करते हुए काफी समय से फरार चल रहे वारण्टी को किया गिरफ्तार

श्रीमान् वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नैनीताल डॉ0 मंजूनाथ टी.सी. महोदय के दिशा निर्देशन व श्री हरवश सिह पुलिस अधीक्षक हल्द्वानी एवं श्री विमल प्रसाद क्षेत्राधिकारी लालकुआँ के पर्यवेक्षण व प्रभारी निरीक्षक लालकुआ के नेतृत्व में चौकी हल्दूचौड पुलिस टीम द्वारा ऑपरेशन प्रहार के तहत वारंटियो की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत चौकी हल्दूचौड पुलिस को आज फिर बड़ी सफलता मिली है । दिनांक 09/11/2026 को चौकी हल्दूचौड थाना लालकुआ द्वारा माननीय न्यायालय हल्द्वानी से



जारी गैर जमानती वारंट (NBW) वारण्टी पवन जोशी पुत्र कृष्णा नन्द जोशी निवासी किशनपुर सकुलिया मोटाहल्दू हल्दूचौड लालकुआ जिला नैनीताल को किशनपुर सकुलिया से गिरफ्तार किया गया वारण्टी को नियमानुसार माननीय न्यायालय हल्द्वानी के समक्ष पेश किया जायेगा ।

गिरफ्तारी टीमः -

1-उप निरीक्षक अर्जुन गिरी चौकी प्रभारी हल्दूचौड लालकुआ

कानों में सीटी बजने से हैं परेशान तो आयुर्वेद में है पक्का इलाज

के.के.पी संवाददाता, हरिद्वार

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी, कानों में ध्वनि सुनने वाले उपकरणों का अत्यधिक इस्तेमाल और मानसिक तनाव के कारण कानों से जुड़ी एक समस्या तेजी से बढ़ रही है, जिसे आधुनिक चिकित्सा में कर्णध्वनि और आयुर्वेद में कर्णनाद या कर्णश्वेड कहा जाता है। इस समस्या में मरीज को कानों के अंदर लगातार सीटी बजने, शंख, भिनभिनाहट या किसी मशीन के चलने जैसी आवाजें सुनाई देती हैं। लगातार होने वाले इस शोर के कारण व्यक्ति की दिनचर्या प्रभावित हो जाती है, नींद में बाधा आती है और मानसिक तनाव बढ़ सकता है।

.ऋषिकुल आयुर्वेदिक कॉलेज के ईएनटी विभाग के सीनियर डॉ अरूण कुमार ने बताया कि आधुनिक चिकित्सा में इस



समस्या का उपचार उसके कारण पर निर्भर करता है। ऋषिकुल आयुर्वेदिक महाविद्यालय, हरिद्वार के ईएनटी विभाग में आयुर्वेदिक पद्धतियों के माध्यम से भी इस समस्या के उपचार पर कार्य किया जाता है। आयुर्वेद के अनुसार, यह रोग मुख्य रूप से शरीर में वात दोष के असंतुलन से संबंधित माना जाता है।

कर्णनाद में उपयोगी मानी जाने वाली 5 स्थानीय चिकित्सा पद्धतियां

1. कर्णपूरण

इस प्रक्रिया में बिल्वादि तैल या वचादि तैल जैसे औषधीय तेलों को चिकित्सकीय निर्देशानुसार कान में प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में इसे वात शमन और कान के पोषण के लिए उपयोगी माना जाता है। कान में तेल डालने से पहले पर्दे की स्थिति और संक्रमण की संभावना की जांच आवश्यक है।

2. नस्य

आयुर्वेद में नाक को सिर का द्वार माना गया है। नस्य चिकित्सा में नाक के माध्यम से औषधीय तेल या अन्य निर्धारित औषधियों का प्रयोग किया जाता है। इसे सिर और तंत्रिका तंत्र से संबंधित समस्याओं में सहायक चिकित्सा के रूप में अपनाया जाता है।

3. शिरोधारा

इस प्रक्रिया में सिर पर औषधीय तेल या निर्धारित द्रव्य की निरंतर धारा प्रवाहित की जाती है। इसे मानसिक तनाव, बेचैनी और नींद संबंधी समस्याओं में आराम देने वाली चिकित्सा के रूप में उपयोग किया जाता है।

4. शिरोपिचू

इस प्रक्रिया में सिर के निर्धारित स्थान पर औषधीय तेल में भिगोया हुआ रूई का फाहा रखा जाता है। आयुर्वेद में इसे सिर और तंत्रिका तंत्र को आराम प्रदान करने वाली चिकित्सा माना जाता है।

5. विद्धकर्म एवं मर्म चिकित्सा

इस चिकित्सा में शरीर के निर्धारित मर्म बिंदुओं पर विशेष प्रक्रिया अपनाई जाती है। कान के आसपास स्थित विधुर मर्म का उल्लेख आयुर्वेद में मिलता है। इन पद्धतियों का प्रयोग प्रशिक्षित चिकित्सक द्वारा उचित जांच के बाद ही किया जाना चाहिए।

घर पर अपनाएं ये 3 सहायक उपाय

चिकित्सकीय उपचार के साथ-साथ कुछ नियमित आदतें भी कर्णनाद से होने वाली परेशानी को कम करने में सहायक हो सकती हैं।

अनु तैल का नस्यरू औषधीय तेल का प्रयोग चिकित्सक की सलाह के अनुसार ही करें। बिना परामर्श के नाक में तेल डालना उचित नहीं है।

इरिमेदादि तैल से मुख प्रक्षालनरू इरिमेदादि तैल का निर्धारित विधि से प्रयोग मुख की स्वच्छता के लिए किया जाता है। इसे कान की समस्या का निश्चित उपचार नहीं माना जाना चाहिए।

प्राणायाम का अभ्यासरू प्रतिदिन भ्रामरी, अनुलोम-विलोम और उद्गीथ प्राणायाम का अभ्यास मानसिक तनाव कम करने और मन को शांत रखने में सहायक हो सकता है।

कर्णनाद को नजरअंदाज न करें

कानों में लगातार आवाज सुनाई देने की समस्या को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। इसके पीछे सुनने की क्षमता में कमी, कान में मैल, संक्रमण, कुछ औषधियों के दुष्प्रभाव या अन्य कारण हो सकते हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा के साथ-साथ कान और सुनने की क्षमता की उचित जांच कराना भी आवश्यक है।

यदि आप भी इस समस्या से परेशान हैं, तो ऋषिकुल आयुर्वेदिक महाविद्यालय के ईएनटी विभाग में चिकित्सकीय परामर्श प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष सावधानीरू कर्णनाद के स्थायी उपचार का दावा सभी मरीजों के लिए सही नहीं है। उपचार का परिणाम समस्या के कारण और मरीज की स्थिति पर निर्भर करता है।

एक नजर

एक्टर रसेल ब्रांड 4 रेप केस में दोषी

न्यूयार्क। हॉलीवुड एक्टर और कॉमेडियन रसेल ब्रांड को रेप और यौन शोषण के मामलों में दोषी करार देते हुए 10 साल की सजा सुनाई गई है। रसेल ब्रांड पॉप स्टार कैटी पैरी के पूर्व पति भी हैं। उन पर आरोप था कि उन्होंने अपने सेलिब्रिटी स्टेटस का फायदा उठाकर कई महिलाओं का यौन शोषण किया। ये मामले 1विनोद उपाध्याय /10 नवम्बर, 2026 से 2009 के बीच के हैं। सितंबर 2023 में दो ब्रिटिश टीवी चैनलों और अखबारों की संयुक्त जांच के बाद पहली बार ये आरोप सार्वजनिक हुए थे। इसके बाद ब्रिटिश पुलिस ने मामले की जांच शुरू की। रसेल ब्रांड के खिलाफ रेप और यौन उत्पीडन् से जुड़े कुल 7 मामलों की जांच हुई। इनमें से 4 मामलों में उन्हें दोषी ठहराया गया, जबकि 3 मामलों में बरी कर दिया गया।

पेरिस में जुटे जी7 विदेश मंत्री, यूक्रेन को सुरक्षा सहायता पर मंथन

पेरिस। यूक्रेन में जारी युद्ध और रूस से अपनी रक्षा के लिए उसे दी जाने वाली सहायता को लेकर जी-7 देशों के विदेश मंत्री पेरिस में बैठक कर रहे हैं। बैठक में अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो समेत सात विकसित लोकतांत्रिक देशों के विदेश मंत्री शामिल हो रहे हैं। यूक्रेन के विदेश मंत्री आंद्री सिबिहा भी बैठक में हिस्सा लेंगे।

सिबिहा की सबसे पहले रुबियो के साथ द्विपक्षीय बातचीत होगी। इसके बाद वह फ्रांस के विदेश मंत्रालय में जी-7 के अन्य सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों के साथ बैठक करेंगे। इसमें यूक्रेन को सुरक्षा संबंधी सहायता देने और रूस के खिलाफ उसकी क्षमता मजबूत करने के उपायों पर चर्चा होने की संभावना है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन की ओर से यूक्रेन को दी जाने वाली सहायता में कटौती के बाद कीव के साथ यूरोपीय देशों की चिंता भी बढ़ी है। हालांकि, बैठक में अमेरिका या जी-7 के किसी अन्य देश की ओर से यूक्रेन के लिए नई सहायता की घोषणा होगी या नहीं, यह अभी स्पष्ट नहीं है। इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति के दूत स्टीव विटकॉफ और जेरेड कुशनर अबू धाबी में रूस और यूक्रेन के अधिकारियों से मुलाकात करेंगे। बातचीत का एक उद्देश्य मॉस्को को व्यापक वार्ता के लिए तैयार करना भी बताया गया है, जिसमें यूरोपीय देशों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हो सकते हैं।

पीक आवर के प्रदूषण के आंकड़े गायब क्यों पीएम 2.5 पहुंचा 2000 पार

नई दिल्ली। दिवाली की रात आतिशबाजी के बाद कई जगहों पर पीएम 2.5 का स्तर 2000 एमसीएम से भी अधिक रहा। प्रदूषण का यह स्तर तब रहा, जब कई जगहों पर रात 12 से 2 बजे तक प्रदूषण के आंकड़े ही उपलब्ध नहीं थे। पीएम 2.5 का निर्धारित भारतीय मानक 60 एमजीसीएम है, जबकि डब्ल्यूएचओ का मानक महज 15 एमजीसीएम है। कई जगहों पर पीएम 2.5 का स्तर भारतीय मानकों से 33 गुना और डब्ल्यूएचओ के मानकों से 133 गुना अधिक रहा। पीएम 2.5 के कण इतने छोटे होते हैं कि सांस के साथ विभिन्न अंगों तक जा सकते हैं। सीएसई की कार्यकारी निदेशक अनुमिता रॉयचौधरी ने चिंता जताते हुए कहा कि दिल्ली-एनसीआर में देश का सबसे घना मॉनिटरिंग नेटवर्क है। ऐसे में प्रदूषण के चरम समय पर डेटा का गायब होना समझ से परे है। उनके मुताबिक, रियल टाइम आंकड़ों के आधार पर लोगों को स्वास्थ्य संबंधी चेतावनी दी जा सकती थी और आपात कदम उठाए जा सकते थे। दिल्ली यूनिवर्सिटी के पर्यावरण अध्ययन विभाग के प्रमुख राधेश्याम शर्मा ने कहा कि सरकारी और प्राइवेट एजेंसियों के एक्यूआई में अंतर की एक वजह मापने और औसत निकालने के अलग-अलग तरीके भी हो सकते हैं। इसलिए रीडिंग के साथ जगह और समय की जानकारी स्पष्ट होनी चाहिए।

ईरान पर दोबारा हमले के लिए ट्रंप पर दबाव बना रहे नेतन्याहू, हर दिन कर रहे फोनः रिपोर्ट

वाशिंगटन। ईरान के साथ जारी संघर्ष को लेकर इजरायल और अमेरिका के बीच रणनीतिक मतभेद सामने आने लगे हैं। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर ईरान के खिलाफ दोबारा सैन्य कार्रवाई शुरू करने का दबाव बना रहे हैं। फाइनेंशियल टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक, नेतन्याहू इस मुद्दे पर ट्रंप को लगभग हर दिन फोन कर रहे हैं और उनसे फिर से हमले शुरू करने की अपील कर रहे हैं।

रिपोर्ट में बातचीत से जुड़े एक व्यक्ति के हवाले से कहा गया है कि नेतन्याहू लगातार युद्ध दोबारा शुरू करने की पैरवी कर रहे हैं। वहीं, व्हाइट हाउस के भीतर और बाहर ऐसे लोग भी हैं, जो इस दबाव का विरोध कर रहे हैं। उनका मानना है कि सैन्य कार्रवाई बढ़ाने के बजाय कूटनीतिक बातचीत को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इस बीच, अरब और मुस्लिम देशों के नेता भी तनाव बढ़ने को



लेकर चिंतित हैं। सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान, संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद, कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी और तुर्किये के राष्ट्रपति रेचेप तैयप एर्दोआन ने भी ट्रंप से संपर्क कर संयम बरतने और बातचीत को आगे बढ़ाने की अपील की है।

वहीं, कतर के प्रधानमंत्री शेख मोहम्मद बिन अब्दुलरहमान अल थानी से बातचीत के बाद ट्रंप ने कहा कि ईरान पर नए हमले की संभावना फिलहाल कम है। उन्होंने संकेत दिया कि सैन्य कार्रवाई के बजाय आर्थिक नाकेबंदी जारी रखना उनकी प्राथमिकता है।

ट्रंप ने सोशल मीडिया पर कहा कि कतर, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन और कुवैत मौजूदा स्थिति बनाए रखने के पक्ष में हैं। उन्होंने संघर्ष समाप्त करने की दिशा में सकारात्मक प्रगति का भी दावा किया।

इस तरह ईरान को लेकर एक तरफ नेतन्याहू सैन्य कार्रवाई चाहते हैं, तो दूसरी तरफ क्षेत्रीय देश और अमेरिका कूटनीतिक समाधान की कोशिश में जुटे हैं।

गाजा में इजरायली हमले और गोलीबारी में 4 लोगों की मौत, सीजफायर के बावजूद जारी सैन्य कार्रवाई

गाजा (ईएमएस)। फिलस्तीन के गाजा पट्टी में इजरायल की हवाई कार्रवाई और गोलीबारी में मंगलवार को चार लोगों की मौत हो गई। स्थानीय अस्पताल अधिकारियों के मुताबिक, गाजा शहर में दो अलग-अलग हवाई हमलों में तीन लोगों की जान गई, जबकि दक्षिणी गाजा के खान यूनिस में इजरायली गोलीबारी में एक व्यक्ति की मौत हुई। यह घटनाएं ऐसे समय हुई हैं, जब अक्टूबर 2025 में लागू युद्धविराम के बावजूद क्षेत्र में हिंसा जारी है।

जानकारी के मुताबिक, गाजा शहर के जैतून इलाके में विस्थापित लोगों के लिए बनाए गए एक आश्रय स्थल की छत पर हवाई हमला हुआ। इसमें फादी रजब और उनके 13 वर्षीय बेटे अबुबक्र की मौत हो गई। वहीं, शहर के दराज इलाके में एक स्कूल के पास हुए दूसरे हवाई हमले में एक अन्य फलस्तीनी की जान चली गई। इजरायली सेना ने कहा कि उसने गाजा शहर में



आतंकियों को निशाना बनाकर कार्रवाई की थी। हालांकि, खान यूनिस में हुई गोलीबारी पर तत्काल कोई टिप्पणी नहीं की।

गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, अक्टूबर 2025 में युद्धविराम लागू होने के बाद से इजरायली हमलों में अब तक 1,600 से अधिक फलस्तीनी मारे जा चुके हैं। वहीं, इजरायल ने अपने चार सैनिकों की मौत की जानकारी दी है।

इस बीच, अमेरिका की मध्यस्थता से हुए युद्धविराम समझौते को आगे बढ़ाने की कोशिशें भी अटकी हुई हैं। हमास के निरस्त्रीकरण और गाजा से इजरायली सैनिकों की वापसी जैसे मुद्दों पर दोनों पक्षों के बीच सहमति नहीं बन पाई है।

गौरतलब है कि 7 अक्टूबर 2023 को हमास के हमले के बाद इजरायल ने गाजा में सैन्य अभियान शुरू किया था। फलस्तीनी अधिकारियों के अनुसार, इस संघर्ष में अब तक 74 हजार से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

बांग्लादेश लौटते ही शेख हसीना को दी जाएगी फांसी ! मुख्य अभियोजक बोले- अपील का समय खत्म, अब कोई कानूनी विकल्प नहीं

ढाका। बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। बांग्लादेश के मुख्य अभियोजक मोहम्मद अमीनुल इस्लाम ने कहा है कि शेख हसीना अगर देश लौटती हैं तो उन्हें मौत की सजा का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि अब उनके पास इस फैसले के खिलाफ अपील करने का कोई कानूनी विकल्प नहीं बचा है। यह बयान ऐसे समय आया है, जब शेख हसीना ने दिसंबर में भारत से बांग्लादेश लौटने की इच्छा जताई है।

अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण के मुख्य अभियोजक अमीनुल इस्लाम ने 10 नवंबर को ढाका में पत्रकारों से बातचीत में कहा कि शेख हसीना को फैसले के खिलाफ अपील करने के लिए 30 दिन का समय दिया गया था, लेकिन उन्होंने निर्धारित अवधि में अपील नहीं की। अब यह समय सीमा समाप्त हो चुकी है। उन्होंने कहा कि यदि हसीना वास्तव में बांग्लादेश लौटना चाहती हैं तो उन्हें भारत सरकार को प्रत्यर्पण संधि के तहत लिखित अनुरोध देना चाहिए।

गौरतलब है कि नवंबर 2025 में बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने वर्ष 2024 में छात्र आंदोलन के दौरान हुई हिंसा और कार्रवाई के मामले में शेख हसीना को मानवता के खिलाफ अपराधों का दोषी ठहराते हुए उनकी अनुपस्थिति में मौत की सजा सुनाई थी। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, उस दौरान हिंसा में करीब 1,400 लोगों की मौत हुई थी।

बिंदुखता राजस्व गांव की मांग के साथ जैव विविधता संरक्षण की मिसाल

राजस्व गांव बनाने की अधिसूचना जारी करने की मांग को लेकर आंदोलित हैं स्थानीय निवासी

नदी में जलीय जीवों के संरक्षण के लिए जगह-जगह कैमरे लगाने की योजना

के.के.पी संवाददाता

बिंदुखता। बिंदुखता के स्थानीय निवासी बिंदुखाता को राजस्व गांव बनाने की अधिसूचना जारी करने की मांग को लेकर आंदोलित हैं। वहीं दूसरी ओर यही निवासी क्षेत्र की जैव विविधता को संरक्षित रखने में भी अनुकरणीय भूमिका निभा रहे हैं। गांव के लोगों ने प्राकृतिक नदी को जलीय जीवों के लिए सुरक्षित ठिकाना बनाने के लिए एक अनूठी मुहिम छेड़ रखी है, जिसमें हजारों की संख्या में मछलियां, केकड़े, सांप सहित अन्य जलीय जंतु संरक्षित हैं।

स्थानीय लोगों के इस प्रयास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे न केवल इन जीवों की सुरक्षा कर रहे हैं, बल्कि समय-समय पर उन्हें भोजन भी उपलब्ध करा रहे हैं। समाजसेवी लाखन सिंह मेहता और उनका परिवार प्रतिदिन नदी में मछलियों और केकड़ों



के लिए भोजन की व्यवस्था करता है। ग्रामीणों ने यह भी सुनिश्चित किया है कि कोई भी बाहरी व्यक्ति या स्थानीय निवासी इन जीवों को पकड़कर बेचने या अपना भोजन बनाने का प्रयास न करे। यदि कोई ऐसा करता पाया जाता है, तो उसके खिलाफ कार्रवाई कर दंडित किए जाने की परंपरा भी कायम की गई है।

समाजसेवी श्री मेहता ने बताया कि एक बार किसी व्यक्ति द्वारा लगभग 100 केकड़ों को कट्टे में भरकर बेचने के लिए ले जाया जा रहा था। सूचना मिलते ही स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और उस व्यक्ति से कट्टा छीनकर सभी जलीय जंतुओं को उसी स्थान पर छोड़ दिया तथा उसके खिलाफ कार्रवाई भी की। इसके बाद अब उक्त प्राकृतिक नदी में कोई भी इस तरह की हरकत नहीं करता और वहां लगे पौधों पर भी कोई हाथ नहीं लगाता। पूरा गांव नदी के संरक्षण में जुटा हुआ है।

उन्होंने बताया कि स्थानीय लोगों ने भविष्य में उक्त नदी में जलीय जीवन के संरक्षण के लिए जगह-जगह कैमरे लगाने की भी योजना बनाई है, ताकि किसी भी अवैध गतिविधि पर नजर रखी जा सके और दोषियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की जा सके।

इससे स्पष्ट होता है कि बिंदुखाता के निवासी जैव विविधता को उसी तरह बनाए रखना चाहते हैं, जिस तरह वे बिंदुखाता को राजस्व गांव बनाने की मांग कर रहे हैं। उनका यह प्रयास न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय कदम है, बल्कि समाज के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण भी है कि कैसे सामूहिक प्रयास से प्राकृतिक संसाधनों और जैव विविधता को सहेजा जा सकता है।

यूपी चुनाव से पहले बड़े तहलके के आसार? सौरव दास ने सीएम योगी पर किया बड़ा दावा



लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के दौरान वोट कटने के दावे पर कॉकरोच जनता पार्टी के सौरव दास ने बड़ा दावा किया है. उनके दावे से यह संकेत मिल रहे हैं कि साल 2027 में यूपी में प्रस्तावित विधानसभा चुनाव से पहले कुछ बड़ा हो सकता है. सौरव दास ने सीएम योगी के दावों पर जो प्रतिक्रिया दी है उसमें उन्होंने दावा किया है कि दिल्ली और लखनऊ के बीच सब कुछ ठीक नहीं है.

सीएम के बयान पर प्रकाशित एक अखबार की खबर की कतरन साझा करते हुए दास ने सोशल मीडिया साइट एक्स लिखा- यह उत्तर प्रदेश सरकार और केंद्र सरकार के बीच पनप रही खींचतान है. राजनीतिक गलियारों में यह बात काफी समय से चर्चा में है कि अमित शाह (गृह एवं सहकारिता मंत्री) को योगी आदित्यनाथ ज्यादा पसंद नहीं हैं.

दास ने दावा किया कि सीएम योगी की तरफ से भी कुछ ऐसी ही है. अब दोनों के बीच असहजता सार्वजनिक रूप से सामने आ रही है. सीजेपी नेता ने दावा किया कि केंद्र सरकार के इशारे पर उत्तर प्रदेश सरकार में कई लोगों को नियुक्त किया गया है, ताकि योगी आदित्यनाथ पर नियंत्रण रखा जा सके.

उन्होंने लिखा कि योगी, उत्तर प्रदेश में काफी लोकप्रिय हैं और इसी वजह से उन्हें प्रधानमंत्री और गृह मंत्री के लिए राजनीतिक चुनौती के रूप में देखा जाता है. यही कारण है कि बीजेपी शासित दूसरे राज्यों में भी ऐसे नेताओं को मुख्यमंत्री बनाया जाता है, जिन्हें प्रधानमंत्री और गृह मंत्री का करीबी माना जाता है और जिनकी अपनी राजनीतिक पहचान कम होती है. अब देखा जा रहा है कि बीजेपी के एक मौजूदा मुख्यमंत्री मतदाता सूची से नाम हटाए जाने में कथित धांधली की बात कर रहे हैं लेकिन वह इस मुद्दे को भी अपने खास हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक नजरिये से उठा रहे हैं.'

बता दें सीएम दावा किया है कि उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के दौरान 1.27 करोड़ हिन्दुओं के नाम कट गए हैं वहीं मुस्लिम मतों की संख्या में 1 फीसदी से अधिक की बढ़ोतरी हुई है.

पटना से दिल्ली के ग्रेटर कैलाश तक प्रॉपर्टी; अनंत सिंह ने कैसे बनाया 100 करोड़ का साम्राज्य, पत्नी ज्यादा अमीर



मोकामा / पटनाः जदयू विधायक अनंत सिंह इन दिनों अपनी बेटी शिवांगी सिंह की भव्य शादी की तैयारियों को लेकर सुर्खियों में हैं. 25 नवंबर को मोकामा के पैतृक गांव लदमा (नदवां) में होने वाले इस समारोह में लाखों लोगों के शामिल होने की चर्चा है. शादी की तैयारियों के बीच वर्ष 2025 विधानसभा चुनाव के दौरान दाखिल उनके हलफनामे में घोषित संपत्ति भी चर्चा का विषय बन गई है. हलफनामे के अनुसार, अनंत सिंह और उनकी पत्नी नीलम देवी की कुल घोषित संपत्ति 100 करोड़ रुपये से अधिक है. चुनाव आयोग को दिए गए हलफनामे के मुताबिक अनंत सिंह की कुल घोषित संपत्ति 37.88 करोड़ रुपये है. वहीं उनकी पत्नी नीलम देवी के नाम 62.72 करोड़ रुपये की संपत्ति दर्ज है. इस तरह दोनों की संयुक्त घोषित संपत्ति 100 करोड़ रुपये से अधिक है. हलफनामे के अनुसार नीलम देवी की संपत्ति अनंत सिंह से लगभग 25 करोड़ रुपये ज्यादा है. अनंत सिंह ने अपनी आय के स्रोत के रूप में कारोबार, खेती, मकानों से मिलने वाला किराया तथा बिहार विधानसभा से मिलने वाले वेतन और पेंशन का उल्लेख किया है. नीलम देवी ने भी कारोबार, कृषि कार्य और किराये की आय को आमदनी का प्रमुख स्रोत बताया है. हालांकि हलफनामे में यह स्पष्ट नहीं किया गया कि अनंत सिंह किस प्रकार का व्यवसाय करते हैं. किसी कंपनी, फर्म या व्यापारिक इकाई का अलग से विवरण भी नहीं दिया गया है.

'वो नजरें फेर लेते हैं, आंखें मिलाने से बचते हैं'.. पीएम मोदी से मुलाकात पर सोनिया गांधी का दावा



नई दिल्लीः सोनिया गांधी ने अपनी किताब 'बिलोंगिंगः ए जर्नी ऑफ लव' में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का भी जिक्र किया है. कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष ने बताया है कि जब-जब वह प्रधानमंत्री मोदी से मिलीं, तो वे सिर्फ औपचारिक मुलाकातें ही साबित हुईं. सोनिया गांधी ने कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी के साथ उनका 'व्यावहारिक रूप से कभी कोई वास्तविक संपर्क' नहीं रहा है और जब भी दोनों आमने-सामने होते हैं, तो पीएम मोदी उनसे नजरें मिलाने से बचते हैं. उनका यह भी कहना है कि प्रधानमंत्री मोदी भारत को लेकर अपने दृष्टिकोण के लिए संघर्ष कर रहे हैं और वह अपने दृष्टिकोण के लिए आगे बढ़ रही हैं.

हालांकि, सोनिया गांधी ने अपनी आत्मकथा में यह भी कहा है कि प्रधानमंत्री मोदी ने निश्चित रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के भीतर एक वंचित पृष्ठभूमि से उठकर सत्ता तक का सफर तय किया है, लेकिन उनकी शुरुआती जिंदगी शायद उतनी साधारण नहीं रही होगी, जितनी उनके प्रचार दल ने उनकी छवि गढ़ते हुए पेश की है.

सोनिया गांधी ने बुक में लिखा, 'नरेन्द्र दामोदरदास मोदी को प्रधानमंत्री बने 12 साल से अधिक हो चुके हैं और यह उनका तीसरा कार्यकाल है.

इसके बावजूद आज तक मेरा उनसे व्यावहारिक रूप से कोई वास्तविक संपर्क नहीं रहा है. हमारी मुलाकात अर्ध-आधिकारिक कार्यक्रमों में होती है. उदाहरण के लिए, संसद के हर सत्र के खत्म होने पर, जब प्रमुख राजनीतिक दलों के नेता परंपरागत रूप से लोकसभा अध्यक्ष के कक्ष में एकत्र होते हैं.

'ये मानव जनित रोग', दीवाली पर कांग्रेस सांसद इमरान मसूद का विवादित बयान, BJP ने कहा-हिंदू विरोधी



दिल्लीः दिल्ली-एनसीआर में बढ़ रहे वायु प्रदूषण के बीच कांग्रेस सांसद इमरान मसूद दीवाली पर अपने एक बयान को लेकर चर्चा में हैं. इमरान मसूद ने दिवाली पर होने वाले वायु प्रदूषण को मानव जनित रोग बताया.कांग्रेस सांसद ने दिल्ली के मंत्री कपिल मिश्रा के बयान पर कहा कि ये लोग मानसिक रूप से विकृत है, ये सिर्फ नेगेटिव बात करते हैं. दीवाली हो या... प्रदूषण मानव जनित रोग है. लोगों को जागरुक होना पड़ेगा.

उन्होंने कहा कि सरकार उनकी (एनडीए) हो या हमारी हो, सरकार इस पर बहुत ज्यादा कुछ नहीं करेगी.प्रदूषण से निपटने के लिए लोगों को ही जागरुक होना पड़ेगा. इमरान मसूद ने कहा कि दिल्ली में एक्यूआई 1710 हो गया. रात में सहारनपुर में एक्यूआई 600 हो गया था. इमरान मसूद ने ये प्रतिक्रिया दिल्ली सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा के सोमवार को लगाए गए आरोपों पर दी. वहीं बीजेपी ने पलटवार करते हुए कहा कि कांग्रेस सांसद इमरान मसूद का यह बयान उनके हिंदू-विरोधी विश्वास और सनातन-विरोधी मानसिकता को उजागर करता है.कभी सनातन पर हमले, तो कभी हिंदू त्योहारों का अपमान. क्या राहुल गांधी कांग्रेस नेताओं के ऐसे बयानों का परोक्ष रूप से समर्थन करते हैं?

कपिल मिश्रा ने आरोप लगाया था कि दिवाली के दिन आम आदमी पार्टी शासित पंजाब में पराली जलाने की घटनाओं में अचानक संदिग्ध वृद्धि दर्ज की गई. उन्होंने दावा किया कि पंजाब के किसान आरोप लगा रहे हैं कि जब वे अपने परिवारों के साथ दिवाली मना रहे थे तब उनके खेतों में पराली में जानबूझकर आग लगा दी गई.उन्होंने कहा कि उपग्रह डेटा की जांच में पता चला है कि दिवाली के दिन पंजाब में पराली जलाने की घटनाओं की संख्या पिछले तीन दिनों की तुलना में काफी बढ़ गई थी. 5,6,7 नवंबर को हर रोज पराली जलाए जाने की लगभग 100 से 125 घटनाएं सामने आईं, जबकि 8 नवंबर को दीवाली वाले दिन यह आंकड़ा बढ़कर करीब 1,200 हो गया था.

गोकुल दूध संघ अध्यक्ष पद के नतीजे घोषित, NCP के राजेश पाटिल जीते



मुंबई। महाराष्ट्र के कोल्हापुर में आज गोकुल दूध संघ के अध्यक्ष के चुनाव महायुति की जीत हुई है. NCP के राजेश पाटिल अध्यक्ष चुने गए हैं. अध्यक्ष पद के चुनाव में महायुति के उम्मीदवार राजेश पाटिल ने समविचारी आघाड़ी के उम्मीदवार शशिकांत पाटील चुयेकर को मात दी. राजेश पाटिल को कुल 29 में से 16 वोट मिले जबकि शशिकांत पाटिल चुयेकर को 13 वोट मिले. दो चरणों में वोटों की गिनती हुई. पहले चरण में निर्वाचित संचालकों के वोटों की गिनती हुई. इसमें शशिकांत पाटिल चुयेकर को 13 और राजेश पाटिल को 12 वोट मिले. दूसरे चरण में सरकार की ओर से नियुक्त संचालकों के वोटों की गिनती हुई. इसके बाद राजेश पाटील को कुल 16 और शशिकांत पाटिल चुयेकर को 13 वोट मिले. इस जीत के साथ गोकुल दूध संघ के अध्यक्ष पद पर महायुति का कब्जा हो गया. समविचारी आघाड़ी को हार का सामना करना पड़ा. बता दें कि कांग्रेस के विधानपरिषद सदस्य सतेज पाटिल के पैनल ने 18 अक्टूबर के गोकुल डेरी चुनाव में 25 में से 13 सीट जीतीं, जबकि महाराष्ट्र के सत्तारूढ़ गठबंधन महायुति के पैनल को 12 सीट मिली थीं. इसके बाद महाराष्ट्र कैबिनेट ने सहकारी संस्था में सत्ता के संतुलन को पूरी तरह से बदलने में समर्थ एक प्रस्ताव को मंजूरी दी. इसके तहत सरकार को बोर्ड में पांच निदेशक नियुक्त करने का अधिकार मिला और जिनमें से चार को वोट देने का अधिकार भी दिया गया. सरकार के इस फैसले का विरोध हुआ. इस पर सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि निदेशकों की नियुक्ति का फैसला कानून के अनुसार लिया गया था. पाटिल ने महाराष्ट्र सरकार पर गोकुल डेरी पर नियंत्रण की कोशिश कर कोल्हापुर के जनादेश का अपमान करने का आरोप लगाया था. महाराष्ट्र के चिकित्सा शिक्षा मंत्री हसन मुश्रीफ ने गोकुल डेरी के नेतृत्व को लेकर उत्पन्न गतिरोध में राज्य सरकार के हस्तक्षेप का यह कहते हुए बचाव किया था कि लोकतांत्रिक कामकाज बहाल करने और प्रशासन निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथों में सौंपने के लिए यह कदम उठाना जरूरी था. 1963 में स्थापित कोल्हापुर जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ का 2024-25 में वार्षिक कारोबार 3,966.28 करोड़ रुपये रहा. इस दुग्ध उत्पादक संघ को 'गोकुल डेरी' के नाम से भी जाना जाता है. यह लगभग 4.41 लाख दुग्ध उत्पादकों के साथ काम करता है और कोल्हापुर जिले और इसके आसपास के लगभग 1810 गांवों में मौजूद 8009 ग्राम-स्तरीय समितियों से रोज़ाना दूध इकट्ठा करता है, जिससे यह इस क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण संस्था बन गई.

यूपी चुनावः योगी ने 209 कैंडिडेट की सूची दिल्ली भेजी, भाजपा में नाम पर काम तेज



लखनऊ। यूपी विधानसभा चुनाव के लिए सीएम योगी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने बड़ी तैयारी शुरू कर दी है। पिछले लोकसभा और एमएलसी चुनाव से सीख लेते हुए भाजपा ने प्रत्याशियों के चयन की प्रक्रिया में पहला और बड़ा कदम बढ़ा दिया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने 209 उम्मीदवारों की एक सूची दिल्ली में केंद्रीय आलाकमान को भेज दी है। कहा जा रहा है कि टीम योगी के फीडबैक, आंतरिक सर्वे और गहन मंथन के बाद इस सूची को तैयार किया गया है। 403 विधानसभा सीटों वाले यूपी में बहुमत हासिल करने के लिए 202 सीटों की जरूरत होती है। ऐसे में कहा जा सकता है कि आधे से ज्यादा प्रत्याशियों के नाम लगभग तय हो गए हैं। सीएम योगी की तरफ से इन प्रत्याशियों की जीत का पूरा भरोसा दिलाया गया है। सीएम योगी ने अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों में ग्राउंड फीडबैक लेने के बाद इस सूची को फाइनल किया है। मुख्यमंत्री का जो अपना फीडबैक सिस्टम है, उसी आधार पर यह नाम तय किए गए हैं। यह ऐसे नाम हैं जिन पर सीएम योगी को जीत का पूरा भरोसा है। कहा जा रहा है कि ग्राउंड फीडबैक और लोकल समीकरण को ध्यान में रखते हुए प्रत्याशियों का नाम फाइनल किया गया है।

सीएम योगी का अपना फीडबैक सिस्टम है। सरकार के मुखिया होने के नाते उनके पास तमाम रिपोर्ट रहती है। एजेंसियों और प्रदेश में लगातार दौरों के दौरान नेताओं से मुलाकात में वहां के समीकरण मिलते रहते हैं।

दिल्लीवासियों को बड़ा तोहफा, यमुना में क्रूज चलते होते ही सीएम रेखा गुप्ता ने छठ को लेकर कर दिया एक और वादा



नई दिल्ली। छठ से पहले दिल्लीवासियों को बड़ा तोहफा मिला है। दिल्ली सरकार ने मंगलवार को यमुना क्रूज सेवा का उद्घाटन किया है। केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल मंगलवार को आयोजित एक कायर्क्रम में इसका उद्घाटन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने लोगों से एक बड़ा वादा भी किया है। उन्होंने कहा है कि इस बार छठ का आयोजन पिछले साल से भी भव्य होगा। उन्होंने क्रूज सेवा और यमुना की सफाई को लेकर पिछली केजरीवाल सरकार पर निशाना भी साधा। सीएम रेखा गुप्ता ने कहा, पिछली सरकार एक झोला लेकर घूमती थीं जिसमें काफी सारे पत्थर होते थे। वे पत्थर था झूठे आरोपों और प्रपंचों का। किसी में मोदी सरकार उन्हें काम नहीं करने देती थ किसी में उपराज्यपाल रुकावट करते थे और इन पत्तथरों को वे लोगों पर मारते थे। हमारी सरकार को 21 महीने ही हुए हैं लेकिन अब हर विभाग में काम हो रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा, युमना जी में लोग जाने के लिए तरसजाते थे। छठी मैया की पूजा करने के लिए घाट पर नहीं जाने दिया जाता था। केस लगा दिया गयाा। लेकिन आपकी एक वोट की ताकत के बाद आपकी कमल की सरकार ने पहले ही साल छठ का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया। उन्होंने कहा, मैं आपको विश्वास दिलाती हूं की इस साल छठ का पिछले साल से भी ज्यादा भव्य आयोजन होगा।

इससे पहले दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने सोमवार को कहा कि छठ पूजा के लिए मुनक नहर के किनारे तैयार किए जा रहे 11 किलोमीटर लंबे घाट का उद्घाटन 12 नवंबर को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन करेंगे। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) के एक बयान के अनुसार, आउटर रिंग रोड से इंदरलोक तक फैला यह घाट दिल्ली का सबसे लंबा घाट बताया जा रहा है। पूजा-अर्चना के लिए आने वाले श्रद्धालुओं की सुगम आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए इसके दोनों तरफ सीढ़ियां और कंक्रीट की सड़क होगी।

मुख्यमंत्री ने बताया कि 12 नवंबर को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष नवीन सिंगलपुर गांव के निकट आयोजित कार्यक्रम में इस घाट का उद्घाटन करेंगे।

दिल्ली-मुंबई से दिल्ली-गुवाहाटी तक 7 हाईस्पीड कॉरिडोर का ऐलान, कानपुर-लखनऊ-पटना समेत कई शहरों को मिलेगी तेज कनेक्टिविटी



नई दिल्लीः दिवाली-छठ पूजा पर देश भर में ट्रेनों की इस साल भी मारामारी है. खासकर दिल्ली से यूपी-बिहार, मुंबई, कोलकाता जैसे बड़े शहरों और महानगरों में ये ट्रेनों की हाई डिमांड है. रेलवे ने इन्हीं जरूरतों को देखते हुए सात हाईस्पीड कॉरिडोर बनाने का फैसला किया है. जैसे स्वर्णिम चतुर्भुज योजना के जरिये दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे बड़े महानगरों को सड़क से जोड़ा गया, उसी तरह इन रेल कॉरिडोर का विस्तार होगा. इस रूट पर 1 हजार से ज्यादा ट्रेनें चलाने की योजना है. इसमें चार रूट दिल्ली-हावड़ा, दिल्ली-गुवाहाटी, दिल्ली-मुंबई और दिल्ली-चेन्नई हाईस्पीड कॉरिडोर की शुरुआत तो राजधानी से ही होगी. करीब 5500 किमी के दिल्ली से निकले रूट में कानपुर, प्रयागराज, लखनऊ, वाराणसी, पटना, भागलपुर, ग्वालियर, भोपाल, झांसी जैसे उत्तर और मध्य भारत के ज्यादातर बड़े शहर कवर होंगे.

इससे दिल्ली-हावड़ा रूट जैसे बिजी रेलवे मार्गों पर कन्फर्म टिकट को लेकर होने वाली मारामारी खत्म होगी. रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने देश के सात बिजी रेल कॉरिडोर को 4 लेन का बनाने की इस महत्वाकांक्षी योजना का ऐलान किया है. ये रूट दिल्ली-मुंबई, चेन्नई-कोलकाता (हावड़ा), मुंबई-चेन्नई और दिल्ली-हावड़ा रूट शामिल हैं. संपर्क रूट की बात करें तो दिल्ली-चेन्नई, मुंबई-हावड़ा और दिल्ली-गुवाहाटी रूट इसमें शामिल है.इन सातों रेल कॉरिडोर पर यात्री ट्रेनों और गुड्स ट्रेनों का भारी दबाव है. ऐसे में रेलवे समानांतर ट्रैक बिछाकर भविष्य की जरूरतों को पूरा करने की तैयारी में है. इन रूटों पर एक हजार से अधिक नई यात्री ट्रेनों का संचालन किया जाएगा. देश के 16 फीसदी रेल नेटवर्क पर 41 फीसदी यात्री ट्रैफिक का बोझ है. इन सात रेल कॉरिडोर की लंबाई 11051 किमी है, जबकि देश में कुल रेल नेटवर्क 69181 किलोमीटर का है. लेकिन इस 11 हजार किमी के नेटवर्क में ढाई गुना ज्यादा यानी करीब 41 फीसदी यात्रियों और मालगाड़ियों का आवागमन होता है.

पंजाब में AAP को एक और झटका, पूर्व मंत्री लालजीत भुल्लर ने चुनाव लड़ने से किया इनकार



चंडीगढ। पंजाब में आम आदमी पार्टी की ओर से 40 प्रत्याशियों की लिस्ट जारी होने के बाद से ही पार्टी में असंतोष खुलकर सामने आने लगा और तीन विधायकों ने बीजेपी की सदस्यता ले ली। अब एक और विधायक ने विधानसभा चुनाव लड़ने से ही इनकार कर दिया है। पंजाब की AAP सरकार में मंत्री रहे लालजीत भुल्लर ने ऐलान किया है कि वह इस बार चुनाव नहीं लड़ेंगे।

विधायक लालजीत भुल्लर फिलहाल जेल में हैं। वेयरहाउस डीएम की आत्महत्या मामले में उन्हें गिरफ्तार किया गया था। उन्होंने कहा कि मुझे पता चला है कि जनता फिर से मांग कर रही है कि मैं चुनावी मैदान में उतरूं लेकिन मैं इस बार चुनाव नहीं लड़ना चाहता। उन्होंने पार्टी का धन्यवाद भी किया है। वहीं जेल में बंद होने के बाद भी सोशल मीडिया अकाउंट पर यह ऐलान कई सवाल भी खड़े कर रहा है। सवाल यह भी है कि आखिर उनका सोशल मीडिया अकाउंट कौन हैंडल कर रहा है।

भुल्लर ने सोशल मीडिया पर लिखा, पट्टी हलके के भाई-बहनों की ओर से पार्टी द्वारा एक बार फिर से चुनाव लड़ने के बारे में सुना है लेकिन दास ने फैसला लिया है कि इस बार वह चुनाव नहीं लड़ेगा। हम सभी भाई-बहनों का दिल से धन्यवाद देते हैं और चरणों में शीश झुकाते हैं। मैं हमेशा आप लोगों का आभारी रहूंगा।

2022 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने पहली बार चुनाव लड़ा था और पूर्व मंत्री आदेश प्रताप सिंह कैरों को हराया था। उन्हें सरकार में कैबिनेट मंत्री बनाया गया। इसके बाद 2020 में डीएम गगनदीप सिंह रंधावा की खुदकुशी मामले में बाद में उन्हें नामजद कर दिया गया। भुल्लर को लुधियाना से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी के बाद उन्होंने मंत्रिपद से इस्तीफा दे दिया।

आम आदमी पार्टी ने 40 प्रत्याशियों वाली अपनी लिस्ट में तीन पूर्व विधायकों का टिकट काट दिया था। बाद में तीनों ने ही पार्टी से इस्तीफा देकर बीजेपी का दामन थाम लिया। इनमें पूर्व आईपीएस अधिकारी विजय प्रताप सिंह थे जो कि अमृतसर नॉर्थ से विधायक हैं। दूसरे चेतन सिहं जौड़ामाजरा और तीसरे हरमीत सिंह पठानमाजरा हैं। चेतन समाना और हरमीत सिंह पठानमाजरा सनौर से विधायक हैं।

पाकिस्तान में चीन का बनाया डैम टूटा

पावर प्लांट में घुसा पानी, 316 अरब डॉलर का प्रोजेक्ट ठप

खैबर पख्तूनख्वा। पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में सिंधु नदी पर स्थित तरबेला 5वें विस्तार जलविद्युत परियोजना में एक बड़ी घटना घटी। निर्माण कार्य के दौरान, चट्टान का एक हिस्सा ढह गया, जिससे बांध का पानी एक सुरंग के रास्ते पावर प्लांट वाले इलाके में घुस गया। उस समय वहां बड़ी संख्या में पाकिस्तानी और चीनी कर्मचारी काम कर रहे थे। गनीमत रही कि सभी कर्मचारियों को सुरक्षित बाहर निकाल लिया गया। खैबर पख्तूनख्वा में सिंधु नदी पर 316 अरब डॉलर की चल रही 'तरबेला जलविद्युत परियोजना' को एक बड़ी दुर्घटना का सामना करना पड़ा। 'तरबेला 5वें विस्तार परियोजना' के लिए खुदाई के दौरान, चट्टान ढहने से बांध का पानी सुरंग प्रणाली में प्रवेश कर गया। पानी सुरंग के इनटेक पिट से होता हुआ पावरहाउस वाले इलाके में जा पहुंचा, जहां कई मजदूर और इंजीनियर मौजूद थे। बताया जा रहा है कि पानी के अचानक आ जाने के कारण, वहां मौजूद सभी लोगों को आपातकालीन स्थिति में बाहर निकालना पड़ा।

स्वामी/ प्रकाशक / मुद्रक
प्रमोद कुमार ने जय माँ गंगा प्रिंटर्स, हरिद्वार से मुद्रित कराकर कार्तिकेय कॉलोनी, फेस-3, दर्पण स्कूल वाली गली, निकट हनुमान मंदिर, कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी जनपद-नैनीताल (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।
सम्पादक
प्रमोद कुमार
मो.7830201066
सह-सम्पादक
दया जोशी
मो.9412135616